दादा की फुलवारी

Im So Lucky to Have Found you

The electric poles are carriers of electricity.
The saints and sages are carriers of divinity.
The electricity lights the cities and villages.
The saints guide and illuminate throuth all the ages.

INDEX

Part One

Sl. No.		Page No.
1.	Preface	1
2.	नम्र निवेदन	2
3.	दो शब्द	3-4
4.	My Daily Desire by Divine Dadaji	5
5.	गुरु वन्दना	6
6.	दिव्य स्वरूप पूज्य श्री दादा भगवान	7-15
7.	अलौकिक अनुभव How I feel by Divine Dada.	16-17
8.	छलकता प्यार पूज्य श्री गीता भगवान	18-24
9.	हृदय सम्राट पूज्य श्री दादा श्याम भगवान	25-27
10.	निर्लिप्त जीवन पूज्य श्री तुलसी माता	28-31
11.	दिव्य आलोक पूज्य श्री नारायणी, शांता एवं मः राजी	32-38
12.	दादाजी के दिव्य वचन (अनमोल वाणी)	39-48
13.	पूज्य दादा के आधार स्तम्भ Fundamental Points of Divine Dada's Satsang	49-56

Part Two

1.	पूज्य दादा की आध्यात्मिक अंग्रेजी डायरी का हिन्दी अनुवाद Divine Dada's Spiritual Diary	7-70
2.	आराधना में उलझन मन Mind	71-72
3.	दिव्य प्रसाद आनन्द Bliss	73
4.	धन अनुपयोगी है Money is Useless	74 - 76
5.	अच्छे विचार Good Thoughts	77- 81
6.	Unshakable Faith विश्वास	82-83
7.	मानसिक बीमारी के लक्षण Depression	84
8.	My Request	85
9.	Mental Hygiene सुबह का व्यायाम Morning Exercise	86
10.	चिन्ता Worry	87
11.	अद्वैत Advaita	88
12.	साधना में सहयोग प्रेम Love	89-93
13.	सीखने योग्य बातें Few thing to learn	94-96
14.	कंजूस	97
15.	स्थिर प्रज्ञ	98
16.	बात बात में संभाल परहेज	99
17.	रुकावटें	100
18.	फूल और कांटे दुःख-सुख, मान-सम्मान	100

19.	A Thoughtful Resolve मेरा संकल्प	101-102
20.	Twelve Rules For Happiness.	103
	खुशियां खरीद लो	
21.	साधना के आयाम	104-105
	जिज्ञासु	
22.	बिखरे मोती	106-110
23.	दिव्य पुरुष	
	सत्गुरु My spiritual Master	111-112
24.	वृति की निवृति	113-114
25.	Listen to me	115-117
26.	Heart to Heart	
	Divine Dada's Spiritual Letters	118-122
27.	महत्वपूर्ण तथ्य	
	Translation of Important Tips	123 - 125
28.	इच्छा (Desire)	126-129
29.	सुन रे बन्दा.....	130-132
30.	कर्म सिद्धान्त Law of Karma	133
31.	सुनहरी किरणें	134-135
32.	याद रखने योग्य बातें	
	Few things to remember	136-141
33.	ज्ञान और अज्ञान में अन्तर	142-144
34.	प्रेम और मोह में अन्तर	145
35.	पिया मिलन 29 April, 1975	146-152
36.	कैसे दे हम तुम्हें विदाई	153

OM

Preface

My dear ownself,

'Dada Ki Phulwari' is being sent to you, which contains, Divine Dada's Spiritual introduction and his teachings which play a significant role in our lives.

There are bound to be some errors in this book. It is my humble request to you to send your suggestions.

You are requested to write and send your experiences that what you have learnt from Divine Gitaji's life. It would be highly appreciated if you, your friends and acquaintance would send records of certain treasured moments of Divine Gita Bhagwan's life.

Without your cooperation this Herculean task will be absolutely impossible. Kindly, do send us your valuable suggestions for the next book of Divine Gita Bhagwan and also write to us if you need any more copies of the book. Address has been given behind the book.

Thank you

You own self
'Om'

नम्र निवेदन

निज आत्मन

पूज्य श्री दादा भगवान की पुण्यतिथि के रंजत जयन्ती अवसर पर 'दादा की फुलवारी', एक छोटी सी भेंट प्रस्तुत है। इसमें दादा जी का आध्यात्मिक परिचय एवं उनके मुखार-विन्द से निकले वे मूल मन्त्र हैं जो प्रत्येक के जीवन का आवश्यक हिस्सा हैं। इस पुस्तक में कई गलतियां हो सकती हैं अतः आप संशोधन के लिये अपने सुझाव अवश्य भेजें।

आपसे अनुरोध है कि भगवान गीता जी के साथ बिताये दिनों के कुछ अमूल्य संस्मरण पत्र एवं अनुभवों को लिखकर भेजें तथा अपने सहयोगियों से भी लिखवाकर या आडियो कैसेट के द्वारा भेजने की कृपा करें। इससे नये आने वाले उन तमाम लोगों को लाभ मिल सकता है जिन्होंने पूज्य श्री गीता भगवान का साक्षात् दर्शन नहीं किया। आपके अनुभव ही 'दादा सत्संग' की अमूल्य धरोहर है। इस कठिन कार्य में आप सभी का सहयोग प्रार्थनीय है।

पुस्तक से सम्बन्धित आपके सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी। यदि पुस्तक की अन्य प्रतियां आप मंगवाना चाहें तो सेवा हेतु तदर्थ तत्पर है। पता किताब के पीछे दिया गया है।

धन्यवाद

आपका अपना स्वरूप

ओम्

दो शब्द

मेरे निज आत्मन !

माया-मोह में ग्रस्त जीवों के उद्धार निमित्त सदैव से ही महान आत्माओं का अवतरण इस धरा पर होता आया है। इन्हें विश्व अनेक नामों से पुकारता आया है जैसे सन्त, महात्मा, अवतार, पीर, पैगम्बर, गुरु, भगवान आदि। यह भक्तों के भाव पर निर्भर करता है कि अपने तारणहार को क्या समझे और क्या कह कर पुकारे। हमारे यहां सत्संग परिवारों में अपने गुरुदेव को भगवान कहने की परम्परा है, यद्यपि हमारे दादा गुरु श्री मंगनमल जी जिन्हें सभी सत्संगी भाई-बहन बड़े दादाजी के प्रिय सम्बोधन से सम्बोधित करते हैं उन्होंने भगवान शब्द का अर्थ व्यापक रूप से किया। संसार में जो भी दृश्य एवं अदृश्य हैं समस्त जड़ एवं चेतन जो कुछ भी है भगवान की लीला, विलास मात्र है। योगवशिष्ठ में कहा गया है कि भगवान के अतिरिक्त अन्य किसी की कोई सत्ता नहीं है। इसलिये बड़े दादाजी सभी को भगवान समझते एवं कहते थे।

दादाजी ने अद्वैत मत को ही मोक्ष माध्यम बनाया। स्त्रियों की हीन दशा पर दादा को बहुत करुणा आती थी, इसलिये स्त्रियों को ज्ञान देने का भागीरथी कार्य दादा ने जीवन भर किया। दादाजी के अन्तर्ध्यान हो जाने पर इस महान कार्य को लक्ष्मी भगवान एवं गीता भगवान ने संभाला, दादाजी के द्वारा रोपित बीज को लक्ष्मी भगवान एवं गीता भगवान ने सुन्दर उपवन का स्वरूप प्रदान किया। आज दादा श्याम, तुलसी माता, नारायणीजी, शान्ताजी गीराजी एवं अनेकों विभूतियाँ देश-विदेश के अनेक शहरों में इस उपवन की सुगन्ध को जन-जन तक फैलाने एवं ज्ञान यज्ञ को घर-घर तक पहुंचाने का महान कार्य कर रहे हैं।

भगवान दादा जी का कहना था **Printed words are so inferior to the spoken words of living Guru."** दादाजी कहते थे, 'मेरे शब्द प्रेस में मत भेजना, इनकी सार्थकता समाप्त हो जायेगी।' किन्तु देश काल परिस्थितियों के साथ सन्दर्भ भी बदलते रहते हैं। आज दादाजी द्वारा रोपित बीज वटवृक्ष बन चुका है। देश-विदेश तथा भारत के लगभग सभी शहरों में यह ज्ञान सूर्य की किरणें बन अनेकों हृदयों में उजाला दे रहा है।

सन्त के जीवन को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता किन्तु उनका आदर्श एक सीमा तक शब्दों के सहारे प्रस्तुत किया जा सकता है। सन्त का अध्यात्मिक परिचय ही वास्तविक परिचय है। दादा की फुलवारी दादा एवं गीताभगवान का सम्पूर्ण परिचय नहीं है बल्कि उनके अध्यात्मिक जीवन की झलक मात्र है। शब्द तो अशब्दी को लिख भी नहीं सकते हैं।

दादाजी के मुखार-विन्द से छोटे-छोटे वाक्य निकले जो आगे चलकर सभी प्रेमियों के लिये मंत्र बन गये। उन्हीं मंत्रों की माला बनाकर एक छोटी सी भेंट आपके समक्ष प्रस्तुत है।

आपका अपना स्वरूप

ओम्

❖ हरिओम् ❖

MY DAILY DESIRE

..... to awaken each morning with a smile, brightening my face to meet men & women with laughter on my lips and love in my heart. What is the use of gaining wealth and wisdom by working throughout our youth if it brings us happiness only in the old age. Therefore the best way to keep young at heart, is to take a keen interest in young people and new ideas and new methods. I want to make myself perfectly happy and at rest, no matter what happens, sickness or death.....

Divine Dadaji

न खोलो दफ्तर दुनियां के
रहो प्रेम में मस्तान।
अक्ल का यहाँ स्थान नहीं,
यहाँ चाहिये इश्क और ईमान।।

गुरु वन्दना

बंदउ गुरु पद कंज कृपा सिन्धु नररुप हरि।
महामोह तम पुंज जासु वचन रवि करनी कर।।
गुरु को कीजे दण्डवत, कोटि-कोटि प्रणाम,
कीट न जाने भृंग को, गुरु कर ले आप समान।।

कलेजे में चलाने को हमारे, तीर बन जाओ,
मरीजे इश्क की पूरी दवा अक्सीर बन जाओ।
तुम्हारे नूर का सुरमा अगर पहुँचेगा चश्मों में,
हृदय में रोशनी होगी कि पुर तासीर बन जाओ।
चढ़ाते थे अभी तक गुल को कब्रों व मजारों पर,
चढ़ाने के लिये मेरे कबीर व पीर बन जाओ।
किया कुरबान दिल अपना तुम्हारी शक्ल के ऊपर,
कलेज़े में लगाने के लिये तस्वीर बन जाओ।
भरोसा था इलाही का भरोसा हो गया तेरा,
इलाही से मिलाने की कोई तदबीर बन जाओ।
यह ख्वाहिश है दिवाने की मिले महबूब से जाकर,
मिलाने के लिये इसको तुम्हीं तकदीर बन जाओ।

पूज्य श्री दादा भगवान

मानवता के लिये अपने सुखों की आहुति देने वाले युगप्रवर्तक सन्त श्री मघनमल जी जिन्हें सभी सत्संगी दादा जी के नाम से जानते हैं, का धरा पर अवतरण 3 जनवरी 1892 को सिन्ध (पाकिस्तान) में हुआ था। इनका पालन-पोषन वैभवशाली घराने में सम्पन्नता के साथ हुआ। अंग्रेजी एवं सिन्धी भाषा में आपकी शिक्षा पूर्ण हुई। आपका विवाह एक सम्पन्न परिवार की कन्या रुक्मिणी से हुआ। आपने हीरों का व्यापार किया। आप व्यापार के क्षेत्र में बहुत ही कुशल थे, बुद्धि इतनी तीव्र थी कि आस-पास के लोग संकट की स्थिति में आपसे राय लेने आते थे तथा आपकी राय अक्सर लोगों को लाभप्रद होती थी। शुरू में आप बहुत राजसी ठाठ-बाट से जीवन व्यतीत करते थे। आपके इस ऐश्वर्य युक्त जीवन में भी एक बात बड़ी महत्वपूर्ण थी, आप सत्य का व्यवहार करते एवं सतोगुण का ही आश्रय लेते। संक्षेप में इतना ही कहना पर्याप्त है कि आप एक आदर्श ग्रहस्थ थे।

लेकिन आपका अवतरण केवल संसार निभाने के लिये नहीं हुआ था, आपको जो जगत उद्धार का महान कार्य करना था। आपके भीतर आत्मज्ञान की जिज्ञासा उठी और फलस्वरूप सद्गुरु की प्राप्ति हुई। सच्चा गुरु तो योग्य शिष्य की प्रतीक्षा ही करता रहता है। अल्पकाल में ही गुरु ने आपको ज्ञान अन्य लोगों को प्रदान करने की आज्ञा दी और अज्ञात् स्थान को चले गये। दादा भगवान को गुरु का साथ लगभग एक वर्ष का ही मिला और इस एक वर्ष में ही दादा की स्थिति ज्ञानी की हो गई। गुरु ने आपको विशेष रूप से स्त्रियों में ज्ञान फैलाने की आज्ञा दी, क्योंकि ज्ञान के अभाव में स्त्रियों की दशा उस काल में दीन-हीन जैसी हो चली

थी। दादा ने एकान्त में बैठकर पुस्तकों, शास्त्रों एवं धर्मग्रन्थों का अध्ययन किया। प्रत्येक शास्त्र एवं धर्मग्रन्थ के सारगर्भित तत्व को पूज्य श्री दादाजी ने अपने अन्तस के गहन गम्भीर मन्थन कार्य द्वारा संजोया। पीड़ित मानवता की पुकार, स्त्रियों के उद्धार की चिन्ता ने दादा के हृदय को द्रवित कर दिया। लोक कल्याण हेतु यह महान सन्त धरा को अमृतपान कराने हेतु संग्राम के अनवरत पथ पर चल दिये अकेले.....।

प्रकृति अब दादा जी से बहुत बड़ा कार्य कराना चाहती थी और इसके लिये तैयारी विपदाओं से शुरू हुई। देश का विभाजन हुआ, दादा पाकिस्तान छोड़कर भारत आये। व्यापार में लम्बी हानि हुई। दादा ने ऐश्वर्य का जीवन छोड़ सादा जीवन प्रारम्भ किया।

सम्पन्न एवं वैभवशाली घराने में जन्म लेकर राजसी गुणों से सम्पन्न यह विभूति अचानक ही अपनी गृहस्थी व सांसारिक बन्धनों के बीच से गुजरते उनकी दिशा ईश्वर की ओर मुड़ गई। इसका कारण व्यापार में लम्बी हानि का होना था। उस संकट की स्थिति में उनके सामने दो ही उपाय थे, प्रथम मोह त्याग और संसार त्याग द्वितीय उपाय कार्य की पुनः शुरुआत। किन्तु इन दोनों का अन्त था तो दुनियावी या मायावी ही। अतः आपने इसके अतिरिक्त तीसरे मार्ग का चयन किया जो सभी बन्धनों से ऊंचाई की ओर जा सके। दादा भगवान ने वक्त की नजाकत को तो समझा और साथ ही इस बात को भी मानव देह दैव तुल्य है और आत्म साक्षात्कार तथा भगवान को जानना ही इसका लक्ष्य है।

दादा ने इसके बाद तमाम धर्म ग्रन्थों का अध्ययन किया। एक जगह इन्होंने पढ़ा कि *"सन्त की महिमा वेद न जाने, जेता सुनै तेता ही बखाने"*। इतना जानने के पश्चात् दादाजी ने अपने गुरु के ज्ञान पर ही जीवन बिताने का दृढ़ निश्चय किया।

यहीं से इनके धार्मिक जीवन की शुरुआत होती है। जीवन का यह नया प्रभात दादाजी को ऊँचा उठाने के लिये, चमकाने के लिये आया था। प्रभात के इस सूर्य की प्रत्येक रश्मि सुनहरी थी। ज्ञान व भक्ति के धागों से जुड़ी यह जीवन श्रृंखेंला अलौकिक बन गयी। यह अलौकिकता सम्पूर्ण विश्व को नया सन्देश दे गयी। नयी पीढ़ी, नये जमाने के परिवर्तनों से सामंजस्य बैठाते हुए उन्होंने अध्यात्म तथा धर्म सम्बन्धित नयी परिभाषाएं बीसवीं सदी को दी। इसलिये वे युग प्रवर्तक के रूप में प्रसिद्ध हुए।

गुरु मिलने से पहले उनका जीवन राजसी तथा सात्विक गुणों का मिश्रण था। राजसी गुण इस बात से झलकते कि वे जिस चीज को पसन्द करते उसे हासिल करने में कभी पीछे न हटते तथा सात्विक इस बात से कि यदि प्राप्त की हुई वस्तु किसी अन्य को पसन्द आ जाती तो तुरन्त उदार भावना से प्रेरित हो उस वस्तु को दे देते, मानो मोह नाम की चीज ही न हो। उनका गृहस्थ जीवन अत्यन्त सुखद तथा सुलझा हुआ था। सभी उन्हें आदर की नजर से देखते, समाज के संभ्रान्त तथा गणमान्य व्यक्यिों में उनकी गिनती की जाती थी। समस्याओं का मुस्करा कर समाधान करना दादा जी की आदत सी थी। परिवार तथा आस-पड़ोस के लोग आपको सलाहकार के रूप में मानते थे। उनकी मधुरता की सुगन्ध उनके परिवार वालों के मध्य में इस तरह फैली कि उनकी बेटी चन्द्रा आगे चलकर गुरु प़रम्परा की हकदार बनी तथा गीताभगवान के नाम से प्रसिद्ध हुई।

कहते हैं कि उनकी एक बहू से किसी ने प्रश्न किया कि तुम्हारे ससुर तो हीरे के व्यापारी थे, आपको बहुत हीरे दिये होंगे ? बहू ने जवाब दिया. 'हां मेरे ससुर ने मुझे बहुत अध्यात्मिक हीरे दिये हैं, जिनको न चोर कभी लूट सकता है तथा न ही ये अध्यात्म

के हीरे कभी खो सकते हैं। इनके परिवार वालों की अगाध श्रद्धा देखकर अक्सर सत्संगी भाई बहन आश्चर्य से आ जाते थे।

दादा जी का हृदय सरल, बुद्धि कुशाग्र, स्वभाव बाल सुलभ था। बच्चों के साथ मिलकर बच्चे बन जाना, युवा के साथ युवा तथा वृद्ध के साथ वृद्ध, उनके स्वभाव की मुख्य विशेषता थी। वे कहते थे कि अपने को नायलान की जुराब बना लो जो सबको फिट हो जाती है। अपने को रबड़ की गुड़िया बना लो जो हर तरह से मुड़ जाती है क्योंकि मुड़ने वाला जुड़ता है। अड़ने वाला टूट जाता है बिखर कर रह जाता है।

दादा जी के हृदय में स्त्रियों की दीन दशा के प्रति एक विशेष प्रकार की दया थी। किसी भी स्त्री की दीन-हीन दशा को देखकर उनका सरल हृदय द्रवित हो जाता। उनका कहना था कि "मैंने स्त्रियों के उद्धार के लिये ही शरीर धारण किया है"। उनके समय में स्त्रियों की स्थिति समाज में शोचनीय थी। विधवा होने की स्थिति में तो समाज अत्याचारों की अति कर देता था। उनकी पीड़ा सुनकर दादाजी की आखें नम हो जाती थीं। उस युग में ज्ञान ने स्त्रियों के लिये संजीवनी का काम किया। दादा जी के ब्रह्म ज्ञान एवं उपदेश से स्त्रियों को नयी शक्ति मिली, किन्तु इसके लिये उन्हें बहुत ही कठोर परीक्षा से गुजरना पड़ा। समाज ने उन्हें कड़वे शब्द कहे, धिक्कारा क्योंकि समाज परिवर्तन को जल्दी स्वीकार नहीं करता। किन्तु अन्त में इसी समाज ने उनको तहेदिल से स्वीकार किया तथा उनकी निष्कामता और निःस्वार्थता को प्रणाम किया। समय साक्षी है कि प्रत्येक ज्ञानी तत्त्वदर्शी तथा समाज सुधारक को समाज ने पहले तो धिक्कारा और बाद में स्वीकार कर जयजयकार भी की।

DIVINE DADA JI

My name is om,
Heart is my home,
Life is a game,
I am always same.

दादा जी ने सच्चे गुरु की पहचान भी बतायी कि गुरु ऐसा चाहिये जो छुड़ा दे संसार। गुरु वह जो मोह का नाश करे। उन्हीं के शब्दों में खुदा का मतलब खुद आ, अर्थात् अपने हृदय को इतना पवित्र बनाओ कि खुदा स्वयं आपके हृदय में आकर बैठ जाये।

दादाजी वक्त के पाबन्द थे। वे समय की कीमत को पहचानते थे। उनके जीवन का नियम था कि पांच मिनट देर से पहुंचने से अच्छा है पन्द्रह मिनट पहले पहुंचना। प्राकृतिक वातावरण में जीना, सुबह से रात्रि तक ज्ञान तथा अध्ययन के कार्य में व्यस्त रहना, उनकी कर्मशीलता का परिचायक था, उन्होंने कहा कि निष्क्रिय नहीं वरन् निश्चित बनो। **Not tension but attention** आत्मा की बात सदैव उनकी जुबां पर रहती थी। प्रत्येक बात, प्रत्येक समस्या का एक ही जवाब देते तुम आत्मा हो। **You are atma.**

प्रश्न करने आये एक साधक ने कहा कि उसे अपने बेटे की मृत्यु हो जाने का गहरा दुख है। तब दादाजी ने सख्त लहजे में जवाब दिया कि तुम अमानत में ख्यानत करते ही क्यों हो ? यह सब ईश्वर की लीला है, वह फैलाता भी है और समेटता भी है। सम्पूर्ण संसार में ईश्वर ही ईश्वर व्याप्त है।

सांसारिक प्रपंच से उनकी अरुचि हो चुकी थी। उनकी पत्नी भी कभी प्रपंच की बात करती तो दादा कहते, करतूत पशु की मानुष जात, लोक पचारा करे दिन-रात। अर्थात शरीर तो मनुष्य का है परन्तु कार्य पशु के हैं, क्योंकि दूसरों के ही प्रपंच करते रहते हो। सांसारिक विषयों पर यहां तक कि उनके शरीर की अस्वस्थता के विषय में भी बात करता तो उन्हें उचित नहीं लगता। वे सदैव यही कहते कि I am better than you उनकी प्रमुख श्रृद्धालु शान्ताजी जो कि सदैव दादाजी की सेवा में तत्पर रहती थी, वे जब भी उन्हें डाक्टर के पास ले जाती तो डाक्टर के पूछने

पर "शरीर और स्वास्थ्य कैसा है ?" दादाजी शान्ताजी की तरफ इशारा कर देते इनसे पूछो मुझे क्यों लायी हैं ? मैं तो एकदम तन्दुरुस्त हूं क्योंकि Man is ninety eight percent mental only two percent physical मैं बीमार नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ और यह कहते ही वे आँखों को बन्द कर लेते मानों धरती का एक महान तपस्वी नींद से भी क्रीड़ा कर रहा हो।

दादाजी का सम्पूर्ण जीवन एक संग्राम था। अपने समय के कर्मकाण्डों पर उन्होंने कई प्रहार किए। उन्होंने उन पण्डित पुरोहितों को भी धिक्कारा, जो पैसे के लिये भगवान को बेचते हैं। उनका कहना यही रहा कि जैसे जीवन की अमूल्य वस्तुएं– हवा, पानी एवं सूर्य की रोशनी हमें निःशुल्क मिलती है, उसी प्रकार धर्मी विद्या देने वाले गुरु को भी निःस्वार्थ एवं निष्काम होना चाहिये तथा गुरु को कभी भी ज्ञान को उदरपूर्ति का साधन नहीं बनाना चाहिए।

एक दिन एक श्रृद्धालु ने पूछा कि दादाजी सांसारिक शिक्षा लेकर तो हम विद्यालय को शुल्क (फीस) देकर उऋण हो जाते हैं किन्तु आप जैसे गुरु से इतना ज्ञान लेकर उसका ऋण कैसे चुकायें ? तो दादाजी ने सरलता से जवाब दिया कि पिता जिस घर में बेटी की शादी करता है फिर उस घर से पानी भी नहीं लेता। गुरु भी जब शिष्य को अपनी ज्ञान रूपी बेटी देता है तो शिष्य से बदले में कुछ नहीं लेता।

दादा से सच्चे श्रद्धालुओं ने जब दादा को पहचान लिया तो उनका मन चाहा कि सारी दुनियां को बता दें अपने पैगम्बर के बारे में, लेकिन दादा ने मुस्करा कर इस बात के लिये रोक दिया और कहा निराकार सब करता हुआ भी छिपा रहता है, वैसे ही हमें भी छिप कर ही रहना चाहिये। कीर्ति अपनी कराना अपना पतन करना है। कीर्ति वह कीड़ा है जो मनुष्य की उस शाखा को काटता है जिस पर बैठकर वह इस कीर्ति का हकदार बना हुआ है।

कामिनी, कंचन, कीर्ति का मोह जो त्याग सके वह ही ब्रह्मज्ञानी होता है। ऐसे तत्त्वज्ञानी महान गुरु को जिसने भी देखा वे आज भी उनकी अमृतवाणी पढ़कर या सुनकर भाव विभोर हुए बिना नहीं रह सकते। जीवन दर्शन में उन्होंने परिवर्तन किया। भौतिक युग में अध्यात्मिकता की पहचान उन्होंने करवायी। उन्होंने कोई आश्रम, संगठन, मन्दिर अथवा ट्रस्ट (न्यास) नहीं बनाया बल्कि प्रत्येक घर को मन्दिर बनाया। उन्होंने उपदेश दिया कि "मन्दिर में रहकर भगवान आज तक पुजारी से परदा रखता है। भगवान मन मन्दिर में रहता है। प्रत्येक घट उसका निवास है, प्रत्येक श्वांस उसकी घंटी है, प्रत्येक मुस्कुराहट उसकी सुगन्ध है।"

दर्शनशास्त्र के प्रति दादा जी की धारणा एकदम खुली किताब थी, उनका कहना था कि Philosophy means a balanced life संतुलित जीवन ही दर्शन है। असंतुलन ही मानव के दुख का कारण है। जीवन को सभी कोणों से समझना एवं समझाना उनकी शख्सियत का मुख्य हिस्सा था। प्रगतिशील विचारधारा उनकी बातों एवं नसीहतों में दिखाई देती थी। उन्होंने कहा कि आगे बढ़ो मार्ग को मंजिल समझ कर मत विश्राम करो। धर्म, विज्ञान, भौतिक किसी भी क्षेत्र में महिलाओं की उन्नति देख उन्हें विशेष प्रसन्नता होती थी।

दादाभगवान को गुरु का सम्बोधन अच्छा न लगता, पैर छूना भी उन्हें पसन्द न था। वे जीवन भर गुरु न बने किन्तु उनके प्रेमियों ने उन्हें गुरु का सम्बोधन किया, यह शब्द भगवान से भी ऊंचा है। दादाभगवान की सरलता बालकवत थी। कठोरता तथा कटुता उनसे मीलों दूर थी। अध्यात्मिक जीवन शुरू करने से पहले भी यदि उनकी पत्नी रुक्मिनी से उनका विवाद हो जाता और बोलचाल बन्द हो जाती तो दादाभगवान स्वयं बात करने की पहल करते और कहते नाराज हो कर दो दिन के भी आनन्द को क्यों कम किया जाये। उनकी वाणी में जोश तथा चेहरे पर तेज सदैव दिखता था। अपरिग्रह उनके जीवन का यथार्थ पहलू था।

एक दिन दादा जी से किसी ने कहा कि दादाजी आप की कमीज बहुत पुरानी हो गयी है, नयी सिलवा दी जाय ? उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया 'नयी की क्या आवश्यकता है शरीर रूपी चादर भी तो पुरानी, हो गई है।' हास्य के पुट में इशारा किया लो यह सूती चादर इस की दो कमीजें सिलवा दो, गरमी में आराम मिलेगा। वैभव में जीवन व्यतीत करके भी वह इतने अपरिग्रही Non Possessive Mood में आ गये। जो भी उनसे मिलता भावविभोर होकर आत्मा की ही बात करते।

बस उनके मुख पर यही शब्द रहते 'मैं तुम्हारी अमानत (ज्ञान) खुदा से लेकर आया हूँ तुम अपनी अमानत मुझसे लेकर जाना।

मार्च 1975 में जब दादा का शरीर अधिक कृशकाय हो चुका था तथा बम्बई के डाक्टरों ने उन्हें सख्त आराम की हिदायत की, तब भी उन्होंने यही शब्द कहे, 'लखनऊ की धरती मुझे पुकार रही है, रुद्रपुर में डाक्टर माखीजानी तथा उनका परिवार मुझे पुकार रहा है' और 85 वर्ष की उम्र में भी उन्होंने रुद्रपुर तथा लखनऊ की यात्रा की। रुद्रपुर में एक दिन दादाजी ने सबको कमरे से बाहर जाने का आदेश देकर सफेद चादर ओढ़कर अकेले में समय बिताया मानो मृत्यु से साक्षात्कार कर रहे हों। लगभग दो घण्टे बाद जब दादा बाहर निकले तब प्रेमियों को चैन आया।

21 अप्रैल को दादा रुद्रपुर से लखनऊ को चले। 21 अप्रैल की यात्रा में दादा लगभग योगनिद्रा में ही रहे। अब दादा अर्धचेतन सी अवस्था में पहुंच गये। लखनऊ उतरते ही एम्बुलेन्स द्वारा दादा को सिविल अस्पताल ले गये। हैमरेज की वजह से पूज्य श्री दादा कोमा में चले गये। तीन दिन अस्पताल में रख कर दादा को लखनऊ के मुख्य आवास 4, माल एवेन्यू में लाया

गया। दो दिन बाद जब दादा को थोड़ा होश आया तो बोले, 'मेरी हिम्मत देखो मैं आता जाता नहीं हूँ, मैं सदैव ही हूँ। मैं कल भी था, आज भी हूँ, और कल भी रहूंगा। मेरा नाश नहीं होता, मैं अमर सत चित आनन्दस्वरूप हूँ।' इसके बाद दादा ओम के अतिरिक्त कुछ नहीं बोले।

बेसहारों के सहारे, करुणा की मूर्ति, शक्तिशाली वचनों के इस महान सन्त ने अपनी जीवन लीला 29 अप्रैल 1975 दिन मंगलवार प्रातः 9 बजकर 5 मिनट पर समेट कर विदेह मुक्ति और जीवन मुक्ति को प्राप्त किया। आकाश से देवताओं ने फूलों की वर्षा और जमीं पर प्रेमियों ने आंसुओं की वर्षा की। अमर आत्मा सच्चिदानन्द की निरन्तर गूंज के बीच दादा जी की शरीर की इहलीला समाप्त हुई। दादा जी ने अवध की शाम एवं रंगीनियों के लिये मशहूर इस लखनऊ को अपनी निर्वाण स्थली बनाकर पवित्र कर दिया। दादा कृष्ण बन गीता भगवान में, शक्ति बन दादा श्याम में, भक्ति बन मीरा में, नारायण बन नारायणी में और शान्ति बन शान्ता में समा हो गये। नम आंखों, और ओम् के नांद के साथ प्रेमियों ने अपने प्यारे को विदाई देकर यही फरियाद की.....

हम तो सिज़दा करेंगे तुम्हें ही,

❖हरिओम❖

How I feel now

I feel myself God Nirakar and not this body, as one day this body would leave me, at that time I will merge in the ocean.

I am Ashok Atma, Amar, Immortal, Avinashi, Advaita, Invisible, Nirakar Nishkam, Nirichha, (Desireless), All pervading, Non possessive, All knowing, Self Seer, Sakshy like witness, Toughtless, Jivan Mukt but not body.

In the beginning I was "Word" and the word transplanted into the "world". Lord "Myself" is hidden in it.

The whole world that you see today is only extension of God. I am reality and the universe is mithya. I am unknowable but can be known or realized by Brahm vidhya alone. All else is Avidhya. Brahm vidhya is imparted by Brahm Shortri and Brahm Neshti i.e. Tatva Darshi Satguru. All the karms are bondage. Your aim is only self realization, else you can never attain peace of mind or Bliss.

I possess nothing therefore, renounce nothing. I want nothing as I am everything and everywhere. There is nothing but me.

By Vairagya i.e. detachment, all the wordly things are willingly renounced as nothing is everlasting. Even one king of the whole world is unhappy. How can you ever expect to be happy.

When I am not doing anything, I know myself. I simply hear and become quiet, still and conscious of my real nature. I really exist and the world is not. Thus I am saved from Pardharm as everything is automatically done of its own accord. I am the seer, never the doer (which is ego.)

I feel myself as trustee, Bank cashier, Headmaster and an Aaya. Thus by the change of my attitude only, I become unconcerned, indifferent, unattached. All the doubts arise beacuse of our wrong attitude. In the universal melody, three ideas stand out-Freedom, strength, Sameness.

World needs love and not display of power. My mission is to help you people to inherit this hidden treasure of the self. All, who seek it, have my blessings. Every thought, Every feelling which does not vibrate love, clouds the golden face of reality and take us away from the lotus feet of God. True Guru attracts, inspires and transforms.

Divine Dadaji.

❖ हरिओम् ❖

प्रेमावतार गीता भगवान

छुप गये वो साज़े हस्ती छेड़ कर,
अब तो बस आवाज़ ही आवाज़ है।

पूज्य श्री गीता भगवान

हिमालय की धारा गंगोत्री के रूप में केवल संतों एवं मनीषियों का तीर्थ स्थल बन गई। जब यही गंगोत्री की धारा ऋषिकेश हरिद्वार की गंगा बन गई तब वह ऋषियों के साथ-साथ जन साधारण के भी कल्याण की हेतु बन गयी।

पूज्य दादा भगवान का आध्यात्म दर्शन बौद्धिक लोगों के बीच उतरा किन्तु उनका यही दर्शन गीता भगवान ने जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया। लौकिक रिश्तों में वो दादा भगवान की पुत्री चन्द्राजी के नाम से जानी गयीं। विवाहोपरान्त उनका नाम गीता जी रखा गया। कालान्तर में गीता का गीत सुनाने वाला यही नाम प्रेमियों द्वारा **गीताभगवान** कहा गया।

पूज्य गीताभगवान का अवतरण 21 मार्च 1931 चेटी चण्ड (सिंधियों के नये साल की शुरुआत) के दिन हुआ। अलौकिक सौन्दर्य एवं कोयल जैसी मिठास के संगीत की गरिमा लिये यह व्यक्तित्व जहाँ भी जाता वहां के लोग पलक झपकाना रोक एकटक इस अप्रतिम छवि को निहारते ही रह जाते। बाहरी सौन्दर्य जब भीतरी सौन्दर्य से मिल जाता है तो वह सौन्दर्य अद्‌भुत और बेमिसाल बन जाता है। उनकी स्वर लहरी साधना के साथ मिल गयी और विश्व को दुर्लभ रुहानी उपहार दे गयी। गीता भगवान के स्वर सुनकर किसी की आंखें भीगे बिना नहीं रह सकती थीं।

वे मोहब्बत एवं नम्रता की बेमिसाल मिसाल के रूप में हमारे सामने आये। उनकी आंखों में गुरु नानक की तासीर, उनके स्वर

में कृष्ण की बासुरी सुनाई देती, मर्यादा में वे भगवान राम ही प्रतीत होते। कुर्बानी की कतार में वे क्राइस्ट से पीछे न रहे। प्रेमी यहां तक कहते पाये जाते हैं कि उनके वस्त्रों से यदि स्पर्श हो जाता तो बिजली के करन्ट जैसा झटका लगता। सामने वाले को उनकी पवित्र निगाहों से अपने को बचाना मुश्किल हो जाता। आपकी इतनी अधिक विशेषताओं के कारण दादा भगवान ने आपको प्रेम का अवतार नाम दिया। स्वयं गीताभगवान के मुख से.....

दुनिया में जब कभी भी मौहब्बत की कमी पाता हूँ मैं।
खुद ही मोहब्बत बनकर दुनियां में बिखर जाता हूँ मैं।।

आप सबके दिलों में, सब की रगों में बस गये। आपको देखकर फिर कुछ देखना शेष न रहता। ऐसा रूप लावण्य देखकर लगता कि खुद खुदा ने फुर्सत में बैठकर संगमरमर को तराशा हो।

आपकी अध्यात्मिक जीवन की शुरुआत विवाह के पूर्व ही हो गयी थी। एक जौहरी जैसे धूल में छिपे हीरे को अपनी पारखी निगाह के सांचे में उतार लेता है उसकी भांति दादा जी ने भी अपनी पुत्री चन्द्रा में सम्पूर्ण अवतार के छिपे रूप का दीदार कर लिया था। वे गीता भगवान को भजन गाने के बहाने अपनी सत्संग की सभा में बुलाते। धीरे-धीरे भजन सुनाते-सुनाते स्वयं चन्द्राजी (गीता भगवान) भजनों का रूप बनते चले गये। उनके गाये भजनों में जो तासीर हैं वह शायद ही अन्यत्र कहीं मिल सके। आखें बन्द कर भजन गाने की अदा के साथ हारमोनियम पर थिरकते हाथ यह बताते थे कि प्रकृति ने उन्हें किसी खास उद्देश्य के निमित्त ही धरा पर भेजा है। वह खास उद्देश्य था पथ प्रदर्शन का, मार्गदर्शन का और इस कार्य की शुरुआत यद्यपि पहले ही हो चुकी थी किन्तु यह कार्य परवान तब चढ़ा जब उनकी विवाह बेला नजदीक

आयी। शरीर रिश्तों के बन्धन में बंधा और उनका विवाह लखनऊ के श्रीश्यामजी (श्याम भगवान) के साथ हुआ तथा मन की डोर बंधी अध्यात्मिक के साथ। विवाह के पूर्व चन्द्राजी एवं श्याम जी की पसन्द का किस्सा भी असाधारण एवं अलौकिक था। दोनों ने ही अपनी पसन्द को एक खास भजन के द्वारा प्रकट किया। अब शुरू हुई सांसारिक रस्में जिसे दुनिया विवाह का नाम देती है। विवाह की रस्मों के बीच ही गीताभगवान ने यह महसूस किया कि यह विवाह नहीं एक अलौकिक रिश्ता है और उन्हें श्यामजी का उद्धार करना है। उन्हें ज्ञान और निष्कामता की तह में उतारना है। उन्होंने श्यामजी के रूप में नायाब हीरे को पहचान लिया कि यही वह हीरा है जिसे सारे संसार के बीच चमकना हैं।

यहीं से गृहस्थ एवं अध्यात्म की धूप-छांव शुरू हो गयी। आप श्यामजी के साथ केवल ज्ञान का ही व्यवहार करते। सास को अपनी सेवा से प्रसन्न रखते तथा ननद मीरा को एक-एक बात में परिपक्वता देते। इतिहास में ऐसा उदाहरण शायद ही मिले जहां पिता के अध्यात्मिक पथ की कर्णधार पुत्री बने और फिर स्त्री के रूप में वह अपने पति तथा ससुराल वालों की भी उद्धारक बनी हो।

विवाहोपरान्त नाम रखा गया 'गीता' और आप बने गीत गीता का। विवाह के बहाने आप अनेकों का उद्धार करने लखनऊ आये। श्यामजी ने पल-पल आपको परखा। आपको खरा पाया और आखिर में उन्हें भी अपने को आपके सामने झुकाना पड़ा। उन्हीं के शब्दों में "गीताजी की निष्कामता और निस्वार्थता ने मुझे जीत लिया।" रिश्ते में अपनी स्त्री को गुरु मानना ऐसा अनुपम उदाहरण शास्त्रों में अन्यत्र मिलना कठिन है।

पूज्य श्री गीताभगवान ने, गुरु मर्यादा का जो आदर्श कहा जाता है उसे यथार्थ के साँचे में ढाला। गुरु दादा लक्ष्मीजी के कहने

पर वे कभी प्रश्नचिन्ह न लगाते। स्वयं झुककर वे अपने सुनने वालों को भी झुकाना सिखाते। लखनऊ में दादा सत्संग को 'गीता सत्संग' एवं गीताज्ञान के नाम से जाना गया। गीता भगवान ने भजन के बहाने, हारमोनियम के बहाने पूज्य ममतामयी माता तुलसी को अपनी ज्ञान की धारा में समा लिया।

दादा की फुलवारी का सबसे अनोखा फूल बने गीताभगवान। गीता भगवान की फुलवरी के फूल बनें, श्यामजी, तुलसीमाता, भगवतीजी, नीनाजी, प्रमिलाजी, कमला मम्मी, लीलूजी, दयाजी, लाजू, पुषू, शीला, कमला आन्टी, विद्याजी, चन्द्राजी, कौशल्याजी, रत्नाजी, सावित्री, मोना, रोमी, सोनू, सुलक्षिणी, आदि अनेक जिनकी गिनती नहीं की जा सकती।

आपसे किसी ने प्रश्न किया कि आप आनन्द की बात करते हैं कि ज्ञानी सदैव आनन्द में रहा करता है। आप तो सारा दिन दूसरों की समस्याओं का हल किया करते हैं, रात्रि 12 बजे तक आप इन्हीं सब कार्यों में लगे रहते हैं तब आप आनन्द कितने बजे महसूस करते हैं ? उन्होंने उत्तर दिया कि "दूसरों की समस्याओं के हल करने में ही मुझे आनन्द मिलता है।" उन्होंने कहा I want to be happy, but I won't be happy, till make you happy too. (तुमको खुशी देकर ही मैं खुश रहता हूँ, मैंने तुम्हारे चेहरे पर मुस्कराहट लाने की कसम ली है)

उनका चेहरा जब खामोश रहता तब भी उनकी आँखें बोलती हुई सी लगतीं। उनके मौन से भी सामने वाला बहुत कुछ सुन लेता। उनके असीम व्यक्तित्व को शब्दों में बांध पाना मुश्किल कार्य है। छोटी सी उम्र में ही वे अनेकों के हृदय के सम्राट बन गये। आपके भक्त आपके प्रेम में डूबे रहते और रो-रो कर अपने हृदय को और कोमल बनाते। आपकी वाणी से टूटे दिलों की तारें जुड़ जातीं। गुरु रूप में आपका प्रत्येक शब्द कानून के रूप में माना

गया। आपने निष्काम कर्मयोग को अपने जीवन में उतारा तथा सुनने वालों को इस कार्य के लिये तैयार किया। आज आपकी फुलवारी का प्रत्येक फूल अपने आप में एक सम्पूर्ण बगीचा बन चुका है। उन्होंने जिनको तैयार किया, उनमें से प्रत्येक ने हजारों को ज्ञान सुनाया और उनको सत्य के मार्ग पर चलने के लिये तैयार कर रहे हैं। यह इस बात से प्रकट हो जाता है कि प्रत्येक अपने में कुर्बानी की एक मिसाल बन गया।

हर प्रदेश में सन्देश सुनाने का पैगाम उन्होंने दिया, और इस कार्य को पूरा भी किया। महाराष्ट्र मुम्बई में स्वयं दादा श्यामभगवान, तुलसीमाता, नारायणी जी, मीराजी तथा शान्ताजी इस कार्य की बागडोर संभाले हैं। मध्य प्रदेश भोपाल में रत्ना एवं सावित्रीजी। गुजरात अहमदाबाद में कौशल्याजी, पूना में मोना, रोमी तथा उत्तर प्रदेश हलद्वानी में डा. माखीजानी और लखनऊ में प्रमिलाजी, नीनाजी, लीलूजी, सूरत में राधा, गांधीधाम में निम्मी, लता, गोबिन्द, इन्दौर में निम्मी इस कार्य की बागडोर को संभाले हुए हैं। हर शहर हर गली में आपकी वाणी की गूंज उठती रहती है।

गीताभगवान स्वयं में एक बेमिसाल व्यक्तित्व थे। उनकी वाणी में मधुरता तथा हास्य दोनों ही मिलते। बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान ज्ञान के चन्द शब्दों से कर देते। प्रेमी भक्त भावविभोर हो कह उठते : *"राम कहूं तुमको या बंसीवाला श्याम कहूं, ऐ गीताभगवान तुम्हें शतशत प्रणाम करूं।"*

जीवन में परिस्थितियों का सामना प्रत्येक भक्त एवं ज्ञानी को करना पड़ा है। श्यामजी को इस राह पर लाना कोई आसान खेल न था। पगपग पर प्रकृति ने आपकी परीक्षायें लीं और उनमें आपको खरा पाकर जड़-चेतन धरती-आसमान ने आपको नाम दिया 'गीताभगवान'। स्वयं श्यामजी भी आपको गीताभगवान के नाम

से सम्बोधित करते। रानी चुड़ाला एवं शिखिध्वज के मिसाल के बाद इतिहास में यह दूसरा उदाहरण है जो 'गीताश्याम' के नाम से प्रगट हुआ।

ऐसे प्यारे अवतार को हम सब का बारम्बार शत-शत नमन जिन्होंने अपने साथ अपने पूरे परिवार को एक नयी दिशा दी। रिश्ते में ननद मीरा आज मीराबाई का अवतार बन गयी, देवर सुन्दर सुन्दरता की पहचान बने, भाभी वीणा स्वरमयी वीणा बन गयी, जेठ किशू एवं भगवती ने आपको अवतार रूप में स्वीकारा। यह एक ऐसा अनूठा कार्य था जिसकी प्रशंसा एवं सराहना शिष्यों और सम्बन्धियों ने मुक्त कण्ठ से की।

कहते हैं जो खुदा के बन्दों को प्यार करता है उसे खुदा भी बहुत प्यार करता है। निराकार का भी आपसे बहुत प्यार था तभी वह आपसे अधिक समय जुदा न रह सका और कम समय देकर आपको अपनी लीला समेटने का कार्य करवाया। लीलाधारी की लीला में आपने शरीर के अन्तिम कष्ट को भी मुस्करा कर तथा सौगात समझ कर सिर पर उठा लिया। अगस्त 1978 में लाइलाज बीमारी चेहरा मुस्कराता हुआ रहता।

डाक्टर आपकी सहनशक्ति की मिसाल अपने मरीजों को देते। डाक्टर आपके पांव छूते और Miracle एक ही शब्द कह कर शान्त हो जाते। भयंकर दर्द की अवस्था में भी उनकी जबां कहती मुझे कोई कष्ट नहीं है, मैं सत चित आनन्द स्वरूप हूँ। आपके शरीर की अन्तिम लीला में सेवा करने का श्रेय मोनाजी, रोमीजी, सोनूजी इत्यादि को है। आपकी प्रत्येक लीला में कोई न कोई शिक्षा एवं ज्ञान अवश्य समाया रहता।

मई 1983.....शरीर कमजोर होता जा रहा था किन्तु चेहरे की चमक अद्‌भुत बनी थी। शरीर के अन्तिम क्षणों में भी आपने सिंगापुर से आये प्रेमी पद्‌दू एवं कन्हैया का ज्ञान के

वचनों से उद्धार किया। प्रतिपल शरीर आपका साथ छोड़ रहा था किन्तु 19 मई 1983 का वीडियो कैसेट देखकर और आपकी वाणी का प्रवाह सुनकर कोई विश्वास नहीं कर सकता कि जगत उद्धार के निमित्त उतरा यह अवतार 7 जून 1983 को रात्रि 9 बजे अपनी लीला धरा से समेट लेगा। आपका कार्य पूरा हो चुका था, आप अपने कार्य को आगे चलाने के लिये अपने समान अनेक शिष्य तैयार कर चुके थे।

7 जून 1983.....चांद और सूर्य का अनोखा मिलन सभी ने इस जमी पर देखा। 7 जून को आपके शरीर का चांद खो रहा था और ज्ञान का प्रचण्ड सूर्य चमक रहा था। एक हृदय विदारक दर्द के साथ प्रेमियों ने अन्तिम विदाई दी। जीवन बनाने वाले गुरु के शुकाने आंखों के आंसू दे रहे थे। निराकर हमारे लिये साकार बन कर आया। पर यह जुदाई जुदाई न थी। आप सभी की श्वांसों की धड़कन बन गये। सभी ने मन ही मन कसम खायी कि आपके कार्य को आजीवन निरन्तर जारी रखेंगे। गीता भगवान आप प्रेरणा बन सब में समा गये, दादाश्याम के तेज में, माता की वैराग्यवृति में, नारायणी की तपस्वी आंखों में, शान्ता की दिव्यता में, मीरा की शान्ति में।

सब कुछ शान्त था, निरस्तब्ध शान्ति.....ओम ओम ओम्. ....हरि ओम् बस। दादा की फुलवारी का यह सबसे खूबसूरत फूल जो स्वयं ही गुलशन था, अपने जैसे अनेकों बनाकर खुशबू बन सब में समा गया। ऐसी दिव्यता की आभा के दर्शन के लिये देवताओं ने अपने आसन छोड़ दिये और जमीं पर आकर इस दिव्यता को प्रणाम किया। दादा के इस उपवन से एक आवाज गूंज रही है–

इस माटी में सुन मेहरबां जब तलक एक भी श्वांस हो,
तेरी प्रीति न बिसराऊँ मैं यही ओठों पे अरदास हो।।

❖हरिओम❖

पूज्य दादा श्याम भगवान

बदलियां जब पानी से भर जाती हैं तो उन्हें बरसना पड़ता है और फ़ूल जब सुवास से भर जाते हैं तो उन्हें हवाओं को अपनी सुगन्ध लुटा देनी होती है और जब कोई दिया जलता है तो आलोक स्वयं उससे बहने लगता है। ऐसा ही कुछ प्रकट हुआ दादा श्याम के व्यक्तित्व से।

गीता भगवान एवं श्याम जी का लौकिक बन्धन अब पारलौकिक बन चुका था। इसे पारलौकिक बनाने में पूर्वजन्म के संस्कारों का भी एक बड़ा हाथ था। प्रेमीजन आप दोनों को राधा-कृष्ण का अवतार मानते हैं। नारायण लक्ष्मी का यह अवतार बीसवीं सदी में गीता-श्याम के नाम से जाना गया।

दादा श्याम जी का अवतरण 16 सितम्बर, 1929 को एक साधारण कुलीन परिवार में हुआ। आपकी माता अत्यधिक सादगीयुक्त थीं। आपके घर का वातावरण नितान्त धार्मिक था। आपके परिवार पर आर्यसमाज का प्रभाव न बातों से प्रत्यक्ष प्रतीत होता है कि पाठ, पूजा, प्रार्थना एवं मंत्रोच्चारण से आपके घर का वातावरण सदैव सुरभित रहता। छोटी उम्र में ही आप के ऊपर से पिता का साया उठ गया, फलस्वरूप परिवार की जिम्मेवारी आप पर तथा आपके भाइयों पर आ गयी।

आप बचपन से ही प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी रहे। स्वर साधना आपकी जुबां से जब निकलती तो लगता कि सरस्वती स्वयं आपकी जुबां पर बैठ कर मिठास बांट रही हो। स्वामी रामतीर्थ की तरह आपको भी गणित में गहरी रुचि रही। बचपन से ही आप जब

गायत्री मंत्र का सस्वर उच्चारण करते तो सुनने वाले मंत्रमुग्ध हो जाते। विवाहोपरान्त गीता भगवान के सम्पर्क में आने पर आपमें विशेष परिवर्तन आये। सांसारिक सम्पत्तियों का मोह त्याग आप अध्यात्म की ओर चल पड़े। आप सच्चाई एवं सादगी में विश्वास रखते। किसी भी बात को घुम-फिरा कर कहने की अपेक्षा सीधे एवं सपाट रूप में कहना आपकी विशेषता रही है। प्रेमियों ने आपको सच्चाई एवं साफदिली का अवतार माना है। **Be clear rather than clever.** आपके जीवन का **Motto** रहा।

पूज्य श्री दादा श्याम व्यक्तित्व के धनी एवं हृदय सम्राट हैं। आपके लिये प्रेमी कहा करते हैं **Come live in my heart and pay no rent.** आपका कहना है 'मैं सारी दुनियां से मोहब्बत करता हूँ, पूरी दुनिया मेरे हृदय में समा जाये। ऐसे महान् व्यक्तित्व के बेताज बादशाह आज हर शहर में प्रेमियों के दिल की धड़कन बन चुके हैं। स्वामी विवेकानन्द की तरह वकतृत्व शक्ति आपकी सेवा करती है। आपको कमजोर एवं कमजोरी से घिरे व्यक्ति सदैव नापसन्द रहे हैं। आप कहा करते हैं कि **He is the brave man who can say No.** जो व्यक्ति आदतों का गुलाम है वह उन्नति नहीं कर सकता। अपनी आदतों, कमजोरियों एवं गलत बातों को No करना बहादुरी है। आप संसार पर राज्य करना नहीं वरन् दिलों पर राज्य करना पसन्द करते हैं।

आप जिन्दादिली की बेमिसाल मिसाल हैं। आपको हँसने हँसाने की सभायें (Laughing classes) चलाना, प्रातः 5 किलोमीटर की पैदल सैर करना, सादा हल्का भोजन करना पसन्द है। आपके पास रोते आने वाले हँसते हुए जाते हैं। ब्रह्मज्ञान की गूढ़ बातें आप सहज और सरल रूप में समझा देते हैं।

DIVINE DADA SHYAM

COME LIVE IN MY HEART AND PAY NO RENT.

आप कहते हैं Forgive and forget. सभी को क्षमा करना एवं भूल जाना आपका विशेष गुण है। भारत के लगभग सभी शहरों में तथा दुबई, सिंगापुर, अमेरिका, जर्काता, जद्दा, आबूधाबी आदि विदेशी शहरों में भी आपके व्यक्तित्व, स्वभाव और ज्ञान महिमा का प्रभाव फैला हुआ है। दादा भगवान ने अपने शरीर के अन्तिम क्षणों में आपको याद किया, उस समय आप मनीला में थे। दादाजी ने अपना शरीर तब तक नहीं छोड़ा जब तक आप उनके समीप न पहुंच गये।

आप गुरु के लिये आदर्श शिष्य बने और शिष्यों के लिये आदर्श गुरु बने। संसार भर में फैले प्रेमीजन आपको 'दादाश्याम' के नाम से पुकारते हैं। युवावस्था से ही आपकी अध्यात्मिक यात्रा अनवरत रूप से चल रही है। 70 वर्ष से अधिक की आयु में भी आप शरीर को सदैव क्रियाशील रखते हैं। किसी के भी दुख को सुनकर आप द्रवित हो जाते हैं। आप कहा करते हैं कि

'किसी के काम जो आये उसे इन्सान कहते हैं,
पराया दर्द जो अपनाये उसे इन्सान कहते हैं, उसे भगवान कहते हैं।'

आपने सभी के दर्द को अपनाया, इसलिए प्रेमी आपको धरती का भगवान मानते हैं। दादा भगवान और गीता भगवान ने निष्काम कार्य को जहां छोड़ा था, वहीं से इस को आगे बढ़ाने का महान कार्य श्यामभगवान एवं तुलसी माता ने किया। पूज्य दादाजी के लिये यही शब्द ठीक बैठते हैं।.....

जो बात दावा भी न कर सके वो दुआ से होती है
जब कामिल मुर्शिद (गुरु) मिलता है तो बात खुदा से होती है।

पूज्य श्री तुलसी माता

जीवन में कितना संगीत है और मनुष्य कितना बधिर है।
जीवन में कितना सौन्दर्य है और मनुष्य कितना अन्धा है।
जीवन में कितना आनन्द है और मनुष्य कितना संवेदनशून्य है।

जीवन के संगीत को पहचानने वाले पूज्य माता एवं दादा श्याम-गीता भगवान की आंखों के दो तारों की तरह थे। आपका जीवन सरल एवं सादा है। तुलसी माता के ऊर्ध्वगामी विचार ब्रह्मज्ञानी का व्यवहार, सन्त की रहनी, कृष्ण की मुस्कुराहट तथा बादलों की गरज जैसे वाणी सुनने वाले को भीतर तक हिला देती है और सुनने वाला स्वतः ही झूठ को छोड़ सत्य की राह पर चल देता है।

पूज्य श्री माता तुलसी का इस धरा पर अवतरण 22 दिसम्बर, 1928 में हुआ। आपके अध्यात्मिक जीवन की शुरुआत पूज्यश्री गीता भगवान के विवाहोपरान्त शुरू हुई। आपके गाये भजनों की तासीर ऐसी है कि सुनने वाला डूब जाता, खो जाता और हमेशा के लिए आपका हो जाता है। भजन के साथ आपको हारमोनियों सीखने का शौक था और यही माध्यम बन गया गुरु और शिष्य के अनंवरत मिलाप का। गीता भगवान ने आप जैसे योग्य शिष्य को पाकर गुरु परम्परा को धन्य कर दिया। सदैव निर्विकार समाधि में लीन रहने वाले पूज्य माता जी को आज सभी तुलसी भगवान के रूप में जानते हैं। आपके विचारों एवं

वाणी से अधिक आपके शुद्ध व्यवहार की भाषा सभी के दिलों पर अपना राज्य करती है। सादगी से जीवन बिताना आपका प्रमुख उद्देश्य रहा। महात्मा गांधी की तरह आप आदर्शों के पक्के रहे हैं। गीता भगवान का आप पर अत्यधिक प्यार एवं विश्वास रहा है। गीता भगवान को जिन बातों को गुप्त रखना होता, उनमें भी आपको साझीदार बनाते। आप गीता भगवान के योग्य मित्र एवं योग्य शिष्य की भूमिका निभाते रहे। आप कब गुरु बन बैठे इसका भान आपको भी नहीं हुआ। सत्संगी प्रेमियों ने आपके न चाहते हुए भी आपको अपना खुदा, अपना गुरु और अपना सब कुछ बना लिया।

सांसारिक रिश्ते में दोनों बेटियां – विद्या जी एवं चन्द्रा जी जिन्हें गीता भगवान रंगलों कहते थे पूरी तरह निर्लिप्त जीवन आपकी तरह जी रही हैं।

आपकी जुबां पर सरस्वती का वास है। आप जो कह देते पूरा हो जाता, मानो प्रकृति भी आपका कहना मानती हो। आपका कहना है कि इन्द्रियों पर संयम, संयमित आहार, व्यवस्थित व्यवहार सभी के लिए अनुकरणीय है। आदर्श गुरु की भूमिका में आप सभी के हृदय पर राज्य करते हैं। आपके समीप आने के बाद व्यक्ति फिर कहीं नहीं जा पाता, आपका ही बन कर रह जाता है। व्यवहार शुद्धि और मन की पवित्रता आपको बहुत पसन्द है। आप हमेशा कहते हैं कि 'अध्यात्म और धर्म को उदरपूर्ति का साधन मत बनाओ। ज्ञान सुनाओ, और जिसे ज्ञान सुनाओ उससे कुछ भी नहीं चाहो तब ही निष्काम कर्म कहलायेगा।'

सम्पूर्ण जीवन आपका संघर्षों की अग्नि से तपता हुआ कुन्दन बन कर चमका है किन्तु प्रकृति एवं प्रारब्ध ब्रह्मज्ञानी को भी तपिश के सांचे में ही ढालती रहती है। स्थूलशरीर जब सूक्ष्मशरीर में प्रवेश करता हुआ अपनी यात्रा को पूरा करता हुआ सम्पूर्ण ब्रह्मवस्था को प्राप्त करता है तब स्थूलशरीर रूपी झोंपड़ी हिल जाती है। संचित तथा प्रारब्ध कर्मों का निर्वाह करते ब्रह्मज्ञानी अपनी जीवनमुक्ति को प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ता है। ऐसी दशा में स्थूलशरीर को कई परीक्षायें देनी होती हैं तथा पूरा प्रभाव स्थूलशरीर पर पड़ता है। यही कारण है कि आत्म उपलब्ध ब्रह्मज्ञानियों के शरीर अन्त में अस्वस्थ रहे। यही पुनरावृति पूज्यश्री माताजी के साथ भी हुई। लगभग तीन वर्षों से माताश्री अस्वस्थ हैं और फिर भी मार्गदर्शन के कार्य में लगे हैं। आपकी मीठी एक बुलन्द आवाज सुनकर ही प्रेमीजन गद्‌गद् हो जाते हैं। यदि कोई आपसे आपके स्वास्थ्य के बारे में जानना भी चाहे तो आप जबरदस्त पीड़ा होते हुए भी आत्मा की ही बात करते हैं कि आत्म में दर्द नहीं, पीड़ा नहीं। दादा भगवान और गीता भगवान के शरीर पर अन्तिम समय में जो कष्ट आये थे, आप उससे भी अधिक कष्ट से गुजर रहे हैं परन्तु आपकी हिम्मत आकाशवत् बुलन्द है।

ऐसे महान् ब्रह्मज्ञानी के दर्शन करने को किसका मन लालायित न होगा। वैराग्यवृत्ति की जीवित मिसाल यदि किसी को देखनी हो तो वह आपको देख ले और फिर वह अध्यात्म एवं धर्म के हर पहलू को खुद-ब-खुद समझ जायेगा। आपका प्रिय भजन कानों में गूंजता हुआ **सुनाई** दे रहा है।

जो सिदिक नहीं है पूरा दिल में तो प्रेम गली में आना ना।
जो जान हथेली रख न सको तो लगन कभी भी लगाना ना।।

आपने जो प्रीति की, वह निभायी। जो कहा वही किया। शब्द और कर्म एक रूप हो गये। विचार और व्यवहार एक हो गये। आदर्श और यथार्थ एक हो गये। बस यही है आपका दिव्य दर्शन। जिसने आपको देखा, सब कुछ देख लिया। जिसने आपको जाना उसके लिये कुछ जानना शेष न रहा। जिसने आपको चाहा, उसे किसी और की चाहत न रही।

पूज्य माता श्री अपनी कीर्ति को नापसन्द करते हैं किन्तु हृदय से निकले दो शब्द ही काफी हैं :–

वही मुर्शिद (गुरु) है
जो आसूदाये (पहुँचा दे) मंजिल कर दे
वरना रास्ता तो सभी बता देते हैं।

❖हरिओम्❖

पूज्य श्री नारायणी जी, शान्ता जी एवं मीरा जी

आपको तो रोशनी ने ढाला है,
जहां भी देख ले उजाला ही उजाला है।

पूज्यदादा भगवान की अध्यात्मिक माला के तीन शानदार मोती पूज्य श्री नारायणीजी, शान्तीजी एवं मीराजी हैं। इन हस्तियों के बिना यह फुलवारी अधूरी है। पूज्य नारायणीजी एवं शान्ताजी सांसारिक रिश्ते में बहनें होने के साथ रुहानी हमराही भी हैं। आप दोनों ने दादा भगवान एवं गीता भगवान दोनों का सान्निध्य पाया। हर जगह हर समय साथ रहने वाली नारायणीजी धरती पर नारायण का साकार अवतार हैं। ओठों की मुस्कान ऐसी मानों खिलते कमल की पंखुड़ियाँ। आंखों में तीव्र विरक्तता, स्वरलहरी के स्वरों का समागम लिये खनकती और बुलन्द आवाज, भला कौन न मिट जाये आप पर और आपकी मुस्कराहट पर।

युवावस्था की दहलीज पर कदम रखते ही आपने दादा का साथ पाया। प्रखर बुद्धि और तीव्र वैराग्यवृति रंग लायी और समय ने आपको उस कतार में लाकर खड़ा कर दिया जहां किसी व्यक्ति को भगवान जानकर उसकी पूजा और वन्दना होती है।

समय की धार पर चलना, नये विचारों को अपनाना, पुरानी बातों, विचारों, शब्दों को नयापन देना आपकी शख्सियत का खास हिस्सा है।

सदैव प्यार से मिलना और सब की तारीफ करना आपकी विशेष शैली है। आपके ज्ञान की गहराई देख लगता है कि कृष्ण

स्वयं अपनी गीता लेकर आप में उतर गये हों। आपके मुख से निकलने वाली वाणी श्रोता पर जादू का असर करती है। अनजाने में मुख से निकली बात भी विशेष तांसीर रखती है।

इस समय पूज्य नारायणी जी, दादाश्याम और माता तुलसी के साथ उन्हीं के स्वरूप में दादा सत्संग की मुख्य कर्णधार है। जड़ से जड़ बुद्धि वालों को भी आप ज्ञान सिखा देते हैं। दादा भगवान की प्रखरता, गीताभगवान का तेज, माता की वाणी का ओज तीनों मिलकर कर्म, भक्ति और ज्ञान का संगम बन आप में समाए हुए हैं। निष्काम के लिये जीवन कुर्बान करने वाले आप दिव्य आदर्श हैं और रहेंगे।

हरी हरी रसभरी जहां देखो हँस पड़ी। ऐसी प्रिय शान्ताजी तो बाल्यावस्था से ही दादाजी के सम्पर्क में आ गये और आज तक इस वैराग्यवेदी पर ओम के नाद से शान्त स्वरूप हो खड़े मुस्करा रहे हैं। दौड़-दौड़ कर दादाभगवान की सम्पूर्ण सेवा का श्रेय आपको ही मिला। कहते हैं गुरु सेवा भी वही कर सकता है जिस पर गुरु प्रसन्न होता है। गुरुसेवा और गुरु भक्ति का ऐसा स्रोत एवं आदर्श कम ही नजर आता है। जहां बाल्यावस्था में मनुष्य खाने-पीने घूमने-फिरने में ही रुचि लेते हैं उस अवस्था में आपने अपनी बाल्यावस्था, किशोरावस्था एवं युवावस्था सभी को गुरुज्ञान में एकल भाव से समर्पित किया और शरणागति के महानतम् शिखर पर खड़े हो गये। सभी को ज्ञान की राह पर चलने की प्रेरणा देना आप की विशेषता रही है। आप गम्भीर ज्ञान भी मुस्कराकर सरल और स्वाभाविक वाणी से सुनाकर गम्भीर विषय को भी हल्का कर देते हैं। आप शान्तस्वरूप रहकर अपने नाम को सार्थक करते हैं। आप चिरकाल तक दादाजी की सेवा और भक्ति के लिये प्रेमियों की प्रेरणा स्रोत रहेंगे।

प्रिय मीरा तो साक्षात मीरा ही है। आप लौकिक रिश्ते में श्याम भगवान की बहन तथा गीताभगवान की ननद हैं। यह रिश्ता तो माध्यम बना तीन सन्तों के समागम का। युवावस्था में ही भाभी के रूप में गीताभगवान का मिलना इस बात का परिचायक है कि आपके पास पुण्यों की पूंजी पिछले जन्मों से ही है तभी तो श्यामभगवान जैसे सन्त भाई के रूप में साथ रहते हैं। आप बचपन से ही संस्कारी प्रतीत होते हैं। आप ज्ञान और प्रेम का मिश्रण हैं।

आज भी आप दादाश्याम और माता जी के साथ इस कार्य में अनवरत जल प्रवाह की तरह जुड़े हैं। अनन्तकाल से ! वेग से जल प्रवाहित हो रहा है, जल की अनन्त यात्रा कभी रुकी। आपकी वाणी का प्रवाह, जीवन की कुर्बानी हम सभी के लिये एक आदर्श है। आप निरन्तर 24 घण्टे दादाश्याम जी के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर इस ज्ञान रूपी हवनकुण्ड में अपनी श्वास की समिधा बना कर आहुति दिये जा रहे हैं। आपका जीवन सभी प्रेमियों के लिये सदैव ही अनुकरणीय उदाहरण रहेगा।

प्रकृति का हरा-भरा वातावरण आपको पसन्द है। हरी दूब पर सैर करना, सूर्य की प्रथम रश्मि को नमस्कार करना, फलों का सेवन, योगाभ्यास तथा ध्यान मार्ग आपके रुचिकर विषय हैं। आप गम्भीर विषयों का भी खिलखिलाते हुए समाधान कर देते हैं। आपके प्रेम एवं सान्निध्य में आकर कोई व्यक्ति आपको सरलता से भूल नहीं सकता। आपका सहज स्वभाव सभी प्रेमियों को बांध लेता है। आपके द्वारा गाये भजन प्रेमियों की श्वासों में बस जाते हैं।

आप कहकर नहीं वरन् जीवन को आदर्श रूप में ढाल कर हर एक दिल में छा जाते हैं। इस समय संसार के हर कोने से सत्संगी प्रेमी आपके निवास स्थान 'ग्लैमर ग्लेन' में आते हैं। उन

निर्लिप्त जीवन तुलसी माता

आपकी तारीफ में हम
लिखें भी तो क्या लिखें,
कि उठती नहीं है कलम
सिज़दा करने के बाद।

सभी से सहज रूप में मिलना आपकी विशेष ओं में भी एक आपकी मेहनत एवं प्र ास अथक् हैं। क ो मी, क्ति प्रतीक भी और हमारे गीता श्याम की भक्ति, और क.म का संगम है। आपकी सेवा में रत प्रिय प्रमिलाजी ीजी का भी इतिहास सदैव गुणगान करेगा जिन्होंने अप ूर्ण जीवन दादाश्याम व मीरा जी के सानिध्य में प्रेम तथा ा में गुजारा है।

सच है दादा की फुलवारी के तीनों दिव्य आलोक नारायणी, शान्ता और मीरा—गंगा, यमुना, सरस्वती हैं। दादा की फुलवारी का हर फूल अनोखा, दिव्यता से, आलोक से भरा है। सम्पूर्ण भारत वर्ष दादा की फुलवारी के फूलों से सुगन्धित हो रहा है। जहां बम्बई जैसे महानगर को अक्सर लोग महानरक के नाम से पुकारते हैं, वहीं पर दादा की फुलवारी महक रही है। इस महानगर को प्रेमी तीर्थ करके मानते हैं और आने वाले समय में संसार इसे तीर्थ स्थली स्वीकार करेगा।

बम्बई महानगरी से कुछ आगे दिव्य फूलों की छटा दिख जाती है पूना नगरी में। पूना में गीताभगवान ने शारीरिक अस्वस्थता का कुछ समय बिताया था। वहां दादा की फुलवारी के फूल मोना जी, सोनूजी तथा रोमीजी आपकी प्रतीक्षा में थे। आज आप तीनों ने पूना के सत्संग की बागडोर को अपने हाथों में सम्भाल रखा है। पल-पल में मुस्कराने वाली मोना दीदी, ज्ञान की गम्भीरता लिये रोमी दीदी को भला कौन नहीं जानता ?

महात्मागांधी की नगरी गांधीधाम सावरमती अहमदाबाद में पूज्य कौशल्या जी तथा गांधीधाम में निम्मी एवं लता गोविन्द जी सत्संग का कार्य सम्भाले हुए हैं। अनेक नगरों में अनेक नाम हैं इन

फूलों के। हर फूल अपने आप में सम्पूर्ण बगीचा है जो दादाजी एवं गीताभगवान की अथक मेहनत के फल है। भोपाल में रत्ना डुलानी की मधुर आवाज, सावित्री का सम्पूर्ण ज्ञान, इन्दौर में निम्मी की महानता एवं त्याग को हर एक सत्संगी जानता हैं। दादाभगवान द्वारा रोपित प्रत्येक छोटा से छोटा बीज भी सम्पूर्ण है। अब चलते हैं हलद्वानी के सुगन्धित उपवन में जहाँ महक रहा है डाक्टर माखीजानी एवं उनका परिवार। यह दादा भगवान, गीता भगवान और श्यामभगवान एवं तुलसीमाता के अनन्य भक्त हैं। माखीजानी का सम्पूर्ण परिवार तन-मन-धन से अपने दिलो जान जिगर समर्पित है। डाक्टर माखीजानी बेमिसाल हस्ती हैं, उनकी गम्भीरता एवं नियमबद्धता, कम व यथार्थ बोलना एक सम्पूर्ण ज्ञानी का परिचायक है। माता जशोदा एवं दोनों बेटियां सुलक्षिणी एवं बेबी पूरी तरह से सत्संग कार्य में समर्पित हैं। सम्पूर्ण परिवार की निष्कामता अनुकरणीय है। सुलक्षिणीजी द्वारा लिखी कवितायें युगों तक याद रखी जायेंगी।

हलद्वानी से माउन्ट आबू तक की यात्रा हमें गोपीजी एक डाक्टर थधानी व उनकी पत्नी से परिचय करायेगी, लेकिन यह दादा जी को दीवानगी की हद तक पूजते हैं। आज भी गोपी दीदी की आंखों में गीताभगवान का साकार प्यार छलकने लगता है, त्याग की यह मूर्ति संसार में अलबेली और अनोखी है।

माउन्ट आबू से सीधे कानपुर के सत्संग की कर्णधार पूज्यभगवन्तीजी के बगीचे की ओर चलते हैं जहां से सरलता, सादगी और कठोर साधना की खुशबू आ रही है। आपका लखनऊ से ही गीता भगवान का साथ मिला। आपने साधना के द्वारा अपने निखारा और कानपुर सत्संग की जिम्मेवारी उठा कर गीताभगवान

के कार्य को निरन्तर आगे बढ़ाया। प्यार से मधुर वाणी बोलकर सबका दिल जीतना आपकी विशेषता रही है।

अंत में हम आ जाते हैं दादा की तीर्थस्थली लखनऊ नवाबों की नगरी से गीताभगवान की कृपा से दिव्य तीर्थस्थल में बदल चुकी है। गीताभगवान ने निष्काम की शुरुआत यहीं से की, दादा ने अपनी लीला यहीं समेटी। लखनऊ की सबसे बड़ी बात यह है कि यहां के फूलों को दादा और गीताभगवान ने स्वयं अपने हाथों से सींचा।

लखनऊ का सत्संग पूज्यश्री प्रमिलाभगवान, नीना मम्मी, दया जी एवं लीलू भगवान के नाम से जुड़ा है। लीलूजी ने अपनी मधुर आवाज और मुस्कराहट से लोगों का दिल जीता और सत्संग का प्रचार किया। गीताभगवान भी आपको महबूब के नाम से सम्बोधित करते थे। आप प्रेमावतार हैं।

एक खास हस्ती से यदि आपकी मुलाकात न करवायी तो खास खुशबू छूट जायेगी। फुलवारी के इस खास फूल का नाम है ज्ञान का प्रचण्ड सूर्य प्रमिला भगवान। नीनाजी के साथ मिलकर आप इस महान कार्य में निरन्तर अपनी आहुति दे रहे हैं। सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश तथा इसके बाहर भी 'गीता सत्संग' का विस्तार आपकी अथक् मेहनत तथा निष्काम सेवा का फल है। आपका प्यार तथा नम्रता अनोखी है। एक बार आप के पास आ जाने के बाद आपकी दिव्य वाणी से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा जा सकता। नीनाजी सबकी माता हैं। माता की ममता और दुलार आपका स्वभाव है। पूज्य प्रमिलाजी ने स्वयं को गीता भगवान के समान वनाया और अपने पुरुषार्थ से, साधना से, अपने को सूर्य की भांति

चमका दिया। आपने पूज्य गजवानी जी सिक्काजी जैसी अनेक विभूतियों को तैयार किया। आपकी महिमा को संसार कभी न भुला पायेगा। आपके लिये चन्द शब्द ही काफी हैं :—

अगर अजमे सफर (दिल का इरादा) में पुख़्तगी हो।
तो जरूरत नहीं फिर रहनुमा की।

यह समस्त विभूतियां वह हैं जिन्हें दादा भगवान और गीता भगवान ने स्वयं अपने हाथों से बनाया। इनके अतिरिक्त भी कई नामी और अनामी विभूतियां हैं जो अनवरत निष्कामसेवा में लगी हुई हैं। इन सबका नाम एवं विवरण देना बहुत कठिन कार्य है। देश-विदेश में फैली हुई फुलवारी को सादर प्रणाम।

दादा की इस फुलवारी को नमन।
हजार बार नमन लाखों बार नमन।।
मिटाया तुमने जगत का क्रन्दन।
शष्ट नहीं जिससे हो सके वंदन।।

❖ हरिओम ❖

मिटाया तुमने जगत का क्रन्दन।
शब्द नहीं जिससे हो सके वन्दन॥

दादाजी के दिव्य वचन

अनमोल वाणी

पूज्य श्री दादा भगवान के मुखारविन्द से निकले छोटे-छोटे वाक्य हम भक्तों के लिए अनमोल वचन बन गये। उनके मुख से निकले सभी वचनों का संग्रह तो नहीं किया जा सका, किन्तु उनके कुछ वचनों को आगे दिया जा रहा है –

- **Every happening is the mood of God.** प्रत्येक घटना ईश्वर की ओर से आती है।
- मकान तो तुमने बहुत बनवाये क्या उस मकान में कोई ऐसी जगह बनायी है जहां मौत न आ सके। मौत तो तुम्हें पाताल में भी ढूंढ़ लेगी।
- धोबी कपड़े का मैल निकालता है, सफेदी नहीं डालता। डाक्टर बीमारी निकालता है, स्वास्थ्य नहीं डालता। उसी प्रकार गुरु भी अन्तस के अज्ञान को निकालता है। आत्म स्वरूप ज्ञान स्वरूप तो प्रत्येक स्वयं है।
- कोई भी बीमारी आने पर इलाज करो परन्तु इन्तजार मत करो।
- बीमारी में पहले भगवान पर विश्वास रखो फिर डाक्टर पर।
- साधारण मनुष्य कहता है 'सहज मिला सो दूध बराबर' लेकिन भक्त कहता है सुख के माथे सिल पड़े जो नाम हृदय से जाय। बलिहारी वा दुख की जो पल पल नाम रटाय।। भक्त तो दुख चाहता है और सुख मिलने पर दुखी होता है। सुख में मनुष्य भगवान को भूल जाता है और दुख में याद करता है। *दुख दारू, सुख रोग भया।*

- अहता, ममता, कर्ता यह तीन कैंसर, टी.बी. से भी भयानक बीमारियां हैं क्योंकि कैंसर, टी. बी. तो चिता में जलकर समाप्त हो जाती है लेकिन अहंता, कर्ता, ममता तो जन्म जन्मान्तर तक साथ चलती है और दुखी करती है।
- भगवान जो देता है एक दिन वापस ले लेता है लेकिन गुरु की महानता यह है कि जो दे देता है उसके बदले में कुछ नहीं लेता।
- **Die before you die** मृत्यु के पहले ही गुरु के वचनों को धारण कर मौत की खरीद कर लो। जो गुरु के वचनों पर मिट जाता है, उसे मौत क्या मारेगी।
- **Buy death from your Guru.**
- **Buy poverty from your Guru** गुरु के पास जाकर फकीरी खरीद करो कि मेरा कुछ भी नहीं है। **Non possessive mood.**
- कर्मकाण्ड, दान, तपस्या का फल अगले जन्म में मिलेगा, पर ज्ञान का फल प्रत्यक्ष है। इसी जन्म में ही ज्ञान सुनकर ज्ञान मुक्ति का आनन्द ले सकते हो।
- विज्ञान की उन्नति भौतिक उन्नति के लिये आवश्यक, विज्ञान न होता तो इतना विकास न होता। विज्ञान आराम और सुख दे सकता है किन्तु खुशी तो अध्यात्म से ही मिल सकती है। विज्ञान और धर्म एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।
- पण्डित केवल तुम्हारी जन्मपत्री या कुण्डली लेता है। गुरु जीवन का पत्रा (लेखा-जोखा) लेता है।
- ज्ञानी किसी कर्म का आरम्भकर्ता नहीं होता है।

- जो व्यक्ति सुखों में ईश्वर का शुक्रिया अदा नहीं करता, वह दुखी होता है।
- दादा कहते थे कि मैं तुम्हें काल्पनिक स्वर्ग पर विश्वास नहीं दिलाना चाहता। मैं तुमको इस प्रकार का बना देना चाहता हूँ कि तुम्हें इसी जन्म में अपने कदमों के नीचे स्वर्ग महसूस हो सके।
- There is no death only life and life. जीवन एक निरन्तर प्रक्रिया है। वास्तव में मौत ज्ञानी और अज्ञानी दोनों की ही नहीं होती, क्यों अज्ञानी का कर्मानुसार फिर जन्म होता है, ज्ञानी आत्मा है। वह कभी मरता ही नहीं है।
- तुम अपना अस्तित्व समाप्त करो तो भगवान प्रकट हो जाय, और यही भगवान का विराट दर्शन है।
- गुरु का प्रेम भगवान के साम्राज्य में पहुंचाने वाला हवाईजहाज है।
- गुरु एक राजदूत Ambassador की भांति है जो ईश्वर से हमारी मुलाकात कराता है।
- प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को ईश्वरीय संदेश पहुंचाये तो सारी दुनिया में शीघ्र ही जागरूकता आ जायेगी।
- कर्म का मर्म जानो।
- शास्त्र हमारे गूगें दोस्त हैं, समय पड़ने पर वे हमारी गलती नहीं बता सकते।
- स्त्रियों में अत्यधिक सहनशीलता कहीं-कहीं गुण के स्थान पर अवगुण बन जाती है क्योंकि गलत बात को ज्यादा सहन करना दुख होता है।

- अन्याय सहने वाला अन्याय करने वाले से भी ज्यादा खराब माना गया है।
- भगवान कोई छोटा बच्चा नहीं है जिसे तुम खोजने निकल पड़े हो। खोजना नहीं है खो जाना है। खुदी गयी तो खुदा मिला।
- मनुष्य बहुत स्वार्थी है, पाँच रुपये का प्रसाद चढ़ाकर अपने फायदे का बड़ा कार्य कराना चाहता है।
- जो समझता है कि उसका जन्म दिव्य है उसका फिर जन्म नहीं होता है।
- सांसारिक भोगों को तुम नहीं भोगते बल्कि भोग तुम्हें भोगते हैं।
- फूल तोड़ने में भी देरी है, ज्ञान आने में इतनी भी देरी नहीं है।
- गुरु अगर तुमको जीव समझेगा तो तुम्हारा उद्धार नहीं होगा।
- गुरु पहले दुनिया का नशा उतारता है, वैराग्य की खटाई खिलाता है तब व्यक्ति गुरु की बात मानता है।
- गुरु का गुस्सा मोहन थाल (मिठाई) से भी मीठा है।
- गुरु झिड़के तो मीठा लागै। गुरु तुमको बदलता है।
- Kill with Kindness.
- हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहीं ठौर।
- भगवान का मिलना आसान है, सतगुरु का मिलना मुश्किल है।

- जो दीसे सब चालनहार। दृश्यमान जगत नाश की ओर जा रहा है।
- तुम पहले जगत को देखते हो फिर भगवान को। पहले भगवान को देखो, है ही भगवान।
- गुण गुणों में बरतते हैं, तुम गुणातीत हो।
- भगवान पाने के लिए कोई (Shortcut) या (Moyal Road) नहीं बना है क्योंकि साधक को साधना करनी ही पड़ेगी। बिना साधना के कुछ नहीं मिलेगा।
- कोई मेरे पांव छूता है तो मुझे अच्छा नहीं लगता। अपने भीतर के परमात्मा को मत झुकाओ।
- (A to Z Alzebra to Zoology) सभी विद्यायें केवल जीवन निर्वाह सिखाती हैं। जीवन का निर्माण तो ब्रह्मी विद्या से ही होता है।
- पैगम्बर तो प्रत्येक युग में सदैव रहते हैं, किन्तु जब किसी में तीव्र व्याकुलता होती है तो उसके लिये प्रगट होते हैं।
- बरसात धरती पर आने के बाद वापस नहीं जाती, वह समस्त धरती जड़ चेतन सबको हरा-भरा कर देती है। ऐसे ही सन्त भी वातावरण को सुगन्धमय बना देते हैं। सन्त भक्त के हृदय में बैठ कर अन्तर्ध्यान हो जाते हैं और फिर वापस नहीं जाते।
- शंका का समाधान है लेकिन शक का नहीं है।
- आत्मिक बाम सिरदर्द के टाइगर बाम तथा अणुबम से शक्तिशाली है।
- मैं तुम्हें कब्र से भी निकाल कर मुक्त करूंगा।

- ❐ मौत बनी ही नहीं है। (O death, no sin, no Sickness)
- ❐ कभी किसी का गुरु नहीं बनो। अपना आप करके जानो भूला भी मैं ही हूँ। मैं अपने को ही जगाता हूँ।
- ❐ समाधि पर समाधि लाख तू करता रहे, जब तक न मिटेगी वासना बन्धन न तेरा जायेगा।
- ❐ भगवान अकेला था, उन्होंने संकल्प किया "एकोटम बहुस्याम मैं एक से अनेक हो जाऊं यह विचार करते ही भगवान निराकार से साकार हो गये। अब तुम भी साकार को गुम करके निराकार बनो।
- ❐ नकाब उठाकर भगवान को देखो। ब्राह्मण, हाथी, चींटी, चंडाल सबमें एक आत्मा का ही दर्शन यथार्थ दर्शन है।
- ❐ सारी दुनिया 6 कड़े की जंजीर में जकड़ी है। 1 संकल्प 2. इच्छा, 3. द्वैत, 4 द्वैष, 5 मोह, 6. अहंकार।
- ❐ विचार एवं इच्छाओं से रहित बनो (Be thoughtless elesireless from today)
- ❐ आत्माकार सत् और असत् दोनों को जानता है। जगत मिथ्या है झूठ नहीं है क्योंकि दिखाई देता है, आत्मा सत्य है।
- ❐ जगत ऐसे हैं जैसे मृगतृष्णा का जल, खरगोश के सींग (केवल मिथ्या आभास)।
- ❐ अशोक रहना (शोक रहित) ही सच्चा धर्म है। प्रेम तुम्हारा धर्म है।
- ❐ हँसने तथा मुस्काने का अधिकार केवल मनुष्य को ही मिला है, यदि वह इनका सही सदुपयोग करे तो कभी दुखी एवं निराश नहीं होगा।

- (My look is more than book) मेरा जीवन मेरा अनुभव तुम्हारा मार्गदर्शक है। पुस्तक राह बताती है दिखाती नहीं। गुरु राह बताता भी है, दिखाता भी है।
- गुरु वाक्यं सत्यम्।
- (Be nothing - Do nothing) न कुछ बनो और न कुछ करो।
- मनुष्य जन्म कर्म बनाने के लिये नहीं वरन् कर्म काटने के लिये मिला है।
- सोया हुआ मनुष्य स्वप्न के जगत को ही सत्य मानता है, अज्ञान में ही जगत सत्य सा भासता है।
- कोई भी सवाल पूछने से पहले अपने से पूछो कि मैं कौन हूँ मैं क्या हूँ।
- गुरु की बात को यथावत् मानना चाहिये।
- गुरु को मानुष जानते जन्म-जन्म होय स्वान। गुरु मनुष्य नहीं है।
- पाप से घृणा करो, पापी से नहीं। Hate A sin not the sinner.
- गुरु की बात एक कानून की तरह माननी चाहिये। Guru Word is low.
- अपने को जानो। How far am I ?
- गुरु गोविन्द से भी ऊंचा है।
- प्रत्येक घटना पर विचार करो कि ऐसा भी होता है।
- मुकर जाओ अर्थात् मत स्वीकार करो कि तुमने जन्म लिया है।

- ❒ अपना सब कुछ गुम कर दो।
- ❒ बीजमंत्र सर्व को ज्ञान। सभी में ज्ञान समाया पड़ा है।
- ❒ सब गुजर जायेगा। This will also pass away.
- ❒ अपना अहंकार गुरु को सौंप दो।
- ❒ गुरु मेहर करता है कहर नहीं करता।
- ❒ पूरा सतगुरु भेटिया तो पूरी हुई युक्ति। पूरा गुरु मिलना ही मुक्ति है।
- ❒ गुरु जी मेरी ममता काट।
- ❒ पहले बनी प्रारब्ध पीछे बना शरीर। पर मन में विश्वास नहीं आता।
- ❒ (This will be done, O! Lord they will be done) जो तुम्हारी इच्छा वह हमारी इच्छा।
- ❒ काल को सिर देने से अच्छा है गुरु को सिर देना।
- ❒ जो करता है सो भरता है सो मरता है।
- ❒ दौलत दो लात है, जब आती है तो अंधा करती है और जाती है तो कमर तोड़ जाती है।
- ❒ माया और होशियारी मुक्ति में रुकावट है।
- ❒ दानी नहीं उदारचित्त बनो।
- ❒ Harity begins at home.
- ❒ उत्तम में उत्तम दान है ज्ञानदान।
- ❒ भगवान अपने भक्त को तीन सौगात देता है !

  बीमारी !! गरीबी !! निन्दा !!

- ❒ सन्तपुरुष अपनी निन्दा स्वयं कराता है जिससे कीर्ति में न फंसे।
- ❒ प्रभु का सिमरण साधु के संग। घर में बैठ कर मन एकाग्र करना बहुत कठिन है।
- ❒ (Lecturer) के (Lecture) से अनुभवी का मौन अधिक प्रभावशाली होता है।
- ❒ मान न मान तू है भगवान। **Believe it or not but you are God.**
- ❒ संतपुरुष पुकारते कर-कर लम्बे हाथ, तू परमात्मदेव है तू त्रिलोकीनाथ।
- ❒ आत्मा मन बुद्धि वाणी के परे है।
- ❒ सत्य और सरलता वाले को ज्ञान जल्दी लगेगा।
- ❒ उत्तम में उत्तम दान यह है कि मांगने वाले को ऐसा बना दें कि फिर उसे मांगने की आवश्यकता न पड़े अर्थात् अपने पैरों पर खड़ा हो जाय।
- ❒ कर्तापन काला नाग है जिसने तुम्हें डस लिया है।
- ❒ घड़ी जो बिसरूं राम को ब्रह्म हत्या मोहे होय।
- ❒ Whole world is filled with God.
- ❒ (God is one without Second.) अद्वैत मत ही सच्चा मत है।
- ❒ हौ मैं (अहम्) दीर्घ रोग (पुरानी बीमारी) है।
- ❒ जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तीनों अवस्थाओं से आत्मा परे है, इन की साक्षी है।
- ❒ गूंगा, बहरा, अंधा बनकर अध्यात्म के रास्ते पर चलो।

- ❐ असली बोली वह है जिसमें बोलना न पड़े अर्थात् कर्म न बने।
- ❐ आत्मा निराकार, र्निविकार है।
- ❐ जगदीश जगत से पहले भी था, वर्तमान में भी है और ज़गत के बाद भी रहेगा।
- ❐ ज्ञान का फल प्रत्यक्ष है, शुभ कर्मों का फल कालान्तर में प्राप्त होने के कारण अप्रत्यक्ष है।
- ❐ द्रौपदी ने भगवान को मथुरावासी, वृन्दावनवासी समझ कर पुकारा तो भगवान को आने में समय लगा, तब द्रौपदी ने भगवान को घट-घटवासी पुकारा और भगवान तुरन्त प्रकट हो गये।
- ❐ अहं ब्रह्मास्मि्, तत्वमसि। जो मैं हूँ वही तुम हो।
- ❐ तीन कृपाओं में से दो हो गई है 1. भगवत कृपा 2. गुरु कृपा 3. बस अब अपनी कृपा करनी है।
- ❐ अपनी कृपा जिस आप करै सो सेवक गुरु की मत लै।
- ❐ तुम्हारा कुछ नहीं है सब चीज अमानत है।
- ❐ त्यागी, बैरागी को भी माया वश में कर लेती है। इसलिए सावधानी से रहना है।
- ❐ इच्छा करना ही पाप है।
- ❐ शुद्ध आहार से विचार भी शुद्ध रहते हैं।
- ❐ भगवान ही सबको भोजन देता है, मनुष्य की ताकत नहीं है।
- ❐ नानक माना नाना में एक (न अनेक) जगत पूरे में भगवान ही फैला हुआ है।

❖हरिओम❖

आधार स्तम्भ

Fundamental points of Divine Dada's Satsang

सतगुरु की अमृतवाणी

1. इच्छा मात्रम् अविद्या।
2. मौत है ही नहीं।
3. सत्कर्म सोने की जंजीर, बदकर्म लोहे की जंजीर।
4. श्रीरामचन्द्र लोकारीत, श्रीकृष्ण लोक संग्रह।
5. भगवान जहां-तहां है, हर चीज भगवान है।
6. समदृष्टि पर समवर्तन नहीं।
7. उत्तरायण-दक्षिणायन।
8. ज्ञानयज्ञ सर्वश्रेष्ठ है।
9. ख्याल करना तुम्हारा धर्म नहीं।
10. अशोक रहना तुम्हारा धर्म है।
11. श्रीकृष्ण ब्रह्मचारी दुर्वासा ऋषि निराहारी।
12. आत्मा साध्य वस्तु नहीं जो साधन से प्राप्त हो।
13. दया धर्म का मूल है पर नर्क मूल अभिमान।
14. पूर्ण गुरु का सुन उपदेश – परब्रह्म निकट कर देख।
15. पूर्ण गुरु की निशानियां हैं – निरइच्छा, निरअहंकार।
16. योगक्षेम का भार मुझ पर है।
17. अनन्य भक्ति अव्यभिचारी, अभेद भक्ति।
18. देह अभ्यास छोडने के सिवाय आत्मा का निश्चय नहीं होगा।

19. सुमरण का मतलब आप विसर्जन (सु–मरण)।
20. परधर्म में नहीं जाओ, इन्द्रियों का धर्म।
21. जो कुछ सीखा है सब भुलाओ तो भगवान मिलेगा।
22. सब को एक सा प्यार करो।
23. प्यार कर्म नहीं पर स्थिति है।
24. अपनी भूल निकालना ही बहादुरी है, अपने को सुधारें।
25. विराट स्वरूप (सर्व में पेखे भगवान)।
26. श्रद्धावान लभते ज्ञानम्, अश्रद्धावान नाशजान।
27. सब कर्म छोड़कर मैं की शरण लो यानी आत्मा की।
28. प्रार्थनाएं और शास्त्र बेकार हैं। (ईश्वर की प्राप्ति में)।
29. पुस्तक डाल पानी में, गुरुमुख से ज्ञान मिलेगा।
30. शुभ-अशुभ का त्यागी मुझे प्रिय है।
31. ज्ञानयज्ञ सर्वश्रेष्ठ है, ज्ञान का दान श्रेष्ठ है।
32. मन्दा किसनू आखीये, जो है ही भगवान।
33. मुस्कुराना और शुक्राना सुबह का व्यायाम है।
34. ब्रह्मज्ञानी आप परमेश्वर, ब्रह्मज्ञानी को खोजे महेश्वर।
35. सहज मिला सो दूध बराबर।
36. वैराग्य और त्याग की ताकत पर है मन की मौजों की खुशी।
37. ज्ञानी ट्रस्टी, बैंक कैशियर, हेड मास्टर की तरह है।
38. इंसाफ ही भगवान की मेहर नजर है।
39. भगवान को पुकारना अज्ञान है।
40. दुख ही दुख है सुख लेने में, सच्चा सुख है सुख देने में।
41. भोगी हृदय उदास, योगी हृदय निवास।

42. बाहरमुखी सदा दुखी, अन्तर्मुखी सदा सुखी।

43. आप अकेला सब करे, घट में लहर उठाय।

44. ब्रह्मज्ञान का साधन है पूर्ण गुरु।

45. पूरा सतगुरु भेटीया तो पूरी हुई युक्त।

46. मन को आत्मा की राह दिखा दे वरना मन नहीं मानेगा।

47. मेरा कर्म दिव्य, जन्म दिव्य, मैं अजन्मा, अकर्ता हूँ।

48. समर्थ खुशी से त्याग करता है। असमर्थ से भोग छूट जाते हैं।

49. भोग हम नहीं भोगते भोग हमें भोग जाते हैं।

50. फूल तोड़ने में देरी है, पर ज्ञान लगने में इतनी भी देर नहीं।

51. न आने से अच्छा है देर से आना।

52. गुरु का गुस्सा, मोहन थाल से मीठा।

53. गुरु झिड़के तो मीठा लगे, गुरु बक्शे तो गुरु वडियायी।

54. भगवान का मिलना आसान है, पर सतगुरु का मिलना मुश्किल है।

55. सतगुरु को पाने के लिये शीश देना पड़ता है।

56. ज्ञान अग्नि, दग्धः कर्म।

57. ज्ञान अग्नि, ज्ञान सुरमा, ज्ञान नाव, ज्ञान रोशनी।

58. दिन का धड़कन ही पाप है।

59. शादी मजा नहीं पर सजा है।

60. परमात्मा के प्यार में ऊपर वढ़ते हैं दुनिया के प्यार में नीचे गिरते हैं।

61. मौन है सोना, बोलना है चांदी।

62. कोई भी कर्म खाते में नहीं आये।
63. पराधीन सपनेहुँ सुख नाही, मरे हुए को कौन मारेगा।
64. प्रेम केवल देना है, प्रेम में मांग नहीं होती।
65. कामिनी, कीर्ति, कंचन से बचो।
66. कुछ भी अपना नहीं समझो, सब अमानत है भगवान की।
67. समय धन है बल्कि धन से कीमती है।
68. भगवान तेरी मर्जी चले न कि मेरी मर्जी।
69. भगवान ने तुम्हारी प्रारब्ध पहले से ही बना दी है।
70. मरने से पहले मरो, काल को सिर देने से तो अच्छा है गुरु को सिर दे दो।
71. गुरु के शब्द पर मर मिट जाओ, गुरु वाक्य सत्यम।
72. जो करता है सो मरता है, सो भरता है।
73. माया में गुलामी और सलामी है।
74. दौलत यानी दो लात, आये तो अंधा करे, जाय तो कमर तोड़े।
75. माया और चतुराई मुक्ति में रुकावट है।
76. दान नहीं करें पर उदारचित्त बनें।
77. भगवान अपने प्यारों को देता है – बीमारी, गरीबी, निन्दा।
78. प्रभु का सुमिरण साध के संग।
79. अनुभवी पुरुष का मौन लेक्चरर के लेक्चर से अधिक प्रभावशाली होता है।
80. मान न मान तू है भगवान।
81. बुद्धि से आत्मा न जानेंगे, आत्मा से आत्मा जानेंगे।

82. पिता का जन्म क्या जाने पूत।

83. सत्य और सरलता से ज्ञान प्राप्त होगा।

84. जंजीर के छः कड़े हैं : इच्छा, मोह, संकल्प, विकल्प, द्वेत, द्वेष, अहंकार।

85. सत्य-असत्य को जानने वाला मैं आत्मा हूँ।

86. कर्म, भक्ति, उपासना का फल दूसरे जन्म में मिलेगा पर ज्ञान का फल प्रत्यक्ष फल है मुक्ति और आनन्द।

87. गुरु और ईश्वर की कृपा हुई पड़ी है पहले। अपनी ही कृपा करनी है।

88. खाने पीने और कपड़ों का आत्मा पर कोई असर नहीं होता, खाना पीना पवित्र है।

89. द्वैत का धुंआ नहीं केवल अद्वैत की आग जलाओ उसमें मैं को तो बचे न उसकी राख।

90. कर्तापन के काले नाग ने सबको डस लिया है।

91. कबीर ऐसा कठिन व्रत लियो जो ले सके नहीं कोय, घड़ी एक बिसरु राम को तो ब्रह्महत्या मोहे होय।

92. हो मैं धीरग रोग है दारू भी उस मांही।

93. आत्मा जागृत, स्वप्न एवं सुषुप्त तीनों अवस्थाओं से ऊपर है।

94. जगत से गूंगे, अन्धे, बहरे हो जाओ।

95. अतिइन्द्रिय आनन्द में रहता है ज्ञानी।

96. ब्रह्मकार वृति।

97. गुण, अवगुण, आत्मा में नहीं है, आत्मा गुणातीत है।

98. भोगने से चिन्तन खराब है, चिन्तन जायेगा ज्ञान से।

99. आम में कीड़ा देखने से कोई आम नहीं खायेगा, ज्ञान के बाद जगत मिथ्या लगेगा।

100. नानक नाम जपे एक बार।

101. थोड़ा (अधूरा) ज्ञान जहर है।

102. बछड़ा हो कर ज्ञान लो, बालक ही मालिक है।

103. भुलाओ और माफी देओ।

104. मनुष्य प्लान बनाता है भगवान बिगाड़ता है।

105. आप सत् किये सब सत्।

106. हर कर्म की सजा है माफी नहीं।

107. जब तक तुम सबको अपना नहीं समझोगे तब तक सबको जान नहीं सकते।

108. सारी दुनिया भगवान से भरी पड़ी है।

109. निराकार साकार रूप धरकर आया है जग में, एक से अनेक भया।

110. मुसीबतें आ नहीं सकेगी। जब तक तुम उन्हें बुलाओगे नहीं।

111. खोटे कर्म या खोटे ख्याल करोगे तो तकलीफें अवश्य आयेंगी।

112. शरीर घोड़ा मैं घुड़सवार हूँ शरीर मोटर, मैं ड्राइवर हूँ।

113. चाहे कुछ करो या न करो पर भगवान से राजी रहो।

114. हजार बन्दगी से अच्छा है रजा में राजी रहना।

115. सो साहिब चिन्ता करे, जिस उपाया जंग।

116. सत्संग की एक घड़ी हजार साल की तपस्या से अधिक है।

117. पुरुषार्थ से प्रारब्ध को जीता जा सकता है।

118. गुरु के पास जाओ तो खाली होकर जाओ।

119. साफ दिन बनो पर होशियार नहीं।

120. सरल और भोले हो जाओ।

121. भोले भाव मिले रघुराई।

122. चतुर्भुज को चुतराई से नहीं पा सकते।

123. चाहिए को छोड़ दो तो सारा जग तुम्हें जपेगा।

124. ख्यालों से खाली, जन्म रहित, मरण रहित, द्वेत रहित, भेद रहित।

125. देश को नहीं मानवता को प्यार करो।

126. तुम बिन कौड़ी बादशाह है।

127. शानदान दान वह है जो माँगने वाले को फिर न माँगना पड़े।

128. सतोगुणी ज्ञान सर्व में पेखे भगवान।

129. रजो गुणी ज्ञान जुदा जुदा, कम ज्यादा भगवान देखना।

130. तमोगुणी किसी एक व्यक्ति विशेष में भगवान देखना।

131. क्रोधी को नहीं, पर क्रोध को धिक्कारो।

132. धनवान का धन समुद्र के खारे पानी के समान है जिससे प्यास नहीं बुझेगी।

133. सतगुरु सिख की आत्मा, सिख सतगुरु की देह।
लखना चाहे अलख को, तो उसी में लखले।

134. ऐसा तो होता ही है सब गुजर जाता है कोई हालत ठहरती नहीं।

135. कर्म अनेक हैं जैसे प्रारब्ध कर्म, बद कर्म, सत् कर्म, क्रिया मान कर्म, संचित कर्म।

136. ज्ञानी महाबली, महाभोला, महात्यागी है।

137. शरीर की कीमत करो, कितने करोड़ रुपये का है।

138. जैसी प्रीत हराम में वैसी हरि में होय।

139. माया काया बादल छाया, सुख मांगे दुख आगे आया।

140. मृगतृष्णा का जल समझने पर पानी भरने नहीं जायेगा।

141. माया को सच समझने से ही माया की इच्छा होगी।

142. जगत–सपना, नाटक, फुरना, ख्याल कहानी है।

143. ज्ञानी स्वेच्छा से नहीं पर इच्छा से चलता है।

144. तेरा की ?

145. त्यागी, वैरागी सबको माया ने मस्त कर दिया है उस पर विरला कोई बड़भागी गुरुमुख बच पाता है कुछ भी याद नहीं रहता। जिसने जाग कर अपना आप देखा है, पहचाना है।

146. नींद में सोये बच्चे की तरह ज्ञानी का कर्म है।

147. Gyan is caught not taught.

Part 2

Divine Dada's spiritual diary

(Hindi Translation)

Teachings of Divine Dada

- यह झूठा विश्वास है कि मैं शरीर हूँ ये ही नरक है। इस देह ध्यास को नष्ट करना ही आत्मा को चमकाना है क्योंकि वही सच्ची आत्मिक दीपावली है।
- **Worship the Almighty with Sarve Atama Bhavana. This is the greatest and most glorious thing that can ever be done by any one time.** भगवान की सच्ची पूजा प्रत्येक में आत्म भाव रखना और देखना ही है। बड़े में बड़ी और शानदार बात यह है कि ये पूजा कोई भी किसी वक्त कर सकता है क्योंकि भगवान सर्वत्र व्याप्त हैं।
- भगवान को कोई नहीं जान सकता लेकिन उसकी सेवा करो जिससे भगवान स्वयं प्रकट हुआ है। सेवा भाव एवं सेवा करने से भगवान मिलेगा यह सत्य है। ये भी सत्य है वि. जिसको भगवान प्राप्ति की प्यास है उसको भगवान अवश्य मिलते हैं परन्तु जिसको प्यास नहीं है उस पर भगवान कृपा नहीं बरसाते हैं। पार ब्रह्म की जिस मन भूख तिसको कदै न लागे दुख।
- खोजो सभी चीजों को त्याग कर केवल मुझे ढूँढो मेरे को तब देखेगा जब दूसरा कुछ भी नहीं देखेगा। मन कल्पित और झूठी व्यर्थ की कल्पनाओं द्वारा दुखी हुआ है।
- सर्वत्र अपने आपको देखना ही ज्ञान है। सबमें अपना आप देखकर प्रेम करना ही भक्ति है और अपने आप जानकर दूसरों की सेवा करना निष्काम कर्म है।

- When a man hurts you and you also turn back to hurt him that would not cure the first misery, it only would create in the world more wickedness. जब कोई आपको तकलीफ पहुँचाता है और तुम भी उसको उसी प्रकार वापसी में तकलीफ पहुँचाते हो, इससे तुम्हारे दुख का नाश नहीं होता अपितु इससे एक और खराबी को जन्म मिलता है।
- You must become a block of stone. Nothing can effect you. Abuses, mockery, ridicules, insults etc, can not have any influence on you. तुम पत्थर की तरह सख्त दिल बन जाओ ताकि तुम्हारे मन में किसी प्रकार की विक्षेपता न आवे। गालियां, चिढ़ाना, मजाक का उड़ाना, सताना, बेइज्जती इत्यादि का तुम्हारे ऊपर किसी प्रकार का असर नहीं हो।
- अगर कोई तुम्हारा कोट लेता है उसको सहज रूप में अपनी टोपी भी दे दो। इससे तुम्हारी सहन शक्ति एवं आत्मिक शक्ति में वृद्धि होगी। इस प्रकार का व्यवहार तुम्हें परमात्मा के पद पर बैठा देगा और साथ ही साथ कोट लेने वाले अर्थात् बुराई करने वाले की प्रवृत्ति को भी बदल देगा।
- Goal of Vedanti is to obtain freedom, while living. वेदान्ती का इसी जीवन में मुक्ति प्राप्त करना ही प्रमुख उद्देश्य है।
- He who looses ego, shall find life जो मनुष्य अहंकार को गंवाता है वही जीवन की प्राप्ति करता है अर्थात् अहंकार गुम हो जाता है और सत्य प्राप्त होता है।
- You be still and your body will be active. तुम अपने को स्थिर करो अर्थात् एकाग्र करो। जितना अपने को एकाग्र

प्रेम, ममता और स्नेह को,
जब पिरोया एक ही धागे में,
वो सब मिला एक तुझमें,
वर्ष लग जाए जिसको पाने में,

तेरी ममता तेरा दुलार,
तुझसे पाया बस प्यार ही प्यार,
तुझसे मिलके आ जाता है,
हर चेहरे पर एक अनूठा निखार।

करोगे उतने ही तुमसे कार्य होंगे। मन की एकाग्रता से शरीर में सुस्ती और थकावट नहीं आयेगी।

- शान्ति आकाश का गुण है – कर्म धरती का। आत्मा में शान्ति है– शरीर में कर्म। दिमाग शांत है शून्य और धरती रूपी शरीर का धर्म है कर्म–कर्म शरीर से होता है– आत्मा शांत है। गुण कर्म बुद्धि से तू परे है तुम साक्षी दृष्टा हो तो तुम कर्म नहीं करते हो। एक भी ख्याल तुम्हारे दिमाग में नहीं होना चाहिये। तुम ओउम में रहो शान्ति में रहो। जो पिण्डे सो ब्रह्माण्डे आत्मा यहां भी है वहां भी है। अन्दर बाहर जहां-तहां है।

- Everyone wants to be teacher, every beggar wants to get million dollars both are ridiculous. प्रत्येक व्यक्ति गुरु बनना चाहता है और प्रत्येक भिखारी करोड़पति। दोनों की स्थिति हास्यास्पद है। अपने आपका मास्टर बनो, दूसरे का नहीं।

- With desire of God, Selfishness has also vanished. Now I realize at last that beautiful and inspirng truth is love. Love and to be loved are one. भगवान की इच्छा रखने से सब स्वार्थ खत्म हो जाते हैं। अब मैंने अनुभव किया है कि प्रेम ही सुन्दर और प्रेरणादायक है– प्रेम प्रेमी और प्रियतम (भक्त और भगवान और भक्ति) एक ही हो गये। प्रेम रखने में एकता हो गयी है।

- Speak only when you are heard with heart. बात तभी करो जब तुम्हारी बात सुनी जाये अर्थात् तुम्हारी बात को मनमना भाव से सुने।

- Guru is the only living God on earth. भगवान इस धरती पर गुरु बनकर साकार रूप में आया है।
- Knowledge coupled with renunciation is illumination, Renunciation is the essence knowledge within. ज्ञान के साथ वैराग्य जरूरी है। वैराग्य के साथ ज्ञान होने से जीवन में चमक आती है। ज्ञान से अध्यात्मिक शक्ति बढ़ती है। वैराग्य ही ज्ञान की नींव है।
- Ego is the root of all troubles. Let the ego-go-gone all the troubles. सब कष्टों का मूल कारण अहंकार है। अहंकार के जाते ही सब कष्ट स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं।
- First let us be God, then help others to be God be and make let this be our motto. पहले स्वयं भगवान बनें फिर दूसरों को भी भगवान समझने में मदद करे। बनो बनाओ देख दिखावे। यही हमारा लक्ष्य होना चाहिए सो सिमरै जिस आप सिमरायै।
- I am his, I am thou, I am thee, I am thou, I am one , am God. मैं उसका हूँ मैं तुम्हारा हूँ। मैं वो हूँ मैं ही तुम हूँ तुम और मैं एक हैं। मैं भगवान हूँ।
- Do not fear defeat, fear is an illusion. डर एक धोखा है। हार से मत डरो। हार के बाद ही जीत है।
- शांति और अत्यन्त शांति का साम्राज्य सभी नक्षत्रों (ग्रहों) से ऊपर है और मृत्यु के साम्राज्य से भी अति गहरा है। यह ही सबसे बड़ा है और सब इसके सामने तुच्छ है।
- Guru awakens the divine potentialities of the disciple. गुरु ही अपने शिष्य के अन्तर्निहित आत्मिक शक्तियों को जागृत करता है।

- ❐ Intellect is a bondage. Faith is the liberator. होशियारी बंधन है जबकि विश्वास मुक्तिदायक है।
- ❐ Throw a lucky man into the sea and he comes out wity a fish in his mouth. भाग्यवान व्यक्ति को संसार रूपी गहरे समुद्र में ढकेल दो, वह वहां पर भी किसी न किसी को अपना जैसा बना कर आता है। अर्थात् जो भगवान की राह पर चलता है वह बहुत भाग्यशाली है। वह कठिनाइयों से भी शिक्षा लेकर आता है।
- ❐ Guru points out unity in diversity. गुरु अनेकता में एकता की ओर इशारा करता है। संसार रूपी अनेकता को सभी देखते हैं लेकिन एकता रूपी आवश्यक तत्व (आत्मा) को बिरले ही देखते हैं और अनुभव करते हैं।
- ❐ Man's heart hurt with grief awakens the super consciousness within. दुखों से दुखी दिल ईश्वर के रास्ते पर शीघ्र ही चल देता है।
- ❐ A man who makes his life hell, goes to hell. जो मनुष्य अपने जीवन को नरक बनाता है, वही नरक में जाता है।
- ❐ Like a boat only one who is not egoist, crosses the worldly ocean. संसार रूपी समुद्र को वही सुगमता से पार कर लेगा जिसमें अहंकार नहीं है।
- ❐ आत्मज्ञान (स्वयं को जानने) को वही जान सकता है जो सांसारिक कर्म से अलग होते हुए वैराग्य में रहता है।
- ❐ Beauty lies is deeds not in forms. मनुष्य की सुन्दरता उसके उच्च कर्मों से होती है न कि उसके रूप से।
- ❐ चिन्तायें मनुष्य की होशियारी को गुम करती हैं और विक्षिप्त बनाती हैं। जिससे उसकी भौतिक आध्यात्मिक एवम् आर्थिक रूप से हानि होती है।

- Wealth needs protection, knowledge provides Protection. धन को सुरक्षा की आवश्यंकता है लेकिन ज्ञान आपकी रक्षा करता है।
- Happiness springs from awarness. आत्म जागृति के द्वारा ही आत्मिक आनन्द प्राप्त होता है।
- We say God is good but goodness itself is God. अच्छाई स्वयं ही परमात्मा है।
- ब्रह्मज्ञानी अमर जीवन का संदेश लेकर आता है और शरीर छोड़ता है तो भी हमारे लिये अपना जीवन, अपना आदर्श छोड़ जाता है।
- भगवान इस संसार में गृहस्थ रूप में आता है अतः गृहस्थ को छोड़कर संन्यास में नहीं जाना चाहिए।
- Man should not live by bread alone but by every word that proceeds out of the mouth of Guru. भोजन मनुष्य को जीवन नहीं देता अपितु गुरु मुख से जो वाणी निकलती है वह ही उसका जीवन है।
- He, who says I know Brahma, knows him not. वह ब्रह्म को नहीं जानता जो यह कहता है कि मैं ब्रह्म को जानता हूँ क्योंकि जानना दूसरों को होता है स्वयं को नहीं।
- Only have faith, Patience & Courage. Surely you will succeed for God is with you. केवल विश्वास, धीरज एवं साहस गुरु के पास पहुँचने का रास्ता है। ये भी विश्वास रखो भगवान तुम्हारे साथ है।
- In Private life forgiveness is virtue but not with the king, He must punish the guilty. व्यक्तिगत जीवन में क्षमा उत्तम गुण है पर (भगवान) राजा को तो अपराधी

को तो सजा देनी ही होगी अन्यथा व्यवस्था बिगड़ जायेगी। भगवान अकर्ता है समर्थ है, पर तुम्हारा मन चलायमान है जिससे दूसरे का अवगुण तुम्हारे मन में आ जायेगा। गुरु (भगवान) किसी को सजा देता है तो वह भूल जाता है क्योंकि वह सबसे प्रेम रखता है।

- ❐ **Do not retaliate. The joy of revenge is only for a day but the glory of forgiving remains forever.** सताने वाले से बदला मत लो क्योंकि बदला लेने की खुशी एक ही दिन के लिये होती है लेकिन क्षमा करने की खुशी सदैव रहती है।
- ❐ **Encouraging possitive, cheerful, hopeful and lovin attitute of Guru, towards you, is needed. You must have form a receiving attitude.** ऐसे भाव की ओर ऐसे व्यक्ति की (गुरु) आवश्यकता है जो तुम्हें ऊपर की ओर उठाये और हमेशा भलाई के लिये ही सोचे। आशावादी और प्रसन्नचित्त रहो और तुम सदैव उस परम् कृपा को ग्रहण करने का स्वभाव बनाओ।
- ❐ **Pains and sufferings are necessary for the development of character specially in its higher phases.** चरित्र के उत्थान के लिये दुख और तकलीफ अत्यन्त आवश्यक है विशेष रूप से इस महान उत्थान के लिये। दुनिया के महापुरुषों एवं अवतारों ने भी जीवन में तकलीफें सही हैं। तकलीफें हमारे अन्दर दया, करुणा, त्याग, नम्रता आदि की शक्ति उत्पन्न करती हैं। सभी अवतारों ने तकलीफें बर्दाश्त की हैं।
- ❐ Ego does not exist. अहंकार है ही नहीं।

- Ego is an illusion caused by ignorance which can be removed by self inquiring what I am ? अहंकार भ्रम है। यह अज्ञानता की उपज है आत्म विश्लेषण करने से अहंकार चला जाता है।
- When I and mine are removed man is no longer harmful. जब मनुष्य से 'मैं' और 'मेरे' का भाव निकल जाता है तो वह हानि रहित हो जाता है।
- Power is gained but peace is lost. लौकिक शक्तियाँ प्राप्त होंगी पर उनसे मन की शांति भंग हो जायेगी।
- How to achieve is your question ? But nothing is to be achieved. तुम्हारा प्रश्न है ईश्वर की प्राप्ति कैसे हो ? किन्तु वह अप्राप्त नहीं है। तुम पहले से ही मुक्त हो।
- Man of great powers and man of no means are not happier than you. Money can not buy bliss. धनवान एवं गरीब कोई भी सुखी नहीं है। धन आनन्द एवं शान्ति को नहीं खरीद सकता अतः मनुष्य को कामिनी, कंचन एवं कीर्ति में नहीं फँसना है।
- Are you upset when others show mistake of your Guru. जब कोई तुम्हारे गुरु के अवगुण दिखाता है तब क्या तुम उद्वेलित होते हो ?
- Except you be as little child you can not enter the kingdom of heaven. अबोध बालक बने बिना तुम भगवान के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते।
- There is no neighbour to love and no more any enemy to Everything I. We have come to serve him who is everything. God is hidden treasure. मैं

आत्मा हूँ तो कोई भी मेरे लिये शत्रु अथवा मित्र नहीं है। हम भगवान की सेवा करने के लिये आये हैं जो सर्वव्यापक है भगवान का सबके हृदय में समावेश है तुम निर्धन के लिये धन की शिक्षा देते हो जबकि हम सबको अच्छाई और बुराई से ऊपर उठने के लिए ज्ञान देते हैं।

- ❐ **Daily prayer of Abu Baker is, "Forgive me as thou are forgiver thou are Merciful" But we pray "Punish me for every fault".** अबु बाकर की नित्य की प्रार्थना है 'हे दयालु क्षमाकर्ता मुझे क्षमा करना। लेकिन हम यह प्रार्थना करते हैं मुझे प्रत्येक गुनाह (कसूर) की सजा दो।
- ❐ **Impartial Justice is the qurest mercy of God.** पक्षपात रहित (इंसाफ) न्याय भगवान की सच्ची दया है।
- ❐ **To be humble and to say humble makes much difference.** नम्र होना और नम्र होने के लिये कहने में अन्तर है। नम्रता का वचन बोलना ही पर्याप्त नहीं है अपितु नम्र होना भी आवश्यक है।
- ❐ **"if you do not give charity I will curse you"** अच्छे साधु-सन्त ये नहीं कहते कि अगर तुम मुझे दान नहीं दोगे तो तुम्हें श्राप दूँगा।
- ❐ जब मैं शरीर से असंग होकर ईश्वर के साथ होता हूँ तो सुखी (भरपूर) होता हूँ।
- ❐ जिस ज्ञान से जिज्ञासु अपने को नहीं जान सकता तो वह ज्ञान अन्तिम और पूर्ण नहीं हो सकता।
- ❐ **Make your own mind faultless and you will find the number of sinners are reduced.** अपने को विकास रहित कर लो तो संसार में पापियों की संख्या भी घट जायेगी।

Human religious begin with fear but perfect love casteth out fear. Learning & reasoning. Do nothing but garace of God. मनुष्य का धर्म डर के साथ शुरू होता है पूर्ण प्रेम द्वारा यह डर निकल जाता है। तर्क के द्वारा कुछ भी प्राप्त नहीं होता किन्तु गुरु की कृपा से प्राप्ति होती है।

- When you salute others they will surely salute you when somebody salute you then you salute that is not greatness. किसी अन्य के नमस्कार करने के पूर्व आप नमस्कार करें यह नम्रता की पहचान है। प्रेम से सब कुछ प्राप्त हो जाता है।
- नित्य के आत्म विश्लेषण के द्वारा चिन्ता रहित एवं भय मुक्त होते हैं और सुखी रहते हैं। धन और भोग के द्वारा शान्ति प्राप्त नहीं होती, अपितु ये इच्छायें, चिन्ताओं और परेशानियों में वृद्धि करती है।
- Love all alike, like loving God. सबको प्रेम करना भगवान को प्रेम करने के समान है।
- When you are slave of nature you prefer to die because you are not free. जब तुम प्रकृति के दास हो तो मर जाने की इच्छा करना ही अधिक बेहतर होगा। तुम आज़ाद नहीं हो अर्थात् मन इन्द्रियों के गुलाम हो।
- Self is body is Atma and in universe Parmatma.
- Awareness of fault makes one faultless. दोष की जानकारी ही दोष रहित बनाती है।
- Little knowledge is dangerous. थोड़ा ज्ञान खतरनाक है यह आदमी को अहंकारी और खुश्क बनाता है। अहंकार मनुष्य को कुएँ में डालने वाला है।

- To the deluded mind in the dark even the post appers a ghost. रात्रि में खम्भा भूत की भांति प्रतीत होता है। डर का भूत मन में है बाहर नहीं। संसार मन की कल्पना से है। सत्य नहीं।
- जीवन का अन्त सपने पूरे करने में ही हो जाता है, कुछ भी बनना चाहेंगे तो उसी बनने की कोशिश में जीवन गंवा देंगे। कुछ बनने में ही हमारा अपना आप (आत्मा का) गायब हो जायेगा।
- Ambition to do something or to be something is both ignorance. कुछ करने की अथवा कुछ होने की इच्छा दोनों ही अज्ञान है।
- Love and not lust is the essence of life. प्रेम ही जीवन का तत्व है आसक्ति नहीं।
- Life is bridge to cross on and not a terminous to sleep on. जीवन संसार रूपी सागर को पार करने के लिए एक पुल है न कि विश्राम के लिए अंतिम पड़ाव।
- The sages footsteps are path to knowledge. संतों के पदचिन्ह ही ज्ञान का रास्ता है।
- Awareness outside and witnessing within are the two ends of same dignity. सजगता से बाहर देखना या साक्षी होकर अन्दर निहारना दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू हैं।
- Wound caused by sword's injury bleed but the poison of enimity causes the heart and the blood to burn. तलवार के घाव से खून बहता है लेकिन बैर के जहर से दिल जलता है और खून भी जलता है।

- Worldly knowledge is like zero unless the knowledge of one absolute is added to it. ''इक बुझे सदा पाक।" सांसारिक ज्ञान शून्य के समान है जब तक उसमें आत्मिक ज्ञान का योग नहीं होता है।
- Where there is ego. There is death. जहां अहंकार है वहां मृत्यु है।
- With a mind centralized, the high object is realized. एकाग्रता से बड़े से बड़े उद्देश्य की प्राप्ति हो जाती है।
- Balancing mind through wordly pleasure is like balancing the scale with jumping frogs. सांसारिक सुखों से दिमाग को संतुलित करने की कोशिश उसी प्रकार है जिस प्रकार फुदकते हुए मेंढक के द्वारा तराजू का संतुलित करना।
- The flute sings to the tune of its master because it has no sound of its own. It is hollow and deboid of ego. बाँसुरी अपने वादक की धुन (इच्छा) के अनुसार बजती है क्योंकि वह भीतर से खाली है अहंकार रहित है इसमें इसका अपना कुछ भी नहीं है (खोखली है)। इसमें अहंकार नहीं है। अर्थात् तुम खाली हो जाओ।
- Fire burns the lifeless wood, anxiety burns the living manhood. अग्नि सूखी लकड़ी को जलाती है लेकिन चिन्ताएं जीवित मनुष्य को ही जला देती हैं।
- In memory of the past, half the life is lost. To live in the present is the greatest art. मनुष्य अपने जीवन का आधा भाग भूतकाल की घटनाओं की स्मृति में गंवा देता है। वर्तमान में रहने की कला सबसे बड़ी है। जो अपने इतिहास में जाता है वह अपने रहस्य को भूल जाता है।

- मनुष्य का वास्तविक स्वरूप उसके अहंकार के कारण ढका रहता है उसकी पाश्विक वृत्तियां जैसे राग, द्वेष, घृणा, भय, लोभ इत्यादि उसको कमजोर कर देते हैं। ये उसको अपूर्ण और दुखी बनाते हैं। अगर मनुष्य इसको समझ ले तो वह स्वयं को जान सकता है।
- When you are sincerely trying to benefit others that is Nishkam but when you are trying to benefit yourself, is Sakam. जब तुम दूसरों की भलाई का प्रयास करते हो वह ही निष्काम सेवा है। लेकिन जब तुम अपनी भलाई का प्रयास करते हो तो वह सकाम कर्म है।
- One king may rule over the whole world yet he can not attain peace, unless he knows the self . The root of all sufferings is cut off by the vision of self. किसी को सम्पूर्ण सृष्टि पर शासन करने पर भी शांति प्राप्त नहीं हो सकती जब तक आत्म बोध न हो। तत्व को जानने से सभी दुःखों की समाप्ति हो जाती है।
- All works of merit do not have one sixteen of the value of love. प्रशंसा के सभी कार्य प्रेम के मूल्य में 1/16 भी नहीं है।
- The man who gives pleasure is as charitable as one who relieves sufferings. जो मनुष्य दूसरों को सुख देता है वह उतना ही दानशील है जितना वह जो दूसरों को धन देकर उसकी तकलीफें कम करता है।
- All religions are the ways of God and higher fulfillment is to see Him in all in Him. सब धर्म एक ईश्वर की ओर ले जाने के साधन हैं।

- Any amount of wealth cannot bestow happiness to its master. धन की कोई भी मात्रा धनी को सुखी नहीं कर सकती है। माया अपने मालिक को खुशी नहीं देती।
- The path to perfection is a simple one but only the perfect one can show it. पूर्णता एवं सत्य का मार्ग बहुत सुगम है। आवश्यकता है पूर्ण ज्ञानी की जो मंजिल तक पहुंचा सके।
- To love is to die into something more perfect. सच्चे प्रेम का मतलब है उस महान में अपने को विलीन कर देना।
- I take care bring attainment of that what they have and assure to provide what they need. योग क्षेम का भार मैं ही संभालता हूँ, योग जो नहीं है उसकी प्राप्ति है क्षेम जो प्राप्त है उसकी रक्षा करना।
- Real education is that which enable one to stand on one's own feet. वास्तविक शिक्षा वही है जो आपको अपने पैरों पर खड़ा करती है। जो आत्मनिर्भर बनाये।
- I have come to the conclusion that if had to serve the people I must discard all wealth and posessions. मैं इस निर्णय पर पहुंचा हूँ कि अगर मुझे मानव सेवा करनी है तो सम्पूर्ण धन और जो कुछ भी मेरे पास है उसको त्यागना होगा।

❖ हरिओम ❖

आराधना में उलझन –

मन (Mind)

- ❒ अपने मन को केन्द्रित करो।
- ❒ मन की गुलामी को स्वीकार मत करो।
- ❒ अपने विचारों की निगरानी करो कि वह कहां-कहां और क्यों जाते हैं। बुरे विचारों के स्थान पर उत्तम विचार रखो।
- ❒ अच्छा संकल्प रखने से विकल्प चले जायेंगे।
- ❒ मन अथवा विचारों से आत्म प्राप्ति नहीं होती, विचार आत्मा को जान नहीं सकते।
- ❒ आत्मा मन, बुद्धि को शांति देने वाला है।
- ❒ मन है ही नहीं।
- ❒ See at the ghost and ghost will disappear.
- ❒ मन Imposter है उसकी स्वतंत्र सत्ता नहीं है।
- ❒ मन को ईश्वर में लगाना है।
- ❒ व्यस्त रहने से मन के विचार शांत रहते हैं।
- ❒ मन अर्थात् भारीपन।
- ❒ संकल्प विकल्प का त्याग ही अमन हो जाना है।
- ❒ गुरु मन का दुश्मन है और मन गुरु का दुश्मन। आखिर जीत गुरु की होती है।

- यदि आपके विचार आपको दुखी न करें तो ईश्वर भी आपको दुखी नहीं कर सकता।
- अपने मन को वशीभूत करने की चिन्ता मत करो ये ईश्वरीय प्रेम के समक्ष स्वयं झुक जाता है।
- मन को मोड़ो प्रेम से।
- **Without Me the life is useless.**
- **Without Me the mind is mindless.**
- **Our misery is due to the mind.**
- **Our sufferings are due to the mind.**
- **Change the mind (thinking) and the man is changed. Change the man and the world is changed.**
- जब मनुष्य का मन केन्द्रित हो जाता है तब महानतम् लक्ष्य की प्राप्ति हो जाती है।
- विषय प्रवृत्ति में रहकर मन को केन्द्रित करने की कोशिश करना ऐसे ही है जैसे कि तराजू के पलड़े में मेढ़क को तौलना।
- बाँसुरी जब खाली है तभी बजती है। बाँसुरी का अपना कोई स्वर नहीं है इसीलिए उसका स्वर मधुर है। अपने को खाली करो।

❖ हरिओम ❖

Bliss (आनन्द)

- स्वास्थ्य, युवावस्था एवम् अमीरी से भी अधिक महत्व का स्थान है मोक्ष का।
- ब्रह्म आनन्द के समक्ष दुनिया के सुखों का आनन्द क्षणिक एवं सागर की एक बूंद के समान है।
- ईर्ष्या एवम् मुझमें नहीं है क्योंकि मैं सभी को प्रेम करता हूँ। यही ब्रह्म आनन्द की प्राप्ति का मार्ग है।
- जिस व्यक्ति में आनन्द की खोज अथवा पिपासा होती है वह आनन्द की प्राप्ति कर लेता है।
- विषय आनन्द बाहरी पदार्थों से आता है, आत्मानन्द भीतर से, आनन्द की अनुभूति तब होती है जब व्यक्ति सांसारिक विषयों का सुख लेना छोड़ देता है।
- विषय सुख एवं ब्रह्मानन्द दोनों को साथ पाने की कल्पना ऐसी है जैसे गन्ना एवं रोटी एक साथ खाने का प्रयास करना।
- आनन्द भीतर से खोया, भीतर से ही प्राप्त भी होगा।
- यदि आपका मन संसार में आसक्त है तो आनन्द की प्राप्ति कदापि नहीं होगी। आसक्ति का त्याग ही आनन्द की प्राप्ति कराता है।
- थिर मन ब्रह्म, अथिर मन संसार। मन की शांति ही आनन्द है।
- मन बेचे सद्गुरु के पास। मन को समर्पित करना, मन को शांत करना है।.....

MONEY IS USELESS

(ईश्वर की प्राप्ति धन से नहीं हो सकती)

Money can not buy bliss. i.e. peace of mind.

- ❐ धन से आनन्द नहीं खरीदा जा सकता। धन से मन की शांति नहीं खरीदी जा सकती।
- ❐ सम्पत्ति अपने आप में एक बोझ है। ये सभी चिन्ताओं का कारण है। सम्पदा डर को उत्पन्न करती है।
- ❐ धन सम्पति ईश्वर प्राप्ति के रास्ते को बन्द कर देती है।
- ❐ **Christ has said, "unless one renounces everything he passess, he can not be my disciple."** क्राईस्ट ने कहा है तुम्हारे पास जो कुछ भी अपना है, जब तक तुम उसका त्याग नहीं कर दोगे, तुम मेरे शिष्य बनने के योग्य नहीं बन सकते।
- ❐ शक्ति और धन दोनों ही मनुष्य को निम्नता की ओर ले जाते हैं।
- ❐ धन और शक्ति तुम्हें जेल में डाल सके हैं। ये बन्धन का हेतु है जबकि प्रेम तुम्हें आजाद कर देता है। ये बांधता नहीं है।
- ❐ ईश्वर असीम है उस तक पहुँचने के लिये सांसारिक धन से खरीदे हुए हवाई जहाज–रेलगाड़ियां व्यर्थ हैं।
- ❐ ईश्वर तक पहुंचने के लिए भीतर का प्रेम चाहिये और प्रेम धन से खरीदा नहीं जा सकता।
- ❐ अधिक धन मनुष्य में तामसिक प्रवृत्तियों को जन्म देता है।
- ❐ बुराइयों की जड़ है धन के प्रति प्रेम।
- ❐ धन आवश्यक है सांसारिक उपयोग के लिये, किन्तु धन से अधिक आवश्यकता है स्वास्थ्य एवं शान्ति की।
- ❐ क्या जीवन का खाने, कमाने एवम् सोने के अतिरिक्त कोई लक्ष्य नहीं है ? **Is there no other higher purpose of life except to earn, eat and sleep ?**

- ❐ अमेरिका संसार का सबसे अधिक समृद्धशाली देश है किन्तु सबसे अधिक हृदयाघात की बीमारी, दिमागी असन्तुलन का रोग वहीं पाया जाता है। अमेरिका जैसे धनवान राष्ट्र में आत्महत्या करने वालों की संख्या अन्य राष्ट्रों की अपेक्षाकृत अधिक है। इससे ये सिद्ध हो जाता है कि भौतिक सम्पत्ति मनुष्य को सुख दे सकती है ना कि शांति।
- ❐ निर्धन व्यक्ति को रोटी की चिन्ता है। धनवान को अधिक धन अर्जित करने की चिन्ता है।
- ❐ अधिक धन बीमारियों को जन्म देता है।
- ❐ **Worldly richness is polished poverty.**
- ❐ **Have you taken a vow of non possession.**
- ❐ धन से चश्मा मिलेंगा, दृष्टि नहीं।
- ❐ धन से आरामदायक बिस्तर मिलेगा किन्तु नींद नहीं।
- ❐ धन आध्यात्मिक मार्ग पर सहायता नहीं करता इसलिये व्यर्थ है। सम्पूर्ण सम्पदा भी आन्नद की तुलना में तुच्छ है।
- ❐ संसार में भी धन का महत्व तब है जब उसका उपयोग किया जाये।
- ❐ दादा जी कहते हैं– दुनियां में हो दौलत, दौलत के साथ हो दिल, दिल के साथ हो दिमाग, तो बन जाये ऐसा बाग कि दुनिया करे तुमको याद।
- ❐ धन से सम्पत्ति खरीदी जा सकती है शांति नहीं। आप धन को कीमती समझते हैं किन्तु, हवा, पानी, सूरज की रोशनी जैसी कई बहुमूल्य चीजें धन से नहीं खरीदी जा सकतीं। धन से दवायें खरीदी जा सकती हैं स्वास्थ्य नहीं।
- ❐ ईश्वरीय प्रेम में डूब जाना यही आध्यात्मिक संपत्ति है।
- ❐ धन के द्वारा ईश्वर पथ की प्राप्ति असम्भव है।

- ❐ समय धन से अधिक कीमती है। बीता समय धन देकर भी वापिस नहीं खरीदा जा सकता।
- ❐ सच्चा धन वह है जो बांटने से बढ़ता है।
- ❐ सांसारिक धन का अधिक संग्रह मत करो। यदि धन की अधिकता रहेगी तो तुंम्हारा मस्तिष्क एवम् विचार धन रूपी खजाने में ही भटकता रहेगा, ईश्वर प्राप्ति न होगी।
- ❐ धन पर अपना स्वामित्व बनाये रखो, उसके दास मत बनो।
- ❐ **Money is a good servant but a dengerous master**
- ❐ **Live rich and die poor.**
- ❐ **One who possesses, is possessed and one who is contended is liberated.**
- ❐ असन्तुष्ट व्यक्ति धन संग्रह करता है।
- ❐ अज्ञानी व्यक्ति धन को अधिक महत्व देता है।
- ❐ एक नौकर दो मालिकों को एक ही समय पर खुश नहीं कर सकता। जो सांसारिक वस्तुओं से प्रेम करते हैं वे ईश्वर से प्रेम नहीं कर सकते। धन से सुख खरीदा जा सकता है शांति नहीं।

❖हरिओम❖

समाधि पर समाधि लाख तू करता रहे।
जब तक रहेगी वासना बंधन न तेरा जायेगा।

चिन्तन करे है जब तक ब्रह्म न जाना जाये है।
चिन्तन रहित ब्रह्म, सो चिन्तन रहित ही पाये है।

आत्मा सुधा के पान से विक्षेप सब छुट जाये है।
विक्षेप मिटते ही तुरन्त निज आत्म में डट जाये है।

अच्छे विचार (Good Thoughts)

- ❐ प्राप्ति की इच्छा वाला हैवान है, देने की इच्छा वाला देवता या इंसान है। यदि मैं किसी से नफरत करना भी चाहूँ तो भी नहीं कर पाता क्योंकि मैं सभी को प्रेम देना चाहता हूँ।
- ❐ उस शत्रु से मत डरो, जो तुमसे शत्रुता करता है वरन् उस मित्र से डरने की जरूरत है जो तुम्हारी चापलूसी करता है, चापलूसी मीठा जहर है।
- ❐ एक व्यक्ति जिसका चेहरा मुस्कुराता नहीं, कोई भी अच्छा कार्य नहीं कर सकता।
- ❐ जीवन में न कोई बुरा है न कोई अच्छा। हर व्यक्ति ईश्वर की प्रतिमूर्ति है।
- ❐ भौतिक पदार्थ आखिरकार दुख दे जाते हैं।
- ❐ क्या आप हार-जीत में समान हो चुके हैं ?
- ❐ क्या आप मान-अपमान में समान हो चुके हैं ?
- ❐ Are you unconcerned ? क्या आप असंग हो चुके हैं ?
- ❐ आग सूखी लकड़ी को जलाती है किन्तु चिन्ता जीवित व्यक्ति को जला देती है।
- ❐ भूतकाल की स्मृति में मनुष्य की आधी जिन्दगी समाप्त हो जाती है। भूत को भूलना जीने की सर्वोत्तम कला है।
- ❐ मनुष्य का असली स्वरूप उसके अहंकार से ढक गया है और इसी अहंकार के वशीभूत होकर वह काम-क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, मत्सर आदि विकारों का गुलाम हो गया। यदि वह इन सबसे ऊपर हो जाये तो आत्म साक्षात्कार कर अपने स्वरूप को उपलब्ध हो जायेगा।

- ❐ दौलत अर्थात् माया अपने मालिक को कभी खुश नहीं कर सकती।
- ❐ सब कुछ जानकर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि यदि मैं संसार की सेवा करना चाहता हूँ तो मुझे धन तथा ऐश्वर्य का मोह त्यागना होगा।
- ❐ यदि हमारा हृदय ईर्ष्या तथा द्वेष से खाली हो चुका है तब कोई भी वस्तु हमें हानि नहीं पहुँचा सकती।
- ❐ 'मैं' की मृत्य में ही प्रेम पनपता है।
- ❐ ज्ञानी व अज्ञानी के नाही कर्म भेद–दोनों की दूसरी भावना एक ने किया मोक्ष, एक ने पाया खेद। ज्ञानी व अज्ञानी के कर्म में नहीं भावना में अन्तर होता है।
- ❐ धोबी के पास कपड़ों का ढेर होता है किन्तु ये वस्त्र उसके अपने नहीं। उसी प्रकार शास्त्रविद् के पास शब्द हैं किन्तु अनुभव नहीं तो शब्द व्यर्थ है।
- ❐ मल, विक्षेप आवरण इन तीनों से ऊँचा उठना है।
- ❐ एक आँख चली जाये तो दूसरी आंख का शुक्रिया मानो।
- ❐ इच्छा (Wish) विष का काम करती है।
- ❐ गुरु कर्म क्षेत्र (शरीर) को धर्म क्षेत्र बना देता है।
- ❐ ऋद्धियां सिद्धियां संतों के गहने हैं, पहने अथवा नहीं उसकी मर्जी। वे चाहे इनका प्रयोग करें या न करें।

पहले दाता गुरु भया दे दे तन, मन, ज्ञान।
पीछे दाता शिष्य भया अरपे तन,मन, प्राण।।

- No thoroughfare but I enter every where.
- हे नाथ मैं तुमसे हूँ न कि तू मुझसे। सागर से लहर है, लहर से सागर नहीं। मैं गुरु से हूँ, गुरु मुझसे नहीं।
- भूला भी मैं, अभूल भी मैं।
- ज्ञान से तीन सिद्धियां मिल जाती हैं –
  1. संकल्प सिद्धि।
  2. वाणी सिद्धि।
  3. व्यवहार सिद्धि।
- गुरु संकल्प से, स्पर्श से, दृष्टि से, वाणी से, शिष्य का उद्धार करता है।
- भगवान को (Power of attorney) दे दो। जैसा भी करे।
- क्या तुम अपने प्रारब्ध को बदलना चाहोगे।
- तेरे से तेरा जैसा व्यक्ति ही बनेगा। अच्छे व्यक्ति की संगति में बुरा व्यक्ति भी बदल जाता है। संत के संग निन्दक भी तरे। लकड़ी की नाव के साथ लोहे की जंजीर भी तैरने लगती है।
- देह अध्यासी व्यक्ति से सदैव तीन फुट की दूरी पर बैठो।
- कंगालपने (कुछ न करने) से जंजालपन (कुछ करना) अच्छा है।
- ईश्वर रूपी प्रियतम का चेहरा देखते ही मेरा अहंकार चला गया। उसके बाद मैं अपने को ढूँढ न सका।
- मन उस असीम एवम् अनन्त को नहीं जान सकता। प्रेम से उसे जाना जा सकता है।

- ❐ सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के लिये प्रार्थना करना दीनता है। ईश्वर की प्रार्थना नहीं वरन् प्रशंसा करो क्योंकि वह प्रशंसा के योग्य है।
- ❐ प्रार्थना को स्वार्थ रहित होना चाहिए।
- ❐ हमारा लक्ष्य आनन्द की प्राप्ति होना चाहिए।
- ❐ सत्य सार्वभौम है। ईश्वर सर्वत्र है। किन्तु उसे बुद्धि से नहीं जाना जा सकता। ईश्वर अनुभूति का विषय है बहस का नहीं।
- ❐ अर्जुन युद्ध करना नहीं चाहता था किन्तु भगवान कृष्ण ने उससे युद्ध करवाया। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा युद्ध के लिए युद्ध करो, बिना फल की इच्छा के केवल धर्म स्थापना के लिये।
- ❐ दिव्य प्रेम हर युग, हर काल में मनुष्य को प्राप्त हो सकता है जरूरत है व्याकुलता की।
- ❐ सभी सासांरिक पदार्थ के प्रति अनासक्त होकर फकीरी की खरीद करो। मेरा कुछ नहीं है।
- ❐ सत्य को जानने के लिये तुम स्वयं सच्चे बनो।
- ❐ मैं काल्पनिक स्वर्ग की बात नहीं करना चाहता। मैं तुम्हें ऐसा बना देना चाहता हूँ जिससे तुम जहां बैठो, स्वर्ग की अनुभूति कर सको।
- ❐ ज्ञानी को 'पानी पर रेखा' के बराबर भी विक्षेप नहीं आता।
- ❐ इच्छा को रोको नहीं, वैराग्य से इच्छा उत्पन्न नहीं होगी।
- ❐ Be Still and know that you are Atma.
- ❐ गुरु बिना पैसे का वकील है।

- सभी प्रकार के विकार जैसे घृणा, मोह, मत्सर, द्वेष, ईर्ष्या जब आपके भीतर होते हैं तब वह आपको दुखी नहीं करते हैं वरन् जब आप इन्हें बाहर प्रकट करते हैं, अन्य को देते हैं तब ये आपके एवम् दूसरों के लिये दुख का कारण बन जाते हैं।
- सच्चा धर्म सभी धर्मों को अपनाना है न कि धिक्कारना।
- जब मेरे पास मेरा कुछ नहीं है तो चिन्ता किस बात की करूँ।
- विश्वास रखो, बहादुर बनो, दृढ़ चट्टान बन जाओ।
- तुम धन से सांसारिक विषयों को खरीद सकते हो किन्तु इस बात के लिए भी जागरूक रहना कि धन संग्रह में तुम इतने व्यस्त न हो जाओ कि उन चीजों को खो न दो जो धन से नहीं खरीदी जा सकतीं जैसे हवा, ज्ञान, जिन्दगी, स्वास्थ्य और नींद।
- आलोचना करना एक आम बात है हर एक कर सकता है किन्तु तुम आलोचना के स्थान पर अपना स्वयं का आदर्श प्रस्तुत करो।
- आचारण और आत्म संयम से उदार चित्तता एवं क्षमा करने के गुणों का विकास होता है।
- महान व्यक्ति की महानता इस बात से प्रकट हो जाती है कि वह अपनों से छोटों के साथ कैसा व्यवहार करता है।
- राजनीति में मनुष्य संवेदना शून्य हो जाता है अध्यात्म में वह संवेदनाओं से ऊपर उठ जाता है।
- जीवन का सामना करने के लिये मनुष्य में आत्म विश्वास एवं प्रभु विश्वास होना अत्यधिक आवश्यक है। प्रेम प्रत्येक हृदय की धड़कन है।

❖हरिओम❖

Faith विश्वास

- ❐ अपने हृदय में आप एक ही चीज को रख सकते हैं, सन्देह या विश्वास।
- ❐ We walk by faith and not by sight.
- ❐ Blessed are those that have yet not seen but have believed.
- ❐ Without faith work is dead.
- ❐ If you are not happy with your present condition, no other condition can make you happy. जो आज खुश नहीं वह कभी खुश नहीं रह सकता।
- ❐ Faith in God is not a blind belief. It is faith on yourselves. ईश्वर पर विश्वास अपने पर विश्वास है। ये अन्ध विश्वास नहीं वरन् जागरूकता है।
- ❐ When you look with the eye of trust, you will conquer even the worst. (आप विश्वास भरा दृष्टिकोण रखकर बुरे से बुरे व्यक्ति को भी जीत सकते हैं)।
- ❐ कोई भी मनुष्य विश्वास रखकर ही आगे आ सकता है। हम उन पर भी विश्वास करते हैं जिन्हें हमने आँखों से नहीं देखा है।
- ❐ चिड़ियां उड़ती हैं, मछलियां जल में तैरती हैं, क्योंकि उन्हें अपने पर विश्वास है। चिड़ियों को अपने पंखों पर विश्वास

है। जबकि मनुष्य उड़ नहीं सकता, तैर नहीं सकता। उसे सीखना पड़ता है।

- निरन्तर अभ्यास एवम् गुरु पर पूर्ण विश्वास अपने लक्ष्य की प्राप्ति कराता है।
- इतना विश्वास रखो कि यदि ईश्वर एक खिड़की बन्द करेगा तो कोई न कोई द्वार अवश्य खोलेगा।
- विश्वासी व्यक्ति चमत्कार देखता है। विश्वास करामातों की करामात है।
- विश्वास स्वयं में, विश्वास गुरु में।
- रचनात्मक कार्य, दृढ़ विश्वास एवम् ईश्वर से प्रेम इन तीनों की आवश्यकता है।
- विश्वासी की सदैव जीत होती है।
- स्त्रियां शान्त एवम् सहनशील होती हैं क्योंकि उनमें विश्वास की अधिकता होती है।
- गुरु अपने भक्त से कहते हैं ये तुम्हारा ही विश्वास है जिसमें तुमने मुझे पहचाना है।

❖ हरिओम ❖

मानसिक बीमारी के लक्षण (Depression)

दादा जी द्वारा बताये गये निम्न लक्षणों को पढ़कर व्यक्ति आसानी से ये जान सकता है वह स्वयं में मानसिक रोगी है अथवा नहीं।

1. अकेलापन पसन्द करना।
2. चेहरे पर हँसी का न आना।
3. अन्य व्यक्ति की बात न सुनना अथवा न मानना।
4. अपने हठ पर दृढ़ रहना।
5. भयग्रस्त रहना।
6. शंकित रहना– कहीं ऐसा न हो जाये आदि।
7. नींद का न आना।
8. एक बात की बार-बार पुनरावृत्ति करना।
9. बेहोशी, नर्वसनेस।
10. आत्महत्या के विचार बार-बार आना।
11. भ्रमित रहना, भविष्य की चिन्ता करना।
12. भोजन न खाना।

❖हरिओम❖

My Request

O ! Lord

Let thy rule over us,
Let thy love be our religion,
Let our brain shine with the light,
Let our heart smile with your heart,
Let our all be surrendered to thee,
In the rough ways of life,
Light houses are needed.

तुम्हारी इच्छा से हम चले,
तुम्हारा प्रेम ही धर्म हो,
तुम्हारे प्रकाश से हम उज्जवल हों,
हमारा हृदय तुम्हारे प्रेम से प्रफुल्लित हो,
हमारा सर्वस्व तुम्हें समर्पित हो,
जीवन के दुख पूर्ण मार्ग पर,
पथ प्रदर्शक स्तम्भ (गुरु) आवश्यक है।

To serve thee, is our strenght,
To follow, thee, gives us faith,
To be happy, gives us health,
To give and give, gives us wealth.
To earn bread, gives us work.
To attain thy grace, gives us grace,

Divine Dada.

Mental Hygiene

Morning Exercise

1. Smile all the while as you are being photographed.
2. Express thanks giving for two minutes, 15 times daily. This will give you tonic effect.
3. Remember how much is your whole body worth. When you won't give away you one eye for Rs. 20,000's even.
4. What benefit you have got from you Guru, remember it.
5. I am what is, you have made me.

सुबह का व्यायाम

1. सुबह उठते ही मुस्करायें – हर समय मुस्करायें जैसे ईश्वर आपका फोटो निकाल रहें हैं।
2. हर घण्टे में दो मिनट ईश्वर को धन्यवाद करो।
3. अपने शरीर की कीमत करो। यह अत्यधिक मूल्यवान है। 20,000 रु. लेकर भी तुम अपनी एक आँख न दोगे।
4. प्रतिदिन उन अनोखे उपहारों को याद करो जो गुरु से तुम्हें मिले हैं – ज्ञान, प्रेम, भक्ति और विश्वास।
5. प्रतिदिन गुरु का धन्यवाद करो कि, 'आज मैं जो कुछ भी बन सका हूँ वह आपकी कृपा से बन सका हूँ यह आपकी कृपा का फल है।'

Worry (चिन्ता)

- Worry is a rocking chair, which takes me no where
  चिन्ता एक ऐसी घूमने वाली कुर्सी है जो तुम्हें इधर-उधर घुमा सकती है किन्तु आगे नहीं बढ़ सकती। चिन्तित व्यक्ति अपनी उन्नति नहीं कर सकता। चिन्ता से ईर्ष्या, जलन, आशंकायें एवम् विक्षिप्तताएं उत्पन्न होती हैं।

- चिन्तित व्यक्ति जीवित ही दुख की अग्नि में जलता है। चिन्ता मनुष्य को सदैव भयभीत एवम् आशंकित रखती है।

- यदि तुम्हारे विचार तुम्हें चिन्तित न करें तो कोई भी तुमको चिन्तित नहीं कर सकता। समस्त चिन्ताओं का त्याग ही सच्चा त्याग है। मेरी चिन्ता हरि करे। मुझे न चिन्ता होय !

दोहे

चिन्ता किये से दुख होय,
चिन्ता बुरी बलाय है।
ऐसा जिसने निश्चय किया
सो क्यों करे चिन्ता भलाय।
जब चित थिरता पाये है
संसार सब हट जाये है।
साखी स्वम रह जाये
तब निज आत्म में डट जाये।

अद्वैत (Advaita)

- Advaita means one without second. As long as the body lasts the miseries exist. If we do not commitsins. We do not get body.
- To fulfill desires we perform actions. If there is no second the desire will not arise nor fear and hatred.
- Seeing all as Ishwar is Advaita. One minded sages see inner truth. They are free from thought of rebirth.
- अद्वैत का अर्थ है एक परमात्मा के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है। 'एकोऽम् द्वितीया नास्ति। जब तक देहभाव रहेगा तब तक दुख भी रहेंगे। हम यदि पाप करना, कर्म बनाना छोड़ दे तो हमें अगले जन्म की प्राप्ति नहीं होगी।
- इच्छा की पूर्ति में कई कर्म बन जाते हैं। इच्छा द्वैत में होती है। द्वैत भाव के मिटते ही भय, इच्छा तथा घृणा समाप्त हो जाती है।
- सर्व में ईश्वर का दर्शन करना ही अद्वैत भाव है। सन्त जो अद्वैत में रहता है अन्तर्मुखी हो जाता है, भीतर के सत्य को पहचानता है और जन्म-मरण से छूट जाता है।

❖हरिओम❖

Love

- Love not you country but kind.
- प्रेम केवल एक राष्ट्र के लिये नहीं वरन् सम्पूर्ण मानवता के लिये होना चाहिये।
- देवता प्रेम के साम्राज्य में रहते हैं उन्हें सब कुछ प्राप्त है, मनुष्य चाहता तो प्रेम का साम्राज्य है और दौड़ता धन, पदार्थ सांसारिकता की ओर है, अतः प्रेम खो जाता है।
- प्रेम वह धन है जो व्यक्ति को सभी चिन्ताओं से मुक्त कर देता है।
- प्रत्येक व्यक्ति प्रेम को नहीं पहचान पाता। ज्यादातर लोग प्रेम की निन्दा करते हैं क्योंकि वे सच्चे प्रेम की महानता को जानते नहीं।
- ईश्वर के रास्ते पर चलने वाला सच्चा प्रेमी संसार के अपशब्द सुनकर भी दृढ़ रहता है।
- प्रेम परिवर्तित नहीं होता।
- सच्चा प्रेम भय, घृणा तथा ईर्ष्या को जीत लेता है।
- जो प्रेम कर सकते हैं, धनी हैं।
- प्रेम जीवन है– प्रेम अपने प्रियतम के लिये जीवन की कुर्बानी भी दे सकता है।
- ईश्वर से प्रेम करो और तुम पाओगे, वह तुम्हारे समीप है।
- प्रेम-पूर्ण जीवन बनाओ, जिसमें मानवता एवं निःस्वार्थता के समस्त गुण हों। आडम्बर रहित जीवन ही प्रेम है।

- ❐ प्रेम हार्दिक होता है यह सभी पर अपना शासन कर सकता है।
- ❐ मेरा यह उद्देश्य है कि मैं तुम सबके भीतर के प्रेम को जागृत करूं क्योंकि प्रेम के द्वारा ही आनन्द की प्राप्ति होगी।
- ❐ तुम प्रेम से द्वार खटखटाओ, स्वयं परमात्मा द्वार खोल देंगे।
- ❐ **Rabia said " I love God so much that I have no time to hate Shaitan,"** राबिया सन्त ने फरमाया है, मैं खुदा से इतना अधिक प्रेम करती हूँ कि शैतान से घृणा करने का समय ही नहीं मिलता।
- ❐ **Love is not an action but a state of mind.**
- ❐ **Love all alike.**
- ❐ वे विचार जो प्रेमपूर्ण नहीं होते, सत्य को ढक देते हैं। हमें प्रभु के चरणों से दूर कर देते हैं।
- ❐ **Love is one way traffic.** प्रेम एकल मार्गीय है। प्रेम में आना होता है, जाना (वापसी) नहीं है।
- ❐ प्रेम साम्राज्य में प्रवेश लेने के बाद आप वापस नहीं लौट सकते।
- ❐ I love you but I equally love the man, whom you criticize.
- ❐ मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ किन्तु उसे भी प्रेम करता हूँ जिसकी तुम आलोचना करते हो।
- ❐ Light and love are equal.
- ❐ Love might hope where reasons disappear.
- ❐ जहां बुद्धि निराश हो जाती है प्रेम वहां भी उम्मीद की किरण जलाये रखता है। प्रेम निराश नहीं होता।

- ❒ Love alone has right to break the law. प्रेम समस्त नियमों का उल्लंघन कर देता है।
- ❒ You cannot love a man unless you won't see him as God. किसी को ईश्वर जाने बिना तुम प्रेम नहीं कर सकते। यदि तुम किसी को जानना चाहते हो तो उससे हार्दिक प्रेम करो।
- ❒ पवित्र प्रेम से रहित जीवन शुष्क है। प्रेम पूर्णता प्रदान करता है। प्रेम शक्ति एवम् नये विचारों का जन्मदाता है।
- ❒ जहां भय है वहां प्रेम का अभाव रहता है।
- ❒ प्रेम का प्याला पीकर दिवाने हो जाओ। यही दिवानगी ही भक्ति है।
- ❒ हम प्रेम से जितना भरते जाते हैं, उतना ही संसार में हमें प्रेम बिखरा हुआ दिखाई देता है।
- ❒ पूर्ण प्रेम में भय समाप्त हो जाता है।
- ❒ संसार की अथवा प्रत्येक उपलब्धि के पीछे प्रेम का महत्वपूर्ण हाथ है।
- ❒ आलोचना से कोई अच्छाई प्रकट नहीं होती।
- ❒ Love will painlessly attain Philosophy, After Knowledge Comes Parabhaktee...
- ❒ That which is most needed is the loving heart.
- ❒ ईश्वर प्राप्ति के कई मार्ग बताये गये हैं जैसे कर्म, प्रेम, आत्म संयम, सत्यवादिता निःस्वार्थता, दान आदि किन्तु प्रेम का स्थान सबसे ऊँचा है। प्रेम कियो जिनही, तिनही प्रभु पायो।

- ❐ जीवन एक फूल है और इस फूल की सुगन्ध है प्रेम। प्रेम परमात्मा की प्रतिध्वनि है।
- ❐ शरीर से किया गया प्रेम आसक्ति है, ईश्वर से किया प्रेम भक्ति कहलाता है।
- ❐ सच्चा प्रेम केवल प्रेम करने में खुश होता है।
- ❐ प्रेम के बदले में प्रेम को मांग लेना स्वार्थ है। यह प्रेम झूठा है और बन्धन का हेतु है।
- ❐ प्रेम आपको अमरत्व देता है।
- ❐ आनन्द का स्रोत प्रेम ही है।
- ❐ प्रेम बदला नहीं लेता यह क्षमा करता है।
- ❐ प्रेम आपको अमरत्व देता है।
- ❐ प्रेम वह सुनहरी जंजीर है जो दिल से दिल को बांधता है।
- ❐ प्रेम में अपमान भरे शब्दों का प्रभाव नहीं होता।
- ❐ प्रेम ईश्वर द्वारा मनुष्य को दिया गया एक अद्‌भुत उपहार है।
- ❐ प्रेम से प्रेम करने की प्रेरणा प्राप्त होती है।
- ❐ प्रेम की शक्ति के समक्ष अग्नि की लपटें भी प्रभाव रहित हैं।
- ❐ धन, इज्जत एवम् सुन्दरता एक दिन नष्ट हो जाते हैं किन्तु सच्चा प्रेम अमर है।
- ❐ To Live is to give.
- ❐ मैं प्रेम करूँ और प्रेम पाऊ यही मेरे जीवन का लक्ष्य है।
- ❐ जो प्रेम नहीं करता वह ईश्वर को जान नहीं सकता।

- Lord Christ says " Love me that I may love you.
- सच्चा प्रेम बांधता नहीं ना ही बंधता है यह हृदय को शुद्ध और पवित्र बनाता है।
- संसार की सभी वस्तुओं जड़-चेतन में ईश्वर को देखकर उनकी सेवा करना उनके हित की भावना रखना ही प्रेम है।
- पवित्र प्रेम स्वयं में ही अनान्द का द्वार है।
- प्रेम शब्द संक्षिप्त है किन्तु इसका अर्थ गहरा है। सच्चा प्रेम आकर्षित करता है, प्रेरित करता है और परिवर्तित करता है।

❖हरिओम❖

Few things to learn

Learn from the horse the art of working hard and faster,
He runs whole day as directed by his master,
Keep standing the whole night for service the next day,
Look at the man who insists on going his own way,

An angry man does not have to go to hell,
Wherever he lives he creates hell,
The realized have not to bow to temple
Where they bow becomes a temple.

Existence, knowledge and bliss,
Are all in you don't miss,
Eternal knowledge and love,
Should be your guiding star above.

For Braham Vidya one need not be disturbed,
Enlightenment comes to one who is undisturbed,
Identifying with the body mind and thought,
it's how the jiva is virtually caught.

It is not the criticism that counts,
It is feeling of guilt that accounts,
Criticism makes one internally sound,
Open praise makes one mentally bound.

Desire to acquire position, prestige and power.
Prompts the man to work harder every hour.
The mind is constantly seeking to possess something.
Man in this process, loses his very substantial being.

Ego is like an inflated (air in) football,
Gets kick as long as there is air the ball,
An egoist man is similarly knocked about,
Because of his ego he is always, kicked out.

Flower for a gardner is colourful.
Flower for a philosopher is all beautiful.
Flower for a scientist is the atomic energy.
Flower for a knower is the Atmic energy.

To see God is to be God,
Because he alone is his mesuring rod,
The male and female bears his image.
Even the smallest atom conveys his message.

Vedant teaches how to die,
It is an art to die and yet to be alive,
Death is nothing but a change for a new,
This is a secret known only by few.

Vedant is unity in diversity,
Vedant gives courage in adversity,
Vedant is beyond riches and poverty,
Vedant is acceptance of absolute unity.

I am better than Yesterday,
I am better than any day,
I am even better than tomorrow,
For I don't know what is in morrow.

Divine Dada.

अंदाजे बयां

मकसदें जिन्दगी न खो यूं ही उम्र गुजार कर।
अक्ल को होश से जगा होश को होशियार कर।

दुनिया जिसे कहते हैं जादू का खिलौना है।
मिल जाये तो मिट्टी है खो जाये तो सोना है।

❖हरिओम❖

कंजूस (नौ प्रकार के)

पूज्य श्री दादा जी कहते हैं कि Don't play a miser's role.

कंजूस कभी मत बनना। साधारणतः कंजूस से तात्पर्य उस व्यक्ति को समझा जाता है जो धन खर्च करना नहीं चाहता है किन्तु दादा जी ने कंजूसों के नौ प्रकार बताये।

1. धन का कंजूस
2. प्रेम करने का कंजूस
3. आनन्दित रहने को कंजूस
4. गुण ग्राहक दृष्टि का कंजूस
5. सेवा करने का कंजूस
6. मुस्कुराने का कंजूस
7. स्वयं को भगवान मानने का कंजूस
8. प्रशंसा करने का कंजूस
9. शुकराना मानने का कंजूस

❖हरिओम❖

स्थिर प्रज्ञ

ऐसा व्यक्ति वंदनीय है जिसमें निम्नलिखित लक्षण हैं :

1.	अहंकार	Egoless
2.	ख्यालों से रहित	Thoughtless
3.	अपरिग्रही	Nonpossessive Mood
4.	असंग	Unconcerned
5.	निर्मोह	Unattached
6.	विरक्त	Indifferent
7.	शौक रहित	Disinterested
8.	बेअसर	Unaffected.

सूक्तियां

सब चीजें मिलकर उनकी भलाई के लिये काम करती हैं जो ईश्वर से प्यार करते हैं।

मुरकुराहट घर में प्रसन्नता ला देती है, व्यापार में साख बढ़ाती है। दोस्तों को सुख देती है। लेकिन यह न तो खरीदी जा सकती है न उधार ली जा सकती है। न चुराई जा सकती है। क्योंकि यह एक ऐसी चीज है जो जब तक दी न जाये तब तक किसी के काम नहीं आती।

परहेज

पूज्यदादा जी ने बताया है कि जिज्ञासु को चार दीवारों के अन्दर रहना चाहिये (अर्थात् परहेज में रहना चाहिए।)

1. चोर जैसी चुप (चोर मौन में चोरी करता है।)
2. शेर जैसी एकान्त (शेर भीड़ में नहीं रहता है।)
3. स्वान निद्रा (केवल 6 घण्टे नींद करना)
4. बीमार जैसी भूख (जरूरत पड़ने पर भोजन करना)

❖हरिओम❖

रुक जाना नहीं तू कहीं हार के.....

रुकावटें

पूज्य दादा जी के कथनानुसार अपनी जागृति या आत्मप्राप्ति में तीन वासनाओं को रुकावट के रूप में बताया गया है। इन्हें दूर करना है।

1. देहवासना
2. शास्त्रवासना
3. लोकवासना

फूल और काँटे

दुख सुख को समान समझने के आठ तरीके।

निम्न बातों को अनुभव में लाने से व्यक्ति सुख-दुख के द्वंद्व जोड़ो से ऊपर उठ सकता है।

1. दुख-सुख काल अधीन है।
2. दुख-सुख ब्रह्म स्वरूप है।
3. दुख-सुख मिथ्या रूप है।
4. दुख-सुख ईश्वर अधीन है।
5. दुख-सुख कर्म अधीन है।
6. दुख-सुख माया अधीन है।
7. दुख-सुख स्वभाव अधीन है।
8. दुख-सुख भावी अधीन है।

मेरा संकल्प

A thoughtful resolve

- ❐ I will learn the secret of ages :–
- ❐ Weak is he who permits his thoughts to control his actions.
- ❐ Strong is he who forces his actions to control his thoughts.
- ❐ Each day, when I awaken, I will follow this plan of battle before I am captured by the forces of sandness, self, pity and failure.
- ❐ "If I feel depressed, I will sing.
- ❐ If I feel sad, I will laugh.
- ❐ If I feel ill, I will double my labour.
- ❐ If I feel inferior, I will wear new garments.
- ❐ If I am poor, I will donate what I have.
- ❐ If I feel incompetent, I will remember past successes.
- ❐ Today I will be master of my emotions."

Always I will remember

- ❐ If I become overconfident, I will recall my failures.

- ❒ If I feel complacency, I will remember my competition.
- ❒ If I feel all powerful I will try to stop the wind.
- ❒ If I become overly proud, I will remember a moment of weakness.
- ❒ If I feel my skill is unmatched, I will look at thestars.
- ❒ Today I will be master of my emotions.

❖हरिओम❖

Twelve Rules for happiness

(खुशियां खरीद लो)

1. *Live a simple life, be temperate in you habits. Avoid self seeking and selfshness.*
2. *Spend less than you earn. This may be difficult but it pays big dividends.*
3. *Think constructively. Train yourself clearly and accurately store your mind with useful thoughts.*
4. *Cultivate a yielding disposition. Resist the common Tendency to want things your own way.*
5. *Be grateful. Beging each day with gratitude for you opportunities and blessings.*
6. *Rule your moods. Cultivate a mental attitude of peace and goodwill.*
7. *Give generously. There is no greater joy in life than to render happiness to others by means of intelligent giving.*
8. *Work with the right motives. The highest purpose of your life should be to grow in spritual grace and power.*
9. *Be interested in others. Divert your mind from self centeredness.*
10. *Live in a day tight compartment. This means living one day at a time. Concentrate on your immediate task.*
11. *Have a hobby-Nature study, gardening, music, voice culture etc.*
12. *Keep close to God. True and enduring happiness depends on close alliance with him.*

❖हरिओम❖

जिज्ञासु

जिज्ञासु के लिये दादा जी की नसीहतें

- ❐ जीवन में असफलता का मुख्य कारण है धीरज की कमी का होना। अतः अपने में धीरज, साहस और विश्वास भरो।
- ❐ अच्छाई की उम्मीद रखो, बुराई के लिये तैयार रहो।
- ❐ एक सुखद सुनहरा भविष्य तुम्हारा इंतजार कर रहा है।
- ❐ दास्तां की जंजीरों से अपने को आजाद करो। महसूस करो प्रभु कृपा तुम पर बरस रही है।
- ❐ अपने भीतर से यह बात निकाल दो कि तुम पापी हो और तुम खुद को आज़ाद महसूस करोगे।
- ❐ आत्मनिर्भर होकर स्वयं कार्य करने की आदत डालो। कार्य ऐसे करो जैसे राजकुमार फुटबाल खेलता है।
- ❐ हर विपत्ति को सहने के लिये तैयार हो जाओ।
- ❐ जीवन में देने की कला को सीखो।
- ❐ अपना दृष्टिकोण बदल दो। आशावादी, प्रसन्नचित और प्रेम पूर्वक व्यवहार करो।

- ❐ किसी की आलोचना मत करो। सुख-दुख जो भी आये उसे स्वीकार करो।
- ❐ यह जानना अधिक आवश्यक है कि तुम जिस रास्ते पर चल रहे हो उसे कितनी शीघ्र प्राप्त कर लोगे ?
- ❐ भीतर के अहंकार को निकाल फेंको।
- ❐ निराशा को निकाल फेंको किन्तु क्रोध से नहीं।
- ❐ पथरीली जमीन पर भी पेड़ लगते हैं। चाहे तुम्हारा हृदय कितना ही कठोर क्यों न हो उसमें प्रेम पल्लवित हो सकता है।

❖हरिओम❖

बिखरे मोती

- ❐ त्याग से विद्या चमकती है। यही विद्या त्यागी को लक्ष्य तक पहुंचाती है।
- ❐ आत्मा केन्द्र है संसार उसका दायरा। दायरा छोटा बड़ा हो सकता है किन्तु केन्द्र नहीं।
- ❐ ज्ञानी सांसारिक पराधीनताओं से परे व्याकुलता का अनुभव करता है।
- ❐ जिज्ञासु – विचार और वैराग्य रूपी दो पंखों (Wings) पर उड़ान भर कर लक्ष्य तक पहुंचता है।
- ❐ भेद तो सारी दुनिया देखती है पर सतगुरु भेद में अभेद के दर्शन कराकर अभेद का भेद बतलाते हैं।
- ❐ संसार में वेदना का अनुभव होने पर ही चेतना जागृत होती है।
- ❐ बुद्धिमान उसे कहते हैं जो काया को छायावत भिन्न मान ले। आत्मदर्शी उसे कहते हैं जो देही को देह से भिन्न मान ले।
- ❐ काम नरक की सड़क है, इसमें जरा भी नहीं फरक है।
- ❐ आकृति (रूप) तो सुन्दर है पर यदि कृति (कर्म) सुन्दर नहीं तो वह किस काम के। Beauty lies indeeds not in forms.
- ❐ धन की अंधी पूजा धन को राक्षसी बना देती है। धन का सही मूल्यांकन धन को लक्ष्मी बना देता है।
- ❐ मन को अपने हित की बात समझ आय जाये तो वह अपने आप ही समाहित हो जायेगा।

- ज्ञानी ने हमें मुसाफिर कहा है बात सच्ची है हम यहां (संसार में) तो चन्द रोज के लिये ही आते हैं। बाद में (मृत्यु के पास) अपने घर जाते हैं कैसा अच्छा विचार है।
- बिन्दु छोटा हो. या बड़ा बिन्दु तो बिन्दु ही है संसारी विचार छोटे-बड़े कैसे भी हैं संसारी ही हैं। एक का ज्ञान हो जाये तो बिन्दु (शून्य) सार्थक हो जाये।
- सुखों का वासना के अधीन उपभोग करना भोग है। पर सुखों को ईश्वर की कृपा समझकर उपयोग करना योग है।
- **Endurance power, will power and observation power का विकास करो। सत्गुरु यर्थाथ वचन सुनाते हैं।**
- **Good life is our goal not wealth or power. Face the troubles. Face it boldly.**
- **The World is Gymanisum where we come to make ourselves strong.**
- **Strengh is the medicine for the worldly desire.**
- बाल्यावस्था में प्राप्त किया गया ज्ञान स्वर्ण तुल्य, युवावस्था में प्राप्त किया गया ज्ञान चाँदी तुल्य, वृद्धावस्था में प्राप्त किया ज्ञान तांबे तुल्य किन्तु जो मनुष्य किसी अवस्था में स्वरूप की पहचान नहीं करता वह मिट्टी तुल्य है।
- ऐ आशिक ! उम्र थोड़ी है पर सफर लम्बा है, जल्ब ही पतंग की भांति प्रभु रूपी शमा पर कुर्बान होकर अनन्त का दीदार करो। जिस्म रस्म और इस्म (अहंकार) की कैद से छूट जाओ। तुम्हारी इन्द्रियों के द्वार से सांसारिक विषयों के विकार भीतर आ जाते हैं। इससे बचने का यही एक उपाय है।

- मार्ग में ठहर मत जाओ प्रेम के द्वार खोल दो अब वैराग्य वृत्ति से इन्द्रियों के द्वार बन्द कर दो। आँख, कान, मुख मूँदकर नाम निरंजन ले।
- इश्क की तलवार अहंकार को मिटाकर प्रभु से मिलाती है।
- ए दिलबर के दर्शन के प्यासी ! सांसारिक सुखों के सामने अपना सिर मत झुका देना। सांसारिक रस तुम्हें कभी आकर्षित न करे। जिन्होंने खुदी को मिटाया उन्हीं ने महबूब (परमात्मा) से मुलाकात की, मिलकर एक हो गये। तुम दूसरे के जख्मों पर मरहम लगाओ तुम्हारे जख्म स्वयं ही परमात्मा सी देगा।
- आत्म अभ्यासी को अपनी निगाह सत्गुरु की निगाह से मिलाये रखनी चाहिये अन्यथा संसार का रंग चढ़ जायेगा।
- जिस प्रकार समुद्र में धूल नहीं उड़ती आकाश में आंधी नहीं आती उसी प्रकार ज्ञानी में सांसारिक विचार नहीं होते।
- बड़े से बड़ा पाप है सुखों का धन्यवाद न मानना।
- मैं तो निराकार हूँ तुम अपनी भावना से मुझे साकार बनाते हो। मैं सर्वत्र हूँ हर दिल का मैं मेहमान हूँ मेहमान को छोड़कर बाहर घूमना मेहमान की बेइज्जती करना है। भीतर के परमात्मा की बेइज्जती मत करो।
- जो व्यक्ति निरच्छा है उसका Willpower strong है।
- मेरा कहकर किसी को कैद मत करो।

  आजादगी क्या है गुरु वचनों की कैद में रहना।
- आशिक वे जो सूली सहे।

- खुदाई का जब परदा उठा तो अजब माजरा देखा।
  जिसको बन्दा कहता था उसे ही खुदा देखा।
  खुदाई में जुदाई का निशां मिलता नहीं हरगिज।
  खुदाई सिर्फ गैरत में होकर पायी जाती है।
  तुझे देखे तो फिर और को किस आंख से देखे।
  ये अखियन फूट जाये अगर इस आँख से औरों को देखे।
- पैरों से चलकर आना – अर्थात् कर्म मार्ग।
- दिल से चलकर आना – अर्थात् भक्ति मार्ग।
- दिमाग से चलकर आना – अर्थात् ज्ञान मार्ग।
- दिल की सभी जंजीरे टूट गयी। शक भ्रम सब दूर हो गये। होशियारी चली गई भगवान सत्गुरु के दर्शन करने से।
- स्वाति बूंद सीप के मुख में पड़ने से मोती बन जाती है और सर्प के मुख में पड़ने से जहर बन जाती है। केले के पत्ते पर पड़ने से काफूर बन जाती है और गरम तवे पर पड़ने से सूख जाती है। मनुष्य की जैसी मानसिकता होती है, ज्ञान का प्रभाव उस पर वैसा ही होता है।
- जो जागत है, सो पावत है, जो सोवत है सो रोवत है।
- सोना प्रमाद है, जागना प्रमोद है।
- पूजा में मंत्र मुख्य है, सेवा में प्रेम मुख्य है।
- शांत रहने से बात सुधरती है।
- संतरा अन्दर से भिन्न होते हुए भी बाहर से एक है। भिन्नता में भी एकता है।

- ❐ **Cheerfulness is our real image.**
- ❐ अनाज के कण, समय के क्षण और लग्नशील मन ये तीनों है महान धन। इनके नाश से जीवन नाश होता है।
- ❐ सत् की सेवा से ज्ञान मिलता है वह पुस्तक से नहीं मिलता। सन्त का आदर्श ही ज्ञान है।
- ❐ विरोध क्रोध का जनक है। क्रोध से कही वाणी-बाण है।
- ❐ ज्ञान से जंगल में मंगल है, अज्ञान से शहर में भी कहर है।
- ❐ जीव और ब्रह्म का भेद, जल में बर्फ की तरह कल्पना मात्र है।

❖हरिओम❖

सतगुरु

- सत्गुरु की कृपा जब बरसी तो मैंने पाया मेरा प्रियतम (निराकार) मेरे बहुत समीप है।
- **Guard minds the train but a Guru trains the mind.** गार्ड रेलगाड़ी को नियंत्रित करता है लेकिन गुरु हमारे मन को नियंत्रित करता है।
- **Sages have advised to seek thy home within their heart.**
- आध्यात्मिकता मूल्यवान है और गुरु इस अमूल्य हीरे की पहचान करवाता है।
- गुरु किसी को ज्ञान सुनाने नहीं जाते पिपसु स्वयं ही सुनने आते हैं।
- गुरु शब्दों से नहीं वरन् अपने आदर्श से सिखाते हैं।
- **He is a man of insight not of teachnical skill, he is a man of noble heart not a clever man he is lover of silence. To see Him was to be purified.**
- भगवान निराकार ने अपना साकार रूप (सत्गुरु) संसार में इसलिये नहीं भेजा कि वह दुनिया के लोगों की आलोचना करे वरन् सन्त और सतगुरु संसार के उद्धार के लियें ही धरती पर अवतरित होते हैं।
- जब तक गुरु को अपने भीतर में उतार न लो तब तक गुरु को भगवान मत कहो।
- सच्चे गुरु का एक स्पर्श, एक दृष्टि, एक संकल्प ही काफी है जिज्ञासु का उद्धार करने के लिये।

- सतगुरु मुक्ति की प्रेरणा देते हैं।
- सत्गुरू के वचन की जो इज्जत करता है वह मृत्यु को नहीं प्राप्त होता है।
- सतगुरु का धन्यवाद इन शब्दों से कहना चाहिये 'आज मैं जो कुछ भी हूँ, गुरु तुम्हारी कृपा से हूँ।
- मेरे गुरु ने कभी किसी की आलोचना नहीं की, न किसी की बुराई की। वह मान अपमान से ऊपर था। ऐसा था मेरा सतगुरु।
- यद्यपि जलधारा नीचे की ओर बहती है किन्तु सूर्य अपनी किरणों से जल को सोखकर भाप बना देता है यही भाप बादल बन जाती है, बादल जब मेघ बनते है तो मीठे जल स्रोत के रूप में बरसने लगते हैं इसी प्रकार सत्गुरु मन को उसके सद्भाव के विपरीत ऊर्ध्वगामी बनाकर शांत तथा शीतल करता है। सतगुरु के अतिरिक्त अन्य किसी में इतनी शक्ति नहीं है। जो मन को ऊर्ध्वगामी (ऊँचाई की ओर ले जाये) बना सके।
- सदगुरु यश कामना नहीं करते वे कामना रहित होते हैं।
- गुरु एक राजनीतिज्ञ की भांति नहीं होता जिसका प्रत्येक स्थान पर फूलों से स्वागत हो। गुरु कामिनी, कंचन, कीर्ति से रहित है।
- गुरु ऐसा चाहिये जो छुड़ावे संसार।
- गुरु मिला तब जानिये मिटे मोह मन ताप।
- गुरु के एहसान कभी मत भूलो।
- Never forget the obligation of your satguru, for the realization of self, Guru's grace in required.

वृति की निवृति

विचारों (मन) को नियंत्रित करने के कुछ उपाय।

पूज्य दादा जी ने पवन की गति जैसे चलायमान चंचल मन को नियंत्रित करने के कुछ कारगर तरीके बताये हैं जो प्रत्येक जिज्ञासु के लिये अत्यधिक महत्वूपर्ण हैं।

1. विचारों को रोकने का सबसे उत्तम तरीका स्वयं को इच्छा रहित कर लेना है।

2. मन को नियंत्रित करने का उत्तम तरीका मन को प्रेम से मोड़ना है। हिंसात्मक तरीके से विचारों का दमन करने से विचार पुनः जीवित हो उठते हैं अतः दमन नहीं शमन करना है।

3. मन एक सर्प की भांति है यह ज्ञान रूपी बीन से सरलता से वशीभूत हो जाता है।

4. मन बन्दर के सदृश चंचल है इस पर अंकुश लगाना अत्यधिक मुश्किल कार्य है। राम के नाम का आसन लगाने से मन वशीभूत होता है। आसन कबीर लगायो रे राम।

5. मन, वासनाओं तथा इच्छाओं का एक समूह मात्र है जिस प्रकार प्याज की समस्त परतें उतार देने पर प्याज का अस्तित्व खत्म हो जाता है उसी प्रकार सभी इच्छाओं को ईश्वर से जोड़ देने पर विचारों की आवाजाही समाप्त हो जाती है।

6. मन को वशीभूत करने का उत्तम तरीका 'गुरु कृपा' है। गुरु के सान्निध्य में मन का अस्तित्व नगण्य हो जाता है।

7. ज्ञान तथा योग द्वारा मन वशीभूत हो जाता है।

8. निष्काम कर्म के द्वारा मन आसानी से नियंत्रित हो जाता है।

9. बुरे विकल्पों से हटाकर अच्छे संकल्पों से जोड़ देने पर मन वशीभूत हो जाता है।

10. मन की समस्त गतिविधियों पर पूरी नजर रखने से भी मन नियंत्रित हो जाता है।

❖ हरिओम ❖

Listen to Me.....

- God needs and sends his son so that the world may be saved through him. (Christ.)
- Why do you call me Lord. When you do not practice the things I say ?
- Complete renunciation of the world, is the natural outcome of the knowledge of the self.
- Time is precious. Seek the eternal here and now. Let not your precious moment pass away in your pre-occupation with the world.
- Wasted is the day. That is filled with emptiness of foolish gains without a thought of love.
- As a fish wants water, you ant God. Which you already are, but you have forgotten. You have to renounce nothing. Only see the rope and the snake disappears. Giving up the false self, (Ego) is true renunciation.
- All sins and sufferings have but one source, man's denial of his own divinity. Declare it and conquer death.

- It is sin not say. "I am God" Don't play a miser's part (Vivekanand) you may drink the ocean. You may uproot the mountain. You may swallow fire but more difficult is self control which the Guru controls Instantly.
- Give, as rose gives perfume, as it is its nature, utterly unconsicious of giving.
- The goal is to attain freedom while living. Salvation now and here. Let a man feel pain. That he has not reached the highest. He has not reached God, and that pain will be, his salvation.
- What can not be cured must be endured. When God sends rain, I feel as if it is my choice. Accept life and not rebel against it as if wanted it. When you accept life then life accepts you.
- Neither seek nor avoid but take what comes from God.
- I don't want to change anyone but to change myself.
- If we feel God's will, how can we want anything.
- Worry causes death. All kinds of diseases are due to worry.
- You can master, worry and anxiety with faith and hope in God, rather than fear.

- Think boldly. Fortune favours the brave.
- You can be no more than you believe you are. We are what we believe we are. You can not do if you think you can not.
- Do not allow doubts in your mind.
- You can loose your pains be becoming more interested in something else (Hobby).
- God had planned for you, Who can be against you ?
- I Just love everybody and when I have God in heart. I am happy.
- Change your mind to believe and impossible becomes possible. First become a believer in God confidently, Secondly believe in yourself and in life itself. Serve God and mankind and stop doubts.
- Meditation Attains perfection, When it is no longer necessary to meditate.

❖हरिओम❖

Divine Dada's Spiritual Letters

18 July 1961

My dear own self,

Your question is what is self realization ?

I am Atma i.e. Parmatma. This is self realization. I am that. Know thyself and you know God, yourself is God "OM" All things are God. God himself is all in all.

Everything is God. God is everything himself. Whatever is seen is all God. You say but see not. One God hath extended everywhere is various ways in endless waves. God himself performeth and beholdeth his own play. God is one and mainfold. God is the seed and God is the tree. God is himself far and himself near. God is everywhere and whoever has this trust, for him, There is no uncertainty. Where one sees nothing else, understands nothing else. That is the Infinite.

Our lives we make by the attitute we take, if we are depressed, how can we hope to see the best, Fear is the sign of want of faith. Believes of God are fearless. Life of faithful and death of faithless. Self mastery is essential for self realization. Modern world knows only about the body but nothing about Atma. If only the mind

is under control. What does it matter, where one may happen to be. True work is God consciousness. If you can sustain it then be it in busy Newyork or in the silent Himalyas, the effect remains the same. While we recognize a God. It is reality and only the self from which we have separated ourselves and worship as outside of us. But it is our true self all the time, the one and only God. You are the truth from the very beginning, Only realize yourself. Life is eternal. There is no death of Atma only the body perishes at death.

I am Atma and the world is not. The world is like a mirage and dream land. They say God is everywhere and at the same time they cry for God because they have not seen Him. Love all alike, then all desire fall off. To love anybody is bondage.

One king may rule over the world, yet he can not attain peace unless he knows the self.

The root of all suffering is cut off by the vision of self. Ignorace of the self is the source of all troubles and the knowledge of it is that of undecaying bliss.

Unless regard for body is lost, there is no God

Your ownself

OM DADA

❖हरिओम❖

OM

17th July 1959

My dear ownself,

An Atmakar moving among sense objects with sense free from attraction and repulsion (Rag and Dwesh) mastered by the self goeth to peace.

Disidentify yourself with body controlled thought and mind show unity of Braham Everywhere. "Vasudev in all", It is called equal seeing.

Superior to all is he who offers into me all his activities, their consequences and his body and thus sees nothing between hemself and Parmatam. He is equal seeing and devoid of the sense of doership. I do not see anyone higher than he who has resigned his body and self into me.

Reach unity and no more duality will come those who have attained sameness are said to be living God. That which you see and know that all is mere child's play and do not trouble yourself about anything.

Physical body is composition of element and will be decomposed. Individual reality is like the sun, like teacher who teaches but does not require leaning who

comes to learn is like the moon, because the moon gets light from the sun. One is Nirbal and the other is Balwan. Nirbal can get power from Balwan.

As rain comes down and returns not but waters the earth, that it may give bread to the eater, so shall my word be that goes of my mouth. It shall accomplish what I please and it shall prosper in whom I sent it. But he has to put the mirror against the sun to get in the mirror, the sun.

Feel the need of God first. Then form an acceptable idea of God, That is as if turning your face to the east to see the sun coming. Everything is there as it was before. Only know it is a flame. Suddenly the light fills one's eyes and one knows that sun has risen and that doubt has fled for ever.

Atmakar who has experienced the absolute (Nirakar) does not engage himself is actions, Bliss is unattainable by Karmas as it is not included in the scheme of creation.

Every action has a reaction. All Actions are bondage. No salvation. All karmas have defects as is smoke in firewood (Gita).

The Lord of all things dwells in the region of the heart by means of his magic causes all things to whire round mounted as it were on a circular engine.

Neither seek nor avoid, take what comes.

Nirichha and desireless – Wants make you a beggar. Thy will, will be done, not my will. Then there will be no reason to complain. "Vah Guru" everything is from my God and for my Good.

I the all merciful being, descend as man, assume a human form with human attributes and appear before you as a God man just to receive you homage of love and worship of devotion.

As the wind moving everywhere rest ever in Akash even so do all things rest in me (9/6) (Gita) Ignorance of the self is the source of all troubles and the knowledge of it is that of bliss.

Om Shanti
Your own self

Om Dada.

❖हरिओम❖

Important Tips (Hindi Translation)

- ❐ वैराग्य शब्द का लोग गलत अर्थ निकालकर अपने कर्तव्य और जीवन से भागने का प्रयत्न कर रहे हैं। असल में यह संसार एक सुन्दर स्थान है और किसी भी धार्मिक व्यक्ति ने इसकी निन्दा नहीं की है।

- ❐ नास्तिक भगवान की पूजा इसलिये नहीं करता क्योंकि उसे भगवान के विषय में जानकारी नहीं है और जीवन मुक्त इसलिये भगवान को नहीं पूजते क्योंकि वह अपने स्वरूप को जान गये हैं बाहर से दोनों एक समान लगते हैं।

- ❐ गीता गीत है प्रेम करने वाले हृदयों के लिये।

  सहनशीलता जगत को मुस्कुराहट से जीत लेती है।

  अच्छे विचार और कर्म सदैव तुम्हारी रक्षा करने को तत्पर हैं अपने ही किये कर्म की वजह से तुम दुखी होते हो और इसे तुग ही मिटा सकते हो। तुमने बनाया तुम ही बिगाड़ते हो तुम अपने भविष्य के स्वयं निर्माता हो। तुम्हें इस संसार में बिना तुम्हारी इच्छा के नहीं लाया गया है।

- ❐ ब्रह्म – बुद्धि, बहस और अत्यधिक श्रवण से नहीं प्राप्त होगा। अतः मौन हो जाओ। ब्रह्म – मौन द्वारा ही अनुभव किया जा सकता है। मौन शक्ति और आनन्द की जननी है। स्थिरता से जो कि आत्मा की शान्त अवस्था है, आन्तरिक आँख उत्पन्न होती है और अपने वास्तविक स्वरूप में लाती है।

- ❐ जगत की उत्पत्ति ब्रह्म से ही हुई है इसके अलावा और कोई पदार्थ नहीं है जिससे जगत उत्पन्न होता है वह एक मात्र कार्यकारी सिद्धान्त है। वह ही कार्य करने का निमित्त है वह

एक है और दूसरे से रहित है। वह अपने प्रकृति से कार्य का सिद्धान्त बनाता और अपनी इच्छा से उससे कार्य करवाता है उससे ही वस्तुएं उत्पन्न हुई हैं। उसमें ही रहो उसमें ही लीन हो जाओ। भगवान ने स्वयं को जगत में परिवर्तित कर लिया है। मकड़ी की तरह वह स्वयं ही कर्म, क्रिया और कर्ता है।

- अपने को जीवन से इस प्रकार जोड़ लो कि तुम्हारा जीवन एक अच्छा देवतुल्य और आनन्दकारी हो जाये। उसकी चेतन सत्ता पत्थर में सुप्त अवस्था में है, पौधे में फूल बनकर खिलती है। जानवर बनकर चलती है। मनुष्य बनकर विचार करती और महान् व्यक्ति बनकर जानती है। वह सर्व है, वह सर्वस्व है। वह ही मंच और नाटक है और स्वयं ही कलाकार है। उसकी इच्छा से ही सत्ता कार्य हो रहा है।

- हमें एक ऐसी संकल्प शक्ति चाहिये जिसे द्वारा हम स्वयं सत्य परमात्मा को ढूंढ़े और इसके द्वारा ही मनुष्य सही मायने में जी सकता है व खुशी की प्राप्ति का आनन्द प्राप्त कर सकता है, आनन्द, प्रयास या प्यास नहीं पर तृप्त है। प्रेम बिन आनन्द नहीं है।

- तुम स्वयं में सम्पूर्ण विश्व को धारण किये हो। आत्म स्वरूप की प्राप्ति के लिये शांत होना बहुत जरूरी है। इससे सभी शंकाओं का समाधान होता है। अपना सारा धन सम्पंदा छोड़ दो यदि तुम संसार की सेवा करना चाहते हो तो।

- तुम समाधि में रहने की कोशिश या इच्छा मत करो। जिसे इच्छा नहीं वह शाहों का शाह है। उसे प्रार्थना की भी जरूरत नहीं है, तुम्हारी सभी इच्छायें पहले से ही पूरी हो रही हैं, यह जानना ही आनन्द देता है।

- इच्छा रहित बनो। इच्छायें हमें भिखारी बनाती हैं। सन्त कुमार श्वेतकेतु एवम् नारद को सिर्फ बौद्धिक ज्ञान था। उद्दालक ऋषि ने उन्हें ऐसी विद्या पढ़ाई जिसे अनसुना सुना जा सकता था। न जाने हुए को जाना जा सकता था। दर्शन शास्त्र का मतलब है पूर्ण ज्ञान। आत्म प्राप्ति के बाद सभी कुछ जाना जा सकता है। भगवान के सिवाय कुछ भी नहीं है।
- ब्रह्म को जानने के लिये बुद्धि सक्षम नहीं है।
- प्रारब्ध कर्म ही इस शरीर की रक्षा करते हैं जो भी भगवान भेजे उसे स्वीकार करो।
- जब चन्द्रमा उदय होता है हम व्रत तोड़ देते हैं जब हम अच्छे हो जाते हैं तो दवाई-खाना छोड़ देते हैं, जब हमें पूर्ण वैराग्य हो जाता है तो हम इच्छा रहित हो जाते हैं।
- सच्चे गुरु से हमें मन की शांति आनन्द संतोष की प्राप्ति होती है जिसे पैसा नहीं खरीद सकता है।
- मुझे व सर्व को परमात्मा प्राप्ति की भूख है। जब चेला तैयार हो तो गुरु स्वयं ही आ जाता है, अपने पुरुषार्थ से मुझे पता लगा कि मैं भगवान हूँ न कि यह देह। मेरी देहध्यास समाप्त हो गयी सर्व में भगवान के दर्शन होते हैं जो कि मैं स्वयं हूँ। मैं जब भी यह बोलता हूँ आन्तरिक जागृति मुझे सचेत करती है।
- मैं साक्षी और मैं जान गया हूँ कि मैं पहले से ही मुक्त हूँ। मैं पहले भी था अब भी हूँ और आगे भी रहूँगा। मैं परिवर्तन रहित आनन्द अशोक हूँ।

Desire (इच्छा)

- Want makes us begger इच्छायें हमें भिखारी बनाती हैं। कुछ बनने की इच्छा ही भिखारी बनाती है।
- Freedom from mind and absence of mind is peace. मन की स्वतंत्रता व मन का अभाव ही शांति है।
- निरइच्छा व्यक्ति ही तृप्ति का अनुभव करता है। इच्छा वाला व्यक्ति कभी तृप्त नहीं होता क्योंकि उसकी असीमित इच्छाओं की पूर्ति कभी नहीं होती। इच्छाएं खुजली की बीमारी की तरह हैं।
- जितनी आप आशा करेंगे उतना ही आप निराश होंगे।
- परमात्मा को देखने के बाद किसी वस्तु की इच्छा नहीं होती, अतः माया को भूलाकर मालिक की सेवा करनी चाहिए।
- All People are incomplete, All lack something. सभी मनुष्य अपूर्ण हैं, सभी में कुछ कमियां हैं।
- जो तुम्हारे भाग्य में नहीं है, तुम उसको प्राप्त नहीं कर सकते। सब के पास सब कुछ नहीं हो सकता अतः सब अपूर्ण हैं।
- ईश्वर द्वारा दी गयी प्रत्येक विपदा को सहजता से स्वीकार करो तथा अनुभव करो कि यह तुम्हारे हित में है।
- जब तुम जीवन को स्वीकार करते हो तो जीवन भी तुम्हें स्वीकार करता है।

- ❒ स्वयं को (प्रकृति को) परमात्मा की इच्छानुसार चलने दो। शुभ इच्छा रखना भी अज्ञान है। इच्छा मात्रम् अविद्या।
- ❒ भगवत् प्राप्ति की इच्छा भी भगवत प्राप्ति में बाधक है।
- ❒ इच्छा को मारने या दबाने का प्रयास भी इच्छा ही है।
- ❒ You are already God. तुम पहले से ही भगवान हो।
- ❒ संन्यासी इच्छाओं को तो दबा लेता है किन्तु उसकी वासना की समाप्ति नहीं होती।
- ❒ जिसको तू ढूंढ़ता है वह तू ही है।
- ❒ इच्छा को हठ योग के द्वारा नहीं रोका जा सकता।
- ❒ प्रेम बिना इच्छा व बिना स्वार्थ के होता है। प्रेम करने वाला अपना अहम् समाप्त कर देता है। प्रेमी प्रेमास्पद के लिये मृत्यु का आलिंगन भी कर सकता है।
- ❒ इच्छा तुमको ब्रह्मपद से गिराकर जीव बना देती है। जगत के सभी पदार्थों को मिथ्या समझने से वैराग्य स्वयं आ जाता है।
- ❒ Knowledge means farewell to desires. ज्ञान का अर्थ है इच्छाओं से निवृत्ति।
- ❒ इच्छा और अहंकार के सिवाय जो कर्म होता है, वह है निष्काम। निष्काम कर्म सभी कर्मों से श्रेष्ठ है।
- ❒ सकाम कर्म नरक के द्वार हैं, जन्म-मरण में ले जाने वाले हैं। अतः सकाम कर्म मत करो। आनन्द व शांति की प्राप्ति हेतु शुभ और अशुभ दोनों ही इच्छायें बाधक हैं।

- जिस प्रकार मछली का जीवन पानी है, शहद नहीं। उसी प्रकार मानव जीवन का उद्देश्य मन की शांति है धन नहीं। धन की प्राप्ति का सुख अस्थायी है, जो कालान्तर में दुख देता है।
- इन्द्र आदि देवता जिस पद के लिये करते सदा ही चाहना।
  सो आत्म पद पायके हम हुए निर्वासना।।
- यदि कोई आम में कीड़ा दिखा दे तो वह स्वतः ही हाथ से छूट जाता है उसी प्रकार सत्गुरु माया का वैराग्य से सहज त्याग करा देता है। इच्छा ही नहीं है।
- **Desire for peace of mind is also a desire.** मन की शांति की चाह भी एक इच्छा है। इसलिये इच्छा को शांत कर दो।
- इच्छा, वासना, चाहना, कामना और अहंकार रहित को ही ईश प्राप्ति होती है।
- इच्छा करे सुख भोग की, भोग सम है रोग,
  त्याग करे सुख भोग का, रहो सदा निरोग।
- अगर तू चाहे अपना भला, इच्छा का तू घोट गला।
  इच्छा करके जीवन ढला, निरिच्छा में ही सब सुख पला।।
- इच्छाओं की समाप्ति के पश्चात् चिन्तायें स्वतः समाप्त हो जाती हैं।
- जो अन्दर और बाहर से निरइच्छा है वह निसन्देह ही बादशाह है।

- ❐ दूसरे आपके बारे में क्या सोचते हैं, इसके विषय में मत सोचो।
- ❐ जब तक इच्छा और अहंकार का समूल नाश नहीं होगा तब तक तुम अपनी आत्मिक स्थिति में नहीं आ सकते।
- ❐ निरइच्छा होने का अर्थ है –जीवन का पूर्ण होना अर्थात् तृष्णा रहित होना।
- ❐ एक अच्छा सुधारक राजा के दान व कोष की इच्छा नहीं करता।
- ❐ केवल योग्य बनो परन्तु योग्यता व सम्मान की इच्छा मत करो।
- ❐ हे भगवान तेरी इच्छा ही मेरी इच्छा है।
- ❐ मन की शांति का अभ्यास करो। कोई भी तुम्हें अशांत नहीं करेगा। अपनी बुद्धि का सम करो। तुम्हारी सभी इच्छायें अगोचर हो जायेंगी।

❖हरिओम❖

सुन रे बन्दा.....

- एकाग्र मन से एक क्षण के लिये भी किया गया ओम् के मंत्र का जाप तुम्हें पूर्ण रूप से ज्योतिर्मय बनाने में सक्षम है।
- As you think so you become. जिस प्रकार के तुम विचार करोगे, उसी प्रकार के तुम बन जाओगे। यदि तुमने यह अनुभव किया है कि तुम भगवान के सदृश हो तो तुम्हारे विचार उसी के अनुरूप होंगे।
- ईश्वर को प्राप्त करने से सभी देवता तुम्हारे से प्रसन्न हो जायेंगे।
- किसी भी मनुष्य का आकलन उसके विचारों से किया जाता है।
- तत्वज्ञानी कभी यह नहीं कहता कि वह रोग से ग्रसित है अथवा दुखी है।
- प्रेमी कभी बदले की इच्छा नहीं करता।
- प्रेम उद्देश्य रहित और इच्छा रहित है।
- सुधारक को इतना निर्भय होना चाहिए कि बादशाह के क्रोध की भी परवाह न हो। उसके जीवन में पवित्रता होती है तथा उसकी मृत्यु भी संसार को सुधारती है।
- सांसारिक वस्तुओं व सुखों के मोह का त्याग करो।

- अनेक पापों व दुखों का कारण एकमात्र मनुष्य की इच्छा ही है। अतः इस पर विजय प्राप्त कर लो।
- साहस और शक्ति समस्याओं को मन से दूर करने में सहायक है।
- मैं आत्मा हूँ इस प्रकार कहने से कंजूसी मत करो तथा मन को पूण रूप से ओम् में स्थित करो।
- अध्यात्म में व्यस्त रहने से तुम्हारी इच्छायें स्वतः ही समाप्त हो जाती हैं। अध्यात्म के महान् कार्य को छोड़कर सांसारिक कार्य में नहीं लगना चाहिये।
- जितने आप पूर्ण होंगे उतने ही संसार के कर्म से विरक्त होंगे।
- प्रसन्न होने का सर्वश्रेष्ठ साधन है दूसरे को प्रसन्नता देना।
- सर्वश्रेष्ठ दान है, स्वयं को ही दान में समर्पित कर देना।
- कर्म ही पूजा है, श्रम से प्रेम करना ही जीवन है।
- अगर जलता हुआ अंगारा मनुष्य के सिर पर रख दिया जाये तो वह उसे तुरन्त हटाने का प्रयत्न करता है। इसी प्रकार यदि मनुष्य को वास्तविक रूप से ज्ञान हो जाये कि वह प्रकृति का द है तो वह मुक्ति के लिये उसी प्रकार संघर्ष करेगा।
- मनुष्य स्वयं अपने आपको दुखी व प्रसन्न कर सकता है।

❒ इच्छा को दूर करने से हम धनी बन जाते हैं।

❒ हमारी खुशी इसमें नहीं है कि हमारे पास कितना है अपितु इस पर निर्भर करती है कि हम उसे कितना उपयोग करते हैं।

❒ मनुष्य ईश्वर का प्रतिबिम्ब है अतः वह अमर है।

❒ संसार में कोई सुख नहीं है अतः आत्मिक स्थिति में रहकर संसार के बिना भी सुखी रह सकते हैं।

❒ जो स्वयं को जीत लेता है वही सबसे बड़ा विजेता है।

❒ क्रोधित मनुष्य को शत्रुओं की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि वह स्वयं ही अपना शत्रु है।

❒ अहंकार अस्तित्वहीन है, यह मात्र भ्रम है जो अज्ञानता के कारण होता है इसे आत्म-निरीक्षण के द्वारा दूर किया जा सकता है।

❒ संसार में जो कुछ भी घट रहा है वह कोई नया नहीं है क्योंकि जो घटना वर्तमान में घट रही है वह भूतकाल में घटी थी वह भविष्य में भी घटेगी। सूर्य के नीचे कभी कुछ नया नहीं होता है।

❒ भगवान की प्राप्ति नहीं करनी है क्योंकि तुम स्वयं भगवान हो।

❖हरिओम❖

Law of Karma

- ❖ मनुष्य को अपने पूर्वजन्म में किये गये कर्मों का भुगतान निश्चित रूप से करना पड़ता है।
- ❖ तत्व ज्ञान कर्मों के प्रभाव से ऊपर करता है। ज्ञान अग्निं दग्धः कर्मः।
- ❖ पूर्वजन्म के कर्मों को ही प्रारब्ध कहते हैं।
- ❖ मनुष्य का पूर्व जन्म के कर्मों पर कोई नियंत्रण नहीं होता। किन्तु उसे वर्तमान के कर्म करते समय सतर्क रहना चाहिए।
- ❖ कर्म करो, किन्तु फल की इच्छा मत करो।
- ❖ मैं देह नहीं हूँ, आत्मा हूँ। इस सत्यता द्वारा ही स्वयं को सुख दुख से ऊपर किया जा सकता है। सच्चा साधक शरीर की प्रत्येक घटना को साक्षी भाव से देखता हुआ आत्मिक आनन्द में लीन रहता है।
- ❖ पूर्व जन्म के विपरीत कर्मों के भोग के कारण दुखी नहीं होना चाहिये अपितु वर्तमान के कर्मों के प्रति सजग रहना चाहिए।
- ❖ प्रारब्ध को कोई भी बदल नहीं सकता जो प्रारब्ध में लिखा है उसका सुखपूर्वक भोग करते हुए परमात्मा का गुणगान करते रहना चाहिये। सन्तों के संग से भाग की रेखा भी बदल जाती है क्योंकि प्रभु के सिमरन दुख न संतापे।
- ❖ ईश्वर न्यायपूर्ण है किन्तु मनुष्य अज्ञानतावश अपने ही पूर्व कर्मों को ईश्वर का दण्ड समझकर उसे अन्यायी समझता है।

❖हरिओम❖

सुनहरी किरणें

- Religion starts with belief but ends with self experience. धर्म की शुरुआत विश्वास से किन्तु उसकी समाप्ति अनुभूति से आकर होती है। आत्म अनुभूति आवश्यक है।

- My body will become dust, but my heart will throb in million hearts. शरीर समाप्त हो जाने पर भी मैं अनेकों के हृदय की धड़कन बनकर धड़कता रहूँगा।

- What is that light that illuminates the eye ?

- The light is the intellect.

- What is the light that knows intellect ?

- It is the "I" मैं की सत्ता से बुद्धि प्रकाशित होती है।

- One glance. One touch of true Guru is enough to show you God.

- Spiritual knowledge is an art of living but not religion. अध्यात्मिक ज्ञान जीवित रहने की कला सिखाता है।

- Mukti is your eternal nature. You have not a attain it. तुम मुक्त स्वरूप हो, मुक्ति तुम्हें प्राप्त नहीं करनी है।

❖ You hear when you do nothing. If you are doing anything, you can not hear. Stop wandering. That is your natural state. जब आप शांत होते हैं तो भीतर की आवाज को सुन सकते हैं। ख्यालों की अस्थिरता को रोको।

❖ Even beast can sleep. Live and die but man has a mission beyond this. मनुष्य का जन्म पशु की तरह केवल खाने, सोने और मरने के लिए नहीं है। वरन् उसका लक्ष्य ऊँचा होना चाहिए।

❖ I want to change your death into immortality. Listen through your mind and hear with your heart and determine completely that "I am Atma" मैं तुम्हें मृत्यु से बचाकर अमरता की ओर ले जाना चाहता हूँ। श्रवण और मनन करके एक बार दृढ़ निश्चय करो कि मैं आत्मा हूँ।

❖हरिओम❖

FEW THINGS TO REMEMBER

Death is change of dress and address.

- Death is gate to another life. अन्य शरीर में प्रवेश का नाम मृत्यु है।
- Yoga is a state of mind where is no Sankalp and Vikalp. योग मन की वह शांत अवस्था है जहां संकल्प विकल्प समाप्त हो जाते हैं।
- What is Gyan ? Knowing thyself. स्वयं की जानकारी ही ज्ञान है।
- Uplift those who are fallen.
- Ego is an illusion, caused by Ignorance. It can be removed by self inquiry. अहंकार अज्ञान से उत्पन्न होता है और आत्म विश्लेषण करने से चला जाता है।
- When " I and My" are removed, Man is no longer harmful. जिस व्यक्ति का मैं और मेरा समाप्त हो गया वह किसी को हानि नहीं पहुँचा सकता।
- Don't give up rose for its thorns. Don't leave the path truth because you are scared of obstacles. काँटों के भय से गुलाब मत छोड़ो। संघर्षों से भयभीत होकर सत्य मत छोड़ो।
- All die with their destiny. मौत प्रारब्ध से आती है।
- Happiest man is without a shirt. जिस व्यक्ति ने देहध्यास रूपी कमीज़ का त्याग कर दिया है वह सदैव प्रसन्नचित्त रहता है।
- Don't seek God see God everywhere. भगवान की खोज मत करो, उसे हर जगह देखो।

- Honour those, whose words or deeds help us in our daily deeds. उन महान व्यक्तियों का सदैव आदर करो जिनके शब्द और आदर्श आपके जीवन में ऊपर उठने में सहायता करते हैं।
- Seek God, It will be lost in discussion. भगवान को वाद-विवाद से नहीं जान सकते।
- Perfect act has no result. That is Nishkam.
- Guru is the only living God on earth.
- God is with you. You should not fear.
- Troubles won't come if you invite them not.
- Man does not live by bread alone but also by his thoughts and mind.
- Philosophy - Philo means lover
  Sophy means wisdom
  "Lover of wisdom"
- My looks is more than book. शास्त्र पढ़ने से अधिक अच्छा है कि जीवित गुरु के आदर्श से ही हम सीखें।
- I Know that I know nothing. चरम लक्ष्य पर पहुँच जाने के बाद व्यक्ति ये जानता है कि वह कुछ नहीं जानता अर्थात् जानने के अहंकार को मिटाना है।
- Willingly or unwillingly if you fall in water. You will surely get wet. आप स्वयं गिरे या कोई अन्य आपको पानी में ढकेल दे, आप गीले हो ही जायेंगे। स्वयं माया का संग करो या किसी के कहने पर माया का संग करो, माया की रंगत चढ़ेगी ही।

- Forget yourself to realize yourself.
- बाढ़ के आने पर छोटे-छोटे गड्ढे भी जल से पूर्ण हो जाते हैं। अवतार के शरीर रूप में आने पर अनेक हृदयों में प्रेम की धारा फूट पड़ती है।
- Earn with moral means and spend wisley सात्विक साधनों से धन कमाओ और बुद्धिमानी से खर्च करो।
- Why do you call me Lord, when you do not practice things that I say. तुम मुझे भगवान कहते हो किन्तु मेरी कही बातों का पालन नहीं करते।
- Every day wastage is the defeat, to be ashmed of आत्म जागृति के बिना प्रत्येक दिन व्यर्थ है। ये एक शर्मनाक बात है कि तुम्हारे दिन आत्म उपलब्धि के बिना बीतते जा रहे हैं।
- All the world is nothing but your thoughts, imagination and your ideas. संसार के अस्तित्व मिथ्या है, तुम्हारे विचार, ख्याल और कल्पनाओं में संसार सत्य है।
- Child will give up old toy when he gets new toy बच्चे को नया खिलौना जब मिलता है तब वह पुराना खिलौना सहज ही त्याग देता है। मन को भी जब राम रस आ जाता है तब वह विषय रस की और प्रवृत्त नहीं होता।
- Be careful and you won't fall:
- सन्त राबियां ने कहा, 'ऐ खुदा यदि मैं नरक (दोज़ख) की अग्नि में जल रही होऊँ और तुम्हें मदद के लिये पुकारूं तब तुम मत आना। यदि मैं सांसारिक सुखों की (जन्नत) मांग करूं मुझे मत देना किन्तु यदि मैं तुम्हें सच्चे दिल से पुकारूँ तुम दौड़कर चले आना।

- Forgive and forget. Try to achieve forgetfulness.
- Heart to heart talk is wanted.
- I enjoy myself not the party.
- Live in the world like a boat in the water.
- A terribe world war - "Words were spoken like bomds.
- To be desireless is the first step to peace. शांति की इच्छा नहीं वरन् इच्छा की शांति करनी है।
- Give up the false of self. If is true renunciation. चित्त की वृत्तियों का त्याग ही वास्तविक त्याग है।
- My heart trembles when a man plucks a rose. This heartless world will not allow beauty to breathe freely.

  जब कोई व्यक्ति फूल को तोड़कर डाल से पृथक् कर देता है तब मेरा हृदय रो उठता है। ये पत्थर दिल संसार सुन्दरता के प्रति इतना कठोर क्यों है।
- Pride comes before a fall.
- Anger kill him who does not kill anger.
- Remember there are no old days on earth when you discover you real self i.e. universal love i.e. life enternal
- O ! Krishna though can not be realize by the man who is attached to his body.
- A creature can never know the creator.
- Ignorance of self is the source of all troubles. सभी कष्टों का मूल कारण अज्ञानता है।

- Those who have attained sameness are said to be the living God.
- Man minus ego is God. God plus ego is man.
- Man is free to shape his own destiny. मनुष्य अपना भाग्य विधाता स्वंयं है।
- You have no right to judge any body.
- पलायनवाद (Escapism) कोई धर्म नहीं है। गृहस्थ में रहकर जागना है, भगवान नहीं।
- इच्छा से ऊपर उठते ही आप अनिच्छित फल के स्वामी बन जाते हैं।
- योग भ्रष्ट चाहे कितने ही विकारों में फंसा हो किन्तु अनायास ही भगवान की ओर बढ़ जाता है।
- योग भ्रष्ट योगयुक्त होने के लिये जन्म लेता है।
- यदि आप किसी को भगवान करके नहीं देख सकते तो उसे शरीर रूप में भी देखने का आपको अधिकार नहीं है।
- प्रेम से रहित मनुष्य फल रहित वृक्ष के समान है जो किसी को ना तो परछाई देता है न भूख मिटाता है।
- इच्छाएं तीन प्रकार की होती हैं –
  1. स्वेच्छा (अपनी इच्छा से चलना)
  2. परइच्छा (दूसरे की इच्छा से चलना)
  3. ईश्वर इच्छा (ईश्वर की इच्छा से चलना)
- ज्ञानी निरइंच्छा हो जाता है उसमें चाह नहीं होती।
- यदि सुख सत्य है तो दुख भी सत्य लगेगा।
- The noblest charity is to prevent a man from accepting charity again.

- Help a man to help your self.
- Our present is the achievement or our past deeds. हमारा वर्तमान प्रारब्ध कर्मों का फल है।
- A true Guru attracts. Inspires and transforms. गुरु के तीन कार्य हैं, अपनी और आकर्षित करना, जीवन में प्रेरणा भरना तथा पूर्ण परिवर्तन करना।
- True meditation is a state of being thoughtless and actionless. Then you are related to the self otherwise you are related to the external. पूर्ण ध्यान का अर्थ है शून्य अर्थात् विचार रहित होकर अन्तरमुखी हो जाना है।
- दुख के कारण हैं कि तुम गुम हो गये हो।
- विरोध भी एक प्रकार का जीवन है जिससे वह शक्ति प्राप्त होती है।
- अविश्वास एक धीमा जहर (Slow poison) है।
- गंगा में पत्थर जिस प्रकार रगड़ खाकर गोल हो जाते हैं और फिर उन्हीं को शिवलिंग बनाकर पूजा की जाती है, उसी प्रकार संघर्ष मनुष्य को पवित्र बना देते हैं। संघर्ष तुम्हारी चमक को बढ़ा देते हैं।
- He who does not bear the cross, will not wear the crown.
- Flattery is the food of foolish. चापलूसी मूर्खों की प्रिय चीज है।

ज्ञान और अज्ञान में अन्तर

(दादा की सिन्धी डायरी से हिन्दी रूपांतर)

1. अज्ञानी पदार्थ प्राप्ति के लिये भगवान की प्रार्थना करता है।	1. ज्ञानी प्रार्थना नहीं करता, भगवान की रजा पर राजी रहता है।
2. अज्ञानी शास्त्रों में अपनी बुद्धि को उलझाता रहता है।	2. ज्ञानी गुरु के मुख से सुनकर ज्ञान प्राप्त करता है।
3. अज्ञानी इच्छायें रखता है, और गुरु से कहता है कि आशीर्वाद दो ताकि मेरी कामनायें पूरी हो सकें।	3. ज्ञानी संतोष में रहता है, इच्छा मात्र अविद्या।
4. क्रोध करना बदला लेना अज्ञान है।	4. क्षमा करना ज्ञान है।
5. अज्ञान में शुभ और अशुभ दोनों कर्म होते हैं	5. ज्ञान में सभी कर्मों से मुक्ति मिलती है।
6. अज्ञान है कि मैं जीव हूँ जगत सत् है।	6. मैं आत्मा हूँ, जगत मिथ्या है।
7. भगवान को दूसरा समझना अज्ञान है।	7. स्वयं में भगवान का दीदार ज्ञान है।
8. अज्ञान में द्वैत सदैव बना रहता है।	8. अद्वैत मत ही सच्चा ज्ञान है।
9. घर छोड़ सन्यास धारण करना अज्ञान है।	9. सकल के मध्य सकल ते उदास। सभी बीच गृहस्थ में रहकर उदासीन रहना ज्ञान है।

10. कर्म सन्यास अज्ञान है।	10. कर्मयोग ज्ञान है।
11. कर्म का कर्ताभाव अज्ञान है।	11. कर्तापन का त्याग करके दृष्टा बनकर रहना ज्ञान है।
12. जुल्म देखना अन्याय देखना अज्ञान है।	12. है ही इंसाफ ये ज्ञान है रामराज्य में अन्याय नहीं होता।
13. शरीर तुच्छ अहंकार अज्ञान है।	13. मैं आत्मा हूँ यह शुद्ध अहंकार ज्ञान है।
14. आत्मा परमात्मा अलग करके जानना अज्ञान है।	14. आत्मा परमात्मा की अभेदता जानना ज्ञान है।
15. अपने को बन्धन में रखना अज्ञान है।	15. मैं मुक्त स्वरूप हूँ, ये ज्ञान है।
16. भगवान कब मिलेगा यह प्रश्न अज्ञान है।	16. सो प्रभु दूर नाहीं सों मैं हूँ यह ज्ञान है।
17. किसी भी बात में सुखी, दुखी होना अज्ञान है।	17. हानि, लाभ, मान-अपमान, सुख-दुख में समता ज्ञान है।
18. अज्ञानी भगवान से सुख मांगता है।	18. ज्ञानी दुख मांगता है क्योंकि दुख में प्रभु ज्यादा याद आते हैं।
19. भगवान को अलग जानकर ध्यान करना अज्ञान है।	19. ज्ञान में भगवान अलग नहीं यह जानकर ध्यान की आवश्यकता नहीं है।
20. अज्ञानी केवल लौकिक विद्या को ही पूर्ण मानता है।	20. ज्ञानी अलौकिक विद्या (ब्रह्मविद्या) को ही सर्वे सर्वा जानता है।

21. अज्ञानी माया के लिये पुरुषार्थ करता है भगवान को प्रारब्ध पर रखता है।	21. ज्ञानी पुरुषार्थ को भगवान के लिये तथा प्रारब्ध पर माया को रखता है।
22. अज्ञानी अज्ञान को निकालने के लिये सत्कर्म करता है।	22. ज्ञानी जानता है अज्ञान ज्ञान हो जायेगा। ज्ञानी निष्काम कर्म करता है।
23. अज्ञानी मोह को फर्ज धर्म समझता है।	23. ज्ञानी मोह को छोड़ भगवान की शरणगति को फर्ज धर्म समझता है।
24. अज्ञानी चमत्कार को नमस्कार करता है।	24. ज्ञानी चमत्कार एवं रिद्धि सिद्धि से दूर रहता है।
25. अज्ञानी मोह के वश आकर अपना उद्धार भुला देता है।	25. ज्ञानी अपने उद्धार को ही जीवन का लक्ष्य समझता है।
26. अज्ञानी मन का गुलाम है परन्तु खुद को आजाद समझता है।	26. ज्ञानी मन से आजाद रहता है। ईश्वर इच्छा से बंधा रहता है।
27. अज्ञानी स्वयं चिन्ता करता है।	27. ज्ञानी की चिन्ता हरि करता है।
28. अज्ञानी समझता है यह सृष्टि दुखी है इसे सहायता की जरूरत है।	28. ज्ञानी समझता है यह सृष्टि प्रभु की है, अनाथ नहीं है।
29. अज्ञानी बाहर का बन्धन मानता है।	29. ज्ञानी जानता है बन्धन मन का है।

प्रेम और मोह में अन्तर

साधारण लोग प्रेम और मोह को एक ही समझते हैं, लेकिन ज्ञानी जानता है कि एक जैसे लगने वाले यह शब्द वास्तव में एक नहीं हैं, बल्कि इतने भिन्न हैं, इतने एक-दूसरे के विपरीत हैं, इन दोनों में इतना अन्तर है जितना अमृत और विष में है। प्रेम करना है और मोह का त्याग करना है। गुरुदेव ने सत्संग में प्रेम और मोह के बहुत से अन्तर बताये थे, जिनमें से कुछ का वर्णन आगे लिखा जा रहा है।

प्रेम	मोह
प्रेम में अमरता है।	मोह में बार-बार मरते हैं।
प्रेम कर्म नहीं है।	मोह कर्म है।
प्रेम निर्भय बनाता है।	मोह भय में लाता है।
प्रेम का आधार अद्वैत है।	मोह का आधार द्वैत है।
प्रेम में शक्ति प्राप्त होती है।	मोह में शक्ति क्षीण होती है।
प्रेम असीमित है।	मोह सीमित है।
प्रेम विकार जलाता है।	मोह विकार बढ़ाता है।
प्रेम अमृत है।	मोह विष है।
प्रेम एकतरफा होता है।	मोह दोनों तरफ होता है।
प्रेम में केवल वफा है।	मोह का अन्त बेवफाई है।
प्रेम इच्छारहित है।	मोह इच्छासहित है।
प्रेम आत्मा से होता है।	मोह शरीरों से होता है।
प्रेम स्वस्थ करता है।	मोह रोगग्रस्त करता है।
प्रेम में दिल बड़ा होता है।	मोह में दिल तंग होता है।
प्रेम उर्ध्वमुखी होता है।	मोह अधोमुखी होता है।
प्रेम कल्याणकारी है।	मोह पतनकारी है।

निर्वाण दिवस पूज्य श्री दादा भगवान

29 अप्रैल 1975

आँखों देखा वर्णन

पिया मिलन

गगन में सितारों का चन्दा से मिलन देखा, किरणों को सूरज में समाते देखा, पर यह मिलन तो एक अनोखा मिलन है जो निगाहें देख रही हैं जमीं का आसमां से मिलन है। प्रियतम का प्यारे से मधुरतम मिलन है कितने समय से प्रेयसी इंतजार कर रही थी। अपने प्यारे से मधुरम मिलन के मधुर क्षण का ख्याल करके रोमांचित हो उठती थी। आह ! वह मधुरतम मिलन की बेला का दिन आ ही गया। यह दिन है मंगलवार 29 अप्रैल 1975 का प्रातः 9 बज कर 5 मिनट पर प्रेयसी को अपने परमात्मा का सन्देश मिल ही गया।

यूं तो मिलन आज से 45 वर्ष पूर्व ही हो चुका था। जिस दिन से उसने अपनी माँ (गुरु से अपने पिया) (परमात्मा) का नाम सुना था उसी दिन से वह अपने आपको प्रियतम में समा चुकी थी जिधर देखती थी उसे अपना प्रियतम ही नजर आता था। प्रियतम-प्रियतम कहते-कहते उसने अपने आपको ही राम का रूप बना लिया जो भी कोई देखता दूर से ही उसे हँसमुख चेहरे को देखकर अपना गुरु मान लेता। प्यारे प्रभु की झलक उनकी आँखों उनके रोम-रोम में पाकर हर एक ने उन्हें प्रभु बना लिया। अपना प्रियतम अपना सब कुछ बना लिया। आज भी जब मैं उनकी प्रेयसियों गीता भगवान, लक्ष्मी भगवान, श्याम जी शानू, नारायणी, मीरा वगैरा को देखती हूँ तो ऐसा ही लगता है

कि हर एक ने अपने आपको अपने दादा में समाकर खुद को दादा का रूप बना लिया है ठीक उसी तरह से जैसे हमारे दादा ने अपने आपको प्रभु प्यारे में अपने आप को समाकर अपने को प्रभु बना लिया। तन उनका उनकी राधा बन गया और खुद वह मधुरतम कृष्ण बनकर हर गोपी को ऐसा स्नेह, ऐसा ज्ञान दिया कि हर गोपी कृष्ण बन गयी। हर सीता ने राम की जुदाई में खुद को ही राम बना दिया कि राम की जुदाई का आभास न हो सका। सबको तत्व रूप बनाकर अब तन राधा का भी तो मिलन होना है। यह मिलन एक अति मधुरतम मिलन है, नाममात्र का बाह्य मिलन है। ये आंतरिक रूप से बहुत पूर्व हो चुका है पर यह मधुरतम मिलन की मधुर बेला की छटा देखते ही बन रही है। रानी शृंगार (दादा का शरीर) तो देखो जरा ऐसा दमकता हुआ चेहरा जिसको देखकर चन्दा भी गगन में शरमाकर अपने को बदलियों में समेटने की कोशिश कर रहा है। सूर्य अपनी किरणों के प्रकाश को भी फीका पा रहा है। कैसी अद्‌भुत सुन्दरता है रानी को उसकी सखियों ने ऐसा सजाया जैसे किसी शहजादी को उसकी सखियों ने सजाया हो। माथे पर लगी बिंदिया ऐसे चमक रही है मानों शेषनाग के माथे का नीलमणि या ब्रर्फ की सेज पर सोई राजकुमारी ऐसी लग रही है मानो विष्णु शेष-शैय्या पर विश्राम कर रहे हैं। न उन्हें किसी बात की चिन्ता है न ही किसी बात का गम। वह तो अपना कार्य पूरा कर ही चुकी अब फिर गम किस बात का करें। गले में पड़ी गुलाब व बेला के फूलों की मालायें उसकी प्यारी सखियों ने इस खुशी में डाली हैं कि वह उनकी नजरों से विदा हो रही है। तन पर पड़ी सफेद चादर ऐसी शोभायमान हो रही है मानों सितारों मोतियों से जड़ी हुई साड़ी।

आभूषणों से सजा यह सुन्दर तन देखकर ऐसा लग रहा है कि स्वयं प्रभु ने अपने तन को संगमरमर से तराशा हो। होठों पर वैसे ही मुस्कराहट जो मिलन से पूर्व थी। कहीं उससे भी अधिक सुन्दरतम लग रही है यह मुस्कराहट। पिया मिलन (मृत्यु का संदेश) के समय सभी रो पड़ते हैं, दुख होता उन्हें क्योंकि ये अपना पीहर (संसार) मात-पिता सखियां सब छोड़कर जा रही हैं। परन्तु ये मिलन तो पहले ही हो चुका था, प्रियतम के लिये पीहर की कुर्बानी पहले से ही दे चुकी थी वह। इस कुर्बानी के बाद तुमने एक सुन्दर बगियां बनायी, जिसे तुमने अपने खून से सींचा। आज भी हर फूल तुम्हारी खुशबू से महक रहा है। हर डाल के फूल तुम्हारा ही नाम लब पर लिये मुस्करा रहे हैं। फूल की हर पत्ती से तुम्हारी आवाज एक मधुर साज के साथ सुनाई दे रही है। इस हसीन बगिया के माली तुमने एक फूल को अपने खून-पसीने से इस तरह से सजाया-सवांरा है कि अब यह बगिया कभी न उजड़ेगी। बढ़ती ही जा रही है बढ़ती ही जायेगी।

यहां तुमने ऐसे फूल नहीं लगाये जो खिलकर एक दिन मुरझा जाये पर तुमने हमेशा के लिये इन फूलों को मुस्कराना सिखा दिया जो अपने मुख पर शिकन तक नहीं आने देते तुमने अपने करुणामय नेत्रों के जल से भगवान लक्ष्मी, गीता-श्याम को इस अद्भुत बगिया का अद्भुत माली बना दिया है। छटा देखते ही बन पड़ती है कि फूलों को तुमनें माली वना दिया है। बगिया में बिछी मखमली घास है तुम्हारा कारुणिक स्नेह जहां पर थके-हारे पथिक कड़कती धूप में अपने जीवन की कठिनाइयों में आकर तुम्हारे वृक्षों की छाया में रुककर विश्राम पा रहे हैं। अपने कार्य को पूरा कर अपनी बगिया को सजा-संवार कर विश्व में

अपनी सुगन्ध फैलाकर हर फूल को संवार कर तुम अपने पिया के घर जा रही हो, क्या तुम जा सकोगी ? तुम्हारी मेहनत को तुम्हारी करुणा को तुम्हारे प्यार को यह बगिया क्या कभी भूला सकेगी। हर फूल की पत्ती-पत्ती में अपनी सखियों के रोम-रोम से तुम इस तरह से बस चुकी हो कि यह तन का मिलन कोई महत्व ही नहीं रखता। फोटोग्राफर ने तुम्हारे तरह-तरह के फोटो लिये इस सजी-संवरी मूरत के फोटो भला वह क्या लेगा ? किसके हाथों में है यह शक्ति ?

(निर्वाण के समय) पिया मिलन का सन्देश पाते ही भगवान लक्ष्मी, गीता, श्याम ने भजनों का लेडीज संगीत शुरू कर दिया सुबह 9 बजे से शुरू यह भजन पूरी रात भर चलते रहे अनन्त ज्ञान की ऐसी अखण्ड ज्योति जो तुमने जलायी उस अखण्ड ज्योति दीप में भगवान लक्ष्मी ने ज्ञान का घी डालकर तुम्हारी इस ज्योति को और भी उज्जवल प्रकाशवान बना दिया। सारा वायुमण्डल तुम्हारी सुगन्ध से सुगन्धित हो रहा है। हर आँसू में तुम ही नजर आ रहे हो मुझे तुम्हारा नूर नूरानी नजराना नजर आ रहा है, तुम्हारा ही जलवा है तुम्हारा ही नाम है हर लब पर अब और भी दृढ़ संकल्प लिये हर फूल आगे बढ़ रहा है कि माली ने हमें जैसे खून-पसीने से संजोया है वैसे ही हम भी इस बगिया को खिलाये रखें। थककर नहीं हारेंगे फिर कभी मुड़कर पीछे नहीं देखेंगे हर दिल ने यह शपथ उठायी तुम्हारे चरणों मैं बैठकर, कि चले हैं तुम्हारी राह पर तो सिर हथेली पर रखकर चलते ही रहेंगे। तुम्हारे ज्ञान दीप को, जो इस युग में सजा उसे सारे युगों में प्रकाशित करेंगे। तुम्हारी सुगन्ध से हर दिल को सुगन्धित करेंगे। तुम्हारी उज्जवल प्रकाशवान ज्योति से अनेकों दीप जले और जलेंगे। दादा यह ज्योति अखण्ड दीप तुम्हारा किसी आँधी

तूफान में थराथर न सकेगा। अब तक इस दीप ने कई सितम सहे और सह कर भी रोशन हुआ अब भी रोशन रहेगा। दादा क्योंकि तुमने कहा था मैं आखिरी अवतार हूँ तुम्हारे दो नयनों ने हजारों नेत्रहीनों को नयन दिये तुम्हारे मुख ने ऐसा मुख दिया जो सदा तुम्हारे गीत गाते रहते हैं और तुम्हारे मुख से निकला हर गीत इतना मधुर है जो सोये दिलों के तारों को छेड़ दे, पानी को पूज्य में बदल दे अभावों को भावों में बदल दे। न हाथों में इतनी शक्ति है शब्दों से कुछ तुम्हारे लिए कह सके। न शब्दों में इतनी ताकत है कि तुम्हारी महिमा कह सके अगर कुछ कह सकते हैं तो अश्रुधार जो तुमने आँखों को दिये हैं ये अश्रु इसलिये नहीं बहते कि तुम्हारी दूरी का अहसास हो बल्कि इसलिए कि तुमने हर आँख को करुणामृत दिया है तुम्हारे स्नेह मेहनत को याद करके ही बह निकलते हैं। भगवान लक्ष्मी व गीता जी ने आँखों के आँसुओं को वियोग के नहीं बल्कि करुणा के अश्रुओं में बदल दिया और ये बाहर से न बहकर भीतर से ही कलुषता को मिटाने लगे।

कश्मीर की हवा की तरह भगवान लक्ष्मी जी ने तुम्हारी लहराती जुल्फें शानू, मीरा नारायणी को संभाला बनारस की सुबह की भांति भगवान गीता जी ने सबको मुस्कुराहट का मधुर वरदान दिया। साक्षात् शिव रूप भगवान श्याम ने हरिओम् का सिंहनाद करके चारों दिशाओं को कम्पायमान कर दिया। प्रिय शानू ने अपने मुस्कुराते अश्रुओं के गंगाजल से तुम्हारे चरणों को धोया। ऐसा मधुरतम दृश्य देखकर ये लो इन्द्र भी अपने 33 करोड़ देवताओं के साथ सिर छुपाकर चले आ रहे हैं। आकाश पर सितारे एक-दूसरे से कह रहे हैं कि हमारे चन्दा तो इस प्यारी

दुल्हनियां और इनकी सखियों के सामने तुच्छ जान पड़ रहा है। सितारों ने चन्दा से कहा चलो हम भी इस हसीन महफिल में शामिल हो जायें। चन्दा ने मुस्कुराकर सितारों को सहमति दी और यह लो सिर छिपाकर चंदा भी सितारों के साथ में महफिल के एक सिरहाने आकर खड़ा हो गया है। मिलन का समय बहुत नजदीक आ गया है, जोर-शोर से तैयारियां हो रही हैं। भगवान लक्ष्मी जी ने रानी के माथे पर चन्दन का टीका लगाया और सभी सखियों ने परफ्यूम छिड़का मानो उनके रोम-रोम से आवाज गुंजरित हो रही हो कि Happiness is the perfume which you can't pour on others unless pouring a few drops upon your ownself firstly.

भगवान गीता जी ने सेहरा बांधा है, चन्दन की लकड़ियों से डोली तैयार हुई, इस डोली को भगवान श्याम ने कांधे पर उठाकर सम्पूर्ण बगीचे को सुगन्धित व और भी सुगन्धित बनाने की शपथ ली। डोली उठ चली अब यह हसीन मिलन होगा जिसमें कुछ ही पलों की देरी है। तो लो यह पल भी आ गया चिता की सेज पर यह मधुर मिलन होगा। इसके पहले पिया के साथ सात फेरे लगे। (सात पटाखों की तरह से आवाजें हुई) जिसमें सात बातें सुनाई दीं।

1. मैं एक हूँ।
2. मैंने अपने आपको तुम सबमें समा लिया है।
3. मेरा जन्म दिव्य, मेरा कर्म दिव्य।
4. मैंने अपनी सम्पूर्ण (ज्ञान सम्पत्ति) का तुम्हें (हर एक को) वारिस बना दिया है।
5. सूक्ष्म में भी तुम्हारा कोई भी दोषी कर्म मुझे दुख पहुँचाता है।

6. सभी अवतारों का मैं एक रूप हूँ, अब मैंने अपने आपको तुम सबमें समा लिया है।

7. दृश्य-अदृश्य दोनों रूपों में मैं तुम्हारे साथ हूँ।

फेरों के बाद रंग-बिरंगी इन्द्रधुनषी सेज-पर पिया मिलन हुआ। आह ! यह मिलन कितना अनोखा कितना सुन्दर है जिसने यह मिलन देखा उसने सब कुछ देखा जिसने इस मिलन का अनुभव किया उसने सब कुछ अनुभव किया।

जाओ दादा तुम्हें विदाई। पर यह विदाई बाहर की दिल को न दे सकेगी जुदाई। हर दिल में तुम कैद हो चुके हो। कौन कहेगा दादा तुम खो गये, एक गहरी नींद में सो गये। 23 अप्रैल 1975 को जहाँ एक ओर भगवान महावीर जयंती का 2500वां निर्वाण महोत्सव भारत मां की शस्य श्यामला भूमि पर मनाया गया उसे ही तुमने 29 अप्रैल 1975 के वास्तविक निर्वाण में बदलकर दिखा दिया। दादा तुमने हर एक शव को शिव रूप बना दिया। यह अनोखा मिलन अपना दिखाकर हमरा रास्ता और भी सरल बना दिया।

❖हरिओम❖

कैसे दें ? हम तुम्हें विदाई

दादा भगवन ! इन प्राणों ने है तुमसे ही अब तक गति पाई।
दादा तुम्हारी प्राण चेतना ही प्राणों के बीच समाई।

कैसे दें हम तुम्हें विदाई

विदाई कर दिया तुम्हें अगर तो क्या अस्तित्व हमारा होगा,
बिना प्राण के इस काया में कौन मेरा सहारा होगा,
दादा भगवान ! जन प्राणों ने है, तुमसे ही अब तक गति पाई

कैसे दें हम तुम्हें विदाई

तुम ही सांसों के तारों पर प्रतिक्षण मेरे डोल रहे हो,
और हमारी हर धड़कन से तुम ही तो बोल रहे हो,
कैसे कहें विछोह हुआ है, बने हुए हो जब परछाई,

कैसे दें हम तुम्हें विदाई

पार्थिव को तो विदा कर दिया इस सीने पर पत्थर रखकर,
लेकिन तुम्हें सहेज लिया है अपने इन प्राणों में भरकर,
तुम वह खुदा हो जिसने काल चक्र की चाल चलाई,

कैसे दें हम तुम्हें विदाई

दादा भगवन ! इन प्राणों ने है, तुमसे ही अब तक गति पाई
कैसे दें हम तुम्हें विदाई

DIVINE DADA JI

DIVINE GEETA BHAGWAN

तुझे दुनियाँ के हर जर्रे में, है जलवानुमा पाया।
न कुछ तेरे सिवाय देखा, न कुछ तेरे सिवाय पाया।।
भरोसा जिसको है तेरे पर, वह क्यों कर कि घबराये।
कि हर मुश्किल में है मैने, तुझे मुश्किल कुशा पाया

Surya - 9839134701